



CR  
25/3/8

# भारत का राजपत्र

## The Gazette of India

प्राधिकार से प्रकाशित  
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 45]  
No. 45]

नई दिल्ली, शनिवार, नवम्बर 9, 1985/कार्तिक 18, 1907

NEW DELHI, SATURDAY, NOVEMBER 9, 1985/KARTIKA 18, 1907

इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या वाली जाती है जिससे कि यह अलग संकलन के रूप में रखा जा सके

Separate Paging is given to this Part in order that it may be filed as a separate compilation

भाग II—खण्ड ३—खण्ड (II)  
PART II—Section 3—Sub-section (II)

(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मन्त्रालयों द्वारा जारी किये गये सार्विक आदेश और अधिसूचनाएँ  
Statutory Orders and Notifications issued by the Ministries of the Government of India (other than the  
Ministry of Defence)

कार्मिक और प्रशिक्षण, प्रशासनिक सुधार  
और सोक शिकायत तथा पैशन मंत्रालय  
(कार्मिक और प्रशिक्षण विभाग)  
नई दिल्ली, 28 अक्टूबर, 1985

का. आ. 5137.—केन्द्रीय सरकार, सरकारी स्थान (अधिकारियों की बेदखली) अधिनियम, 1971 (1971 का 40) की द्वारा 3 द्वारा प्रवत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, नीचे सारणी के स्तम्भ (1) में वर्णित अधिकारियों की, जो सरकार के राजपत्रित अधिकारी की पक्षित के समतुल्य अधिकारी हैं, उक्त अधिनियम के प्रयोजनों के लिए संपदा अधिकारी नियुक्त करती है, जो उक्त सारणी के स्तम्भ (2) में विविध सरकारी स्थानों को बाबत अपनी अपनी अधिकारिता की स्थानीय सीमाओं के भीतर उक्त अधिनियम द्वारा या उसके अधीन संपदा अधिकारियों को प्रवत्त शक्तियों का प्रयोग और उन पर अधिरोपित कर्तव्यों का पालन करेंगी।

सारणी

अधिकारी का पदनाम	सरकारी स्थानों के प्रबन्ध और अधिकारिता की स्थानीय सीमाएँ
(1)	(2)

1—पुलिस अधीकारक मुख्या—केन्द्रीय अन्वेषण व्यूरो के या उसके द्वारा या उसका और से पट्टे पर लिए गए या अधिप्रहीत किए गए ऐसे सरकारी स्थान जो संघ राज्य लेन और मणिपुर तथा नियुक्त राज्य के भीतर केन्द्रीय अन्वेषण व्यूरो के प्रशासनिक नियंत्रणाधीन है।

1	2
2—पुलिस अधीकारक कार्यालय— गुजरात, दैनिक विद्यालय के या उसके द्वारा या उसकी और से पट्टे पर लिए गए या अधिप्रहीत किए गए ऐसे सरकारी स्थान जो कानून प्रवेश राज्य के भीतर, विशाखापट्टनम शास्त्रीय अन्वेषण व्यूरो के प्रशासनिक नियंत्रणाधीन हैं।	3—पुलिस अधीकारक विविध केन्द्रीय अन्वेषण व्यूरो के या उसके द्वारा या उसकी और से पट्टे पर लिए गए या अधिप्रहीत किए गए ऐसे सरकारी स्थान जो अरणाचल प्रदेश संघ राज्य लेन और मणिपुर तथा नियुक्त राज्य के भीतर केन्द्रीय अन्वेषण व्यूरो के प्रशासनिक नियंत्रणाधीन हैं।
4—पुलिस अधीकारक, कोण्ठीन केन्द्रीय अन्वेषण व्यूरो के या उसके द्वारा या उसकी और से पट्टे पर लिए गए या अधिप्रहीत किए गए ऐसे सरकारी स्थान जो केरल राज्य के भीतर केन्द्रीय अन्वेषण व्यूरो के प्रशासनिक नियंत्रणाधीन है।	5—पुलिस अधीकारक कलकत्ता केन्द्रीय अन्वेषण व्यूरो के या उसके द्वारा या उसकी और से पट्टे पर लिए गए या अधिप्रहीत किए गए ऐसे सरकारी स्थान जो पश्चिमी बंगाल राज्य के भीतर केन्द्रीय अन्वेषण व्यूरो के प्रशासनिक नियंत्रणाधीन है।

(1)	(2)	(1)	(2)
6— पुलिस अधीकार, भुवने- श्वर	केन्द्रीय अन्वेषण ब्यूरो के या उसके द्वारा या उसकी ओर से पट्टे पर लिए गए या अधिग्रहित किये गए ऐसे सरकारी स्थान जो राज्य के भीतर केन्द्रीय अन्वेषण ब्यूरो के प्रशासनिक नियंत्रणाधीन हैं।	16— पुलिस उप-अधीकार, केन्द्रीय अन्वेषण ब्यूरो के या उसके द्वारा या उसकी ओर से पट्टे पर लिए गए या अधिग्रहित किये गये ऐसे सरकारी स्थान जो असम राज्य के भीतर केन्द्रीय अन्वेषण ब्यूरो के प्रशासनिक नियंत्रणाधीन हैं।	[सं. 204/6/84- ए. बी. बी. (II)] के. जी. गोवल, उप सचिव
7— पुलिस अधीकार, विशाखापट्टनम्	केन्द्रीय अन्वेषण ब्यूरो के या उसके द्वारा या उसकी ओर से पट्टे पर लिए गए या अधिग्रहित किये गये ऐसे सरकारी स्थान जो आन्ध्र प्रदेश राज्य के भीतर केन्द्रीय अन्वेषण ब्यूरो के प्रशासनिक नियंत्रणाधीन हैं।		
8— पुलिस अधीकार, भंगलौर	केन्द्रीय अन्वेषण ब्यूरो के या उसके द्वारा या उसकी ओर से पट्टे पर लिए गए या अधिग्रहित किये गये ऐसे सरकारी स्थान जो कर्नाटक राज्य के भीतर केन्द्रीय अन्वेषण ब्यूरो के प्रशासनिक नियंत्रणाधीन हैं।		
9— पुलिस अधीकार, मद्रास	केन्द्रीय अन्वेषण ब्यूरो के या उसके द्वारा या उसकी ओर से पट्टे पर लिए गए या अधिग्रहित किये गये ऐसे सरकारी स्थान जो तमिल नाडू राज्य के भीतर केन्द्रीय अन्वेषण ब्यूरो के प्रशासनिक नियंत्रणाधीन हैं।		
10— पुलिस अधीकार, झीलचर	केन्द्रीय अन्वेषण ब्यूरो के या उसके द्वारा या उसकी ओर से पट्टे पर लिए गए या अधिग्रहित किये गये ऐसे सरकारी स्थान जो झार्खणाचल प्रवेश संघ राज्य क्षेत्र और भणिपुर और विपुरा राज्य के भीतर केन्द्रीय अन्वेषण ब्यूरो के प्रशासनिक नियंत्रणाधीन हैं।		
11— पुलिस अधीकार, राऊरकोला।	केन्द्रीय अन्वेषण ब्यूरो के या उसके द्वारा या उसकी ओर से पट्टे पर लिए गए या अधिग्रहित किये गये ऐसे सरकारी स्थान जो उडीसा के भीतर केन्द्रीय अन्वेषण ब्यूरो के प्रशासनिक नियंत्रणाधीन हैं।		
12— पुलिस उप-अधीकार, राऊरकोला।	केन्द्रीय अन्वेषण ब्यूरो के या उसके द्वारा या उसकी ओर से पट्टे पर लिए गए या अधिग्रहित किये गये ऐसे सरकारी स्थान जो परिचमी बंगाल राज्य के भीतर केन्द्रीय अन्वेषण ब्यूरो के प्रशासनिक नियंत्रणाधीन हैं।		
13— पुलिस अधीकार, सिर्पिंगडी	केन्द्रीय अन्वेषण ब्यूरो के या उसके द्वारा या उसकी ओर से पट्टे पर लिए गए या अधिग्रहित किये गए ऐसे सरकारी स्थान जो परिचमी बंगाल राज्य के भीतर केन्द्रीय अन्वेषण ब्यूरो के प्रशासनिक नियंत्रणाधीन हैं।		
14— पुलिस उप-अधीकार, जम्मू-यूनिट।	केन्द्रीय अन्वेषण ब्यूरो के या उसके द्वारा या उसकी ओर से पट्टे पर लिए गए या अधिग्रहित किये गए ऐसे सरकारी स्थान जो जम्मू-काश्मीर राज्य के भीतर केन्द्रीय अन्वेषण ब्यूरो के प्रशासनिक नियंत्रणाधीन हैं।	1. SP, Headquarters, CBI, Head Office.	Public premises belonging to or taken on lease or requisitioned by or on behalf of Central Bureau of Investigation and which are under the administrative control of CBI within the Union Territory of Delhi.
15— पुलिस उप-अधीकार, हैंसल	केन्द्रीय अन्वेषण ब्यूरो के या उसके द्वारा या उसकी ओर से पट्टे पर लिए गए या अधिग्रहित किये गए ऐसे सरकारी स्थान जो अरण्णाचल संघ राज्य क्षेत्र और भणिपुर और विपुरा राज्य के भीतर केन्द्रीय अन्वेषण ब्यूरो के प्रशासनिक नियंत्रणाधीन हैं।	2. SP, Kachiguda, Hyderabad.	Public premises belonging to or taken on lease or requisitioned by or on behalf of Central Bureau of Investigation which are under the administrative control of the CBI within the State of Andhra Pradesh excluding the areas mentioned against Vishakapatnam Branch.

MINISTRY OF PERSONNEL AND TRAINING,  
ADMINISTRATIVE REFORMS AND PUBLIC  
GRIEVANCES AND PENSION

(Department of Personnel & Training)  
New Delhi, the 28th October, 1985

S.O. 5137.—In exercise of the powers conferred by section 3 of the Public Premises (Eviction of Unauthorised Occupants) Act, 1971 (40 of 1971), the Central Government hereby appoints the Officers mentioned in column (1) of the Table below, being the officers equivalent to the rank of a gazetted officer of Government to be estate officers for the purposes of the said Act who shall exercise the powers conferred and perform the duties imposed on estate officers by or under the said Act within the local limits of their respective jurisdiction in respect of the public premises specified in column (2) of the said Table.

TABLE

Designation of the Officer.	Categories of public premises and local limits of jurisdiction
1	2
1. SP, Headquarters, CBI, Head Office.	Public premises belonging to or taken on lease or requisitioned by or on behalf of Central Bureau of Investigation and which are under the administrative control of CBI within the Union Territory of Delhi.
2. SP, Kachiguda, Hyderabad.	Public premises belonging to or taken on lease or requisitioned by or on behalf of Central Bureau of Investigation which are under the administrative control of the CBI within the State of Andhra Pradesh excluding the areas mentioned against Vishakapatnam Branch.

1	2	1	2
3. SP, Shillong	Public premises belonging to or taken on lease or requisitioned by or on behalf of Central Bureau of Investigation and which are under the administrative control of the CBI within the Union Territory of Arunachal Pradesh and State of Manipur and Tripura.	9. SP, Madras	Public premises belonging to or taken on lease or requisitioned by or on behalf of Central Bureau of Investigation and which are under the administrative control of CBI within the State of Tamil Nadu.
4. SP, Cochin	Public premises belonging to or taken on lease or requisitioned by or on behalf of Central Bureau of Investigation and which are under the administrative control of CBI within the State of Kerala.	10. SP, Sri Nagar	Public premises belonging to or taken on lease or requisitioned by or on behalf of Central Bureau of Investigation and which are under the administrative control of CBI within the State of Jammu & Kashmir.
5. SP, Calcutta	Public premises belonging to or taken on lease or requisitioned by or on behalf of Central Bureau of Investigation and which are under the administrative control of CBI within the State of West Bengal.	11. SP, Silchar	Public premises belonging to or taken on lease or requisitioned by or on behalf of Central Bureau of Investigation and which are under the administrative control of CBI within the Union Territory of Arunachal Pradesh and State of Manipur & Tripura.
6. SP, Bhubaneshwar	Public premises belonging to or taken on lease or requisitioned by or on behalf of Central Bureau of Investigation and which are under the administrative control of CBI within the State of Orissa.	12. DSP, Rourkela	Public premises belonging to or taken on lease or requisitioned by or on behalf of Central Bureau of Investigation and which are under the administrative control of CBI within the State of Orissa.
7. SP, Vishakapatnam	Public premises belonging to or taken on lease or requisitioned by or on behalf of Central Bureau of Investigation and which are under the administrative control of CBI within the State of Andhra Pradesh.	13. DSP, Siliguri	Public premises belonging to or taken on lease or requisitioned by or on behalf of Central Bureau of Investigation and which are under the administrative control of CBI within the State of West Bengal.
8. SP, Bangalore	Public premises belonging to or taken on lease or requisitioned by or on behalf of Central Bureau of Investigation and which are under the administrative control of CBI within the State of Karnataka.	14. DSP, Jammu Unit	Public premises belonging to or taken on lease or requisitioned by or on behalf of Central Bureau of Investigation and which are under the administrative control of CBI within the State of J. & K.

1	2	3	
15. DSP, Imphal	Public premises belonging to or taken on lease or requisitioned by or on behalf of Central Bureau of Investigation and which are under the administrative control of CBI within the Union Territory of Arunachal Pradesh and State of Manipur and Tripura.	उन व्यक्तियों के नाम जिन्हें कर वसूली अधिकारी (अधिकारियों) की संख्या और वारी (अधिकारियों) की संख्या जिनके स्थान पर स्थान 1 में गंत स्थान 2 में उल्लिखित व्यक्तियों को प्राधिकृत किया जाना है	उन कर वसूली अधिकारी (अधिकारियों) की संख्या और वारी (अधिकारियों) की संख्या जिसके अन्तर्गत वसूली अधिकृत कर वसूली अधिकारी अधिसूचित किये गये हैं
16. DSP, Gauhati	Public premises belonging to or taken on lease or requisitioned by or on behalf of Central Bureau of Investigation and which are under the Administrative control of CBI within the State of Assam.	1 श्री जी० इण्ड्रमूर्ति कांतन 2 श्री एम० पी० लक्ष्मी- कांतन 3 श्री ६१८४/फ० स० ३९८/८५-आ० क० (ब०) विमाक १०-४-१९८५	2 श्री एम० पी० लक्ष्मी- कांतन 3 श्री ६१८४/फ० स० ३९८/८५-आ० क० (ब०) विमाक १०-४-१९८५

[No. 204/6/84-AVD.II]  
K. G. GOYAL, Dy. Secy.

वित्त मंत्रालय  
(राजस्व विभाग)  
नई दिल्ली, 30 सितम्बर, 1985  
आयकर

का. आ. 5138—आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) की विधा 10 के खंड (23ग) के उपखंड (v) द्वारा प्रवत्त व्यक्तियों का प्रयोग करते हुए, केन्द्रीय सरकार एतद्वारा उक्त द्वारा के प्रयोजनार्थ, "श्री महालिंगस्वामी देवस्थानम्, तिरुविदैमलूंदूर" को कर-निधारण खंड 1980-81 से 1982-83 तक के अन्तर्गत आने वाली अवधि के लिए अधिसूचित करते हैं।

[सं. 6448/फा. सं. 197/125/85-आ.क. (नि-I)]  
आर. के. तिवारी, अवार सचिव

MINISTRY OF FINANCE  
(Department of Revenue)  
New Delhi, the 30th September, 1985

#### INCOME-TAX

S.O. 5138.—In exercise of the powers conferred by sub-clause (v) of clause (23C) of Section 10 of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961), the Central Government hereby notifies "Sri Mahalingaswami Devasthanam, Thiruvidaimarundur" for the purpose of the said section for the period covered by the assessment years 1980-81 to 1982-83.

[No. 6448/F. No. 197/125/85-IT(AI)]  
R. K. TEWARI, Under Secy.

नई दिल्ली, 10 सितम्बर, 1985

आयकर

का. आ. 5139.—आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) की विधा 2 के खंड (44) के उप-खंड (III) का अनुसरण करते हुए, केन्द्रीय सरकार एतद्वारा नीचे स्थान 3 में लिलिखित अधिसूचना का अधिकारी संशोधन करते हुए नीचे स्थान 2 में उल्लिखित कर वसूली अधिकारी के स्थान पर नीचे स्थान 1 में उल्लिखित व्यक्ति को, जो केन्द्रीय सरकार के राजपत्रिल अधिकारी हैं, उक्त अधिनियम के अन्तर्गत कर वसूली अधिकारी (अधिकारियों) की व्यक्तियों का प्रयोग करते के लिए अधिकृत करती है:—

उन व्यक्तियों के नाम जिन्हें कर वसूली अधिकारी (अधिकारियों) की संख्या और वारी (अधिकारियों) की संख्या जिनके स्थान पर स्थान 1 में गंत स्थान 2 में उल्लिखित व्यक्तियों को प्राधिकृत किया जाना है

उन कर वसूली अधिकारी (अधिकारियों) की संख्या और वारी (अधिकारियों) की संख्या जिसके अन्तर्गत वसूली अधिकृत कर वसूली अधिकारी अधिसूचित किये गये हैं

1	2	3
श्री जी० इण्ड्रमूर्ति कांतन	श्री एम० पी० लक्ष्मी- कांतन	सं. ६१८४/फ० स० ३९८/८५-आ० क० (ब०) विमाक १०-४-१९८५

2. यह अधिसूचना तत्काल लागू होगी और जहां तक स्थान 1 में उल्लिखित व्यक्ति का संबंध है, यह अधिसूचना उनके द्वारा कर वसूली अधिकारी के रूप में कार्यालय ग्रहण किये जाने की तारीख से लागू होगी।

[सं. ६४१६/फ० स० ३९८/८५-आ० क० (ब०)]  
श्री० ई० अलेक्जेंडर, अवार सचिव,

New Delhi, the 10th September, 1985

#### INCOME-TAX

S.O. 5139.—In pursuance of sub-clause (iii) of clause (44) of section 2 of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) the Central Government hereby authorises the person mentioned below column 1, being the Gazetted Officers of the Central Govt. to exercise the powers of Tax Recovery Officer(s) under the said Act in place of the Tax Recovery Officers mentioned below in column 2 in partial modification of the Notification mentioned below in column 3:

Name of the persons to be authorised to exercise powers of Tax Recovery Officer(s)	Name of Tax Recovery Officer(s) in place of whom the persons mentioned in Column 1 are to be authorised	Old Notification No. and date under which T.R.O. mentioned in Column 2 was notified
Shri G. Krishna-moorthy	Sh. M. V. Lakshminathan	No. 6184/F. No. 398/1/85-IT(B) dt. 10-4-85.

1	2	3
Shri G. Krishna-moorthy	Sh. M. V. Lakshminathan	No. 6184/F. No. 398/1/85-IT(B) dt. 10-4-85.

2. This Notifications shall come into force with immediate effect and in so far as persons mentioned in column 2 from the date(s) take over charge(s) as Tax Recovery Officers.

[No. 6416/F. No. 398/8/85-IT(B)]  
B. E. ALEXANDER, Under Secy.

नई दिल्ली, 15 अक्टूबर, 1985

प्रधान वित्त मंत्रालय संस्थापन

का. आ. 5140.—केन्द्रीय राजस्व बोर्ड अधिनियम, 1963 (1963 का संख्या 54) की विधा 3 की उपकारा (2) द्वारा प्रवत्त व्यक्तियों का प्रयोग करते हुए केन्द्रीय सरकार एतद्वारा भास्तीय-राजस्व

सेवा (आयकर) के अधिकारी श्री हीरा सिंह को, जो पिछले दिनों पटला में आयकर आयुक्त के पंच पर तैमात थे, 3 अक्टूबर, 1985 के अपराह्न से केन्द्रीय प्रस्तरकर बोर्ड के सदस्य के रूप में नियुक्त करती है।

[फा० सं० ए-19011/11/85-प्रशा०-1]  
ओ० एम० लहर, अवर सचिव

New Delhi, the 15th October, 1985  
HEADQUARTERS ESTABLISHMENT

S.O. 5140.—In exercise of the powers conferred by sub-section (2) of Section 3 of the Central Boards of Revenue Act, 1963 (No. 54 of 1963), the Central Government hereby appoints Shri Hira Singh, an officer of the Indian Revenue Service (Income-tax) and formerly posted as Commissioner of Income-tax, Patna, as Member of the Central Board of Direct Taxes with effect from the afternoon of the 3rd October, 1985.

[F. No: A-19011/11/85-Adm. I]  
J. M. TREHAN, Under Secy.

केन्द्रीय प्रस्तर कर बोर्ड  
नई दिल्ली, 20 सितम्बर, 1985  
आयकर

फा० आ० 5141.—आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) की धारा 121क की उपधारा (1); धन कर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) की धारा ७क; धन कर अधिनियम, 1958 (1958 का 18) की धारा ८क द्वारा प्रदत्त अधिकारीयों का प्रयोग करते हुए और इस संबंध में भूत्यकर्ता सभी अधिसूचनार्थी का अधिलेखन करते हुए केन्द्रीय प्रत्यक्ष कर बोर्ड एतदादारा निर्देश देता है कि नीचे दी गई अनुसूची के स्तम्भ (1) में विनिर्दिष्ट अधिकारी जीवों के आयकर आयुक्त (अधीक्षा) अनुसूची के स्तम्भ (2) और (3) की तत्संबंधी प्रक्रियायों में विनिर्दिष्ट आयकर धारा०, परिमंडलों, जिलों और रेजों में ऐसे अधिकारीयों के संबंध में कार्य करने में जिन पर आयकर या अतिकर या व्याजकर या होटल प्राप्ति कर या धन कर और धन कर लगाया गया हो और जो आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) की धारा २४६ की उपधारा (2) के खंड "क" से "ज" में; कंपनी (लाभ) अतिकर अधिनियम, 1964 (1964 का 7) की धारा 11 की उपधारा (1) में; व्याज कर अधिनियम, 1974 (1974 का 45) की धारा 15 की उपधारा (1) में; अनिवार्य जमा योजना (आयकर धारा०) अधिनियम, 1974 (1974 का 38) की धारा 12 की उपधारा (2) में; होटल प्राप्ति कर अधिनियम, 1980 (1980 का 54) की धारा 18 की उपधारा (1) में; धनकर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) की धारा 23 की उपधारा (1) के खंड (क) से (घ) में; धनकर अधिनियम, 1958 (1958 का 18) की धारा 22 की उपधारा (1क) के खंड (क) से (घ) में उल्लिखित किसी भी आदेश से व्यविधि हुए हैं और ऐसे व्यक्तियों के बागे की बाबत भी कार्य करेंगे जिनके लिए बोर्ड ने आयकर अधिनियम, 1961 की धारा 246 की उपधारा (2) के खंड (1); धन कर अधिनियम, 1957 की धारा 23 की उपधारा (1क) के खंड (इ.) और धन कर अधिनियम, 1958 की धारा 22 की उपधारा (1क) के खंड (इ०) के उपबंधों के अनुसार निरेश दिया है या भविष्य में निरेश दें।

#### अनुसूची

अधिकार-क्षेत्र और प्रधान आयकर बार्ड तथा निरीक्षी सहायक कार्यालय परिमंडल, निरीक्षी आयकर आयुक्त की सहायक आयुक्त (कर- रेज- निर्धारण)

1	2	3
1. आयकर आयुक्त (कर-रेज-1, बंगलौर)	1. कंपनी परिमंडल-I और III, बंगलौर	निःसंबा०, रेज- V,

1	2	3
	2. कंपनी परिमंडल- VII, बंगलौर	निःसंबा०, रेज-VII, बंगलौर
	3. निःसंबा०, रेज- VI (कर-निर्धारण)	निःसंबा० (केन्द्रीय), बंगलौर
	4. निःसंबा०, कर- निर्धारण-I, बंगलौर निर्धारण-I, बंगलौर	निःसंबा०, कर-निर्धारण-I, बंगलौर
	5. निःसंबा० (केन्द्रीय), कर- निर्धारण, बंगलौर	निःसंबा० (केन्द्रीय), बंगलौर
	6. केन्द्रीय परिमंडल- I, II तथा III, बंगलौर	निःसंबा० (केन्द्रीय), बंगलौर
	7. बेतन परिमंडल, बंगलौर	निःसंबा० रेज (III) बंगलौर
	8. एवास परिमंडल, बंगलौर	
	9. फिल्म परिमंडल, बंगलौर	
	10. मैसूर परिमंडल, मैसूर	निःसंबा०, मैसूर रेज
2. आयकर आयुक्त (अधीक्षा)-II, बंगलौर	निःसंबा०, कर-निर्धारण-II, बंगलौर	निःसंबा०, कर-निर्धारण-II, बंगलौर
	2. निःसंबा०, रेज-V (कर-निर्धारण), बंगलौर	निःसंबा०, रेज-V, बंगलौर
	3. कंपनी परिमंडल-II तथा IV बंगलौर	
	4. विदेश अनुभाग, बंगलौर	निःसंबा०, रेज-VI बंगलौर
	5. हस्त परिमंडल, हस्त	निःसंबा०, मैसूर रेज हस्त
	6. माण्ड्या परिमंडल, माण्ड्या	"
	7. शिमोगा परिमंडल, शिमोगा	"
	8. तुमकुर परिमंडल, तुमकुर	"
	9. चिकमगलूर परिमंडल, चिकमगलूर	निःसंबा०, बंगलौर रेज
	10. बंगलौर परिमंडल, बंगलौर	"
	11. उदीपी परिमंडल, उदीपी	"
	12. केन्द्रीय परिमंडल, IV तथा V, बंगलौर	निःसंबा० (केन्द्रीय), बंगलौर
	13. परिमंडल II, बंगलौर	निःसंबा०, रेज-II, बंगलौर

1	2	3
2. आयकर आयुक्त (अपील)-II, बंगलौर जारी	14. कोलार परिमंडल, निःस०आ०, रेंज-II कोलार बंगलौर	15. गडग परिमंडल, निःस०आ०, गडग घारवाड रेंज
	16. रायबुर परिमंडल, निःस०आ०, रायबुर बेलगाम रेंज	17. संपदा शुल्क एक निःस०आ०, आयकर परिमंडल, रेंज-IV बंगलौर (आयकर) बंगलौर धनकर/दानकर मामले)
3. आयकर आयुक्त (अपील)-III, बंगलौर	1. नि.स.आ. (जांच), नि.स.आ. (जांच) बंगलौर बंगलौर	2. कंपनी परिमंडल-V नि.स.आ. रेंज-VI तप्पा VI, बंगलौर बंगलौर
	3. सर्वेक्षण परिमंडल, बंगलौर	4. जांच परिमंडल नि.स.आ. (जांच), बंगलौर
	5. परिमंडल-IV, बंगलौर	6. परिमंडल-I, बंगलौर
	7. परिमंडल-III, बंगलौर	नि.स.आ. रेंज-I III, बंगलौर
	8. होस्टेट परिमंडल, होमेट	नि.स.आ., घारवाड रेंज
	9. बेलारी रेंज, बंगलौर	नि.स.आ., घारवाड रेंज
	10. दावणगेरे परि- मंडल, दावणगेरे	"
	11. चिक्कुर्ण परिमंडल, चिक्कुर्ण	"
	12. गुलबर्ग परिमंडल, नि.स.आ., गुलबर्ग बेलगाम रेंज	13. कळुंग परिमंडल, नि.स.आ. भेरकारा बंगलौर रेंज
4. आयकर आयुक्त (अपील)	1. बेलगाम परिमंडल, नि.स.आ., बेलगाम बेलगाम	2. बीजापुर परिमंडल, नि.स.आ., बेलगाम बीजापुर
	3. बागलकोट परि- मंडल, बागलकोट	4. हुबली परिमंडल, नि.स.आ., घारवाड हुबली रेंज
	5. घारवाड परि- मंडल, घारवाड	6. करवाड परिमंडल, नि.स.आ., करवाड

1	2	3
	7. पणजी परिमंडल, पणजी	वि.वा.आ., गोंडवा रेंज, पणजी
	8. मार्गांशी परिमंडल, मार्गांशी	"

टिप्पणी :— सम्पदा शुल्क अधिनियम, 1953 (1953 का 34) की धारा 4 की उपधारा (2क) द्वारा प्रवत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, बेंद्रीय सरकार ने आयकर आयुक्त (अपील-III) बंगलौर की 3 जनवरी, 1983 से सम्पदा शुल्क अधिलीय नियंत्रक, बंगलौर नियुक्त किया है (रेकिए 28-1-2-1982 की अधिसूचना सं. 58/82-सं. ३०७/११/८२-सं. ३०७/११/८२-सं. ३०७/११/८३) बेंद्रीय प्रत्यक्ष कर बोर्ड, नई बिल्ली द्वारा जारी किए गए दिनांक 28-1-2-1952 की अधिसूचना सं. ५९/८-फा० सं. ३०७/११/८३ सं. श. के अनुसार, 3-1-1983 से सम्पदा शुल्क नियंत्रक बंगलौर शोकाधिकारके भीतर आने वाले सभी सम्पदा शुल्क सहायक नियंत्रकों द्वारा पारित आदेशों के द्विलाल सम्पदा शुल्क अधीरों पर अधीलीय नियंत्रक, सम्पदा शुल्क, बंगलौर का शोकाधिकार होगा।

2. जहाँ कोई आयकर परिमंडल, वार्ड अथवा जिला अथवा उसका कोई भाग इस अधिसूचना द्वारा एक अधिकार-स्वीकृत से किसी अन्य अधिकार द्वारा अंतरित कर दिया गया है, वहाँ उस आयकर परिमंडल, वार्ड अथवा जिले अथवा उसके किसी भाग में किए गए कर-नियंत्रणों से उत्पन्न होने वाली और इस अधिसूचना की तारीख से तकाल पूर्व उस अधिकार-स्वीकृत के आयकर आयुक्त (अपील) के समक्ष विचाराधीन पड़ी अधीरों जिसके अधिकार स्वीकृत से वह आयकर परिमंडल, वार्ड अथवा जिला अथवा उसका कोई भाग अंतरित किया गया है, इस अधिसूचना के लागू होने की तारीख से उस आयकर आयुक्त (अपील) के अधिकार-स्वीकृत को अंतरित की जाएंगी और उसके द्वारा निपटायी जाएंगी जिसके अधिकार स्वीकृत में उक्त परिमंडल, वार्ड अथवा जिला अथवा उसका कोई भाग अंतरित कर दिया गया है।

3. यह अधिसूचना 1-10-1985 से लागू होगी।

[सं. 643/फा.स. 261/13/85-आ.क. स्था.]  
सुरेन्द्र पाल, अधर सचिव बेंद्रीय प्रत्यक्ष कर बोर्ड

#### CENTRAL BOARD OF DIRECT TAXES

New Delhi, the 20th September, 1985

#### INCOME-TAX

S.O.5141—In exercise of the powers conferred by sub-section (1) of section 121A of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) section 9A of the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957); section 8A of the Gift-tax Act, 1958 (18 of 1958), and in supersession of all previous notifications in this regard, the Central Board of Direct Taxes hereby directs that the Commissioners of Income-tax (Appeals) of the charges specified in column (1) of the Schedule below, shall perform their functions in respect of such persons assessed to Income-tax or Surtax or Interest-tax or Hotel Receipt Tax or Wealth-tax and Gift-tax in the Income-tax Wards, Circles, Districts and Ranges specified in the corresponding entries in columns (2) and (3) thereof as are aggrieved by any of the orders mentioned in Clauses (a) to (h) of sub-section (2) of section 246 of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961); in sub-section (1) of section 11 of the Companies (Profits) Surtax Act, 1964 (7 of 1964); in sub-section (1) of section 15 of the Interest Tax Act, 1974 (45 of

1974); in sub-section (2) of section 12 of Compulsory Deposit Scheme (I.T. Payers) Act 1974 (38 of 1974); in sub-section (1) of section 18 of Hotel Receipts Tax Act 1980 (54 of 1980) in clauses (a) to (d) of sub-section (1A) of section 23 of Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957); in clauses (a) to (d) of sub-section (1A) of section 22 of the Gift-tax Act, 1958 (18 of 1958) and also in respect of such persons or clauses of persons the Board has directed or may direct in future in accordance with the provisions of clause (i) of sub-section (2) of section 246 of the Income-tax Act, 1961; clause (e) of sub-section (1A) of section 23 of the Wealth-tax Act, 1957; and clause (e) of sub-section (1A) of section 22 of the Gift-tax Act, 1958.

## SCHEDULE

Charges with Headquarters	Income-tax Wards & Circles Inspecting Assistant Commissioner (Assessment)	Range of I.A.C./I.T.
1	2	3
1. Commissioner of Income-tax (Appeals)-I, Bangalore.	1. Company Circle-I & III, Bangalore 2. Company Circle-VII, Bangalore 3. IAC, Range-VI (Assessment), Bangalore. 4. IAC, Assessment-I, Bangalore. 5. IAC (C), Assessment, Bangalore. 6. Central Circles-I, II & III, Bangalore. 7. Salary Circle, Bangalore. 8. Trust Circle, Bangalore. 9. Film Circle, Bangalore. 10. Mysore Circle, Mysore.	IAC, Range-V, Bangalore. IAC, Range-VI, Bangalore. .. IAC, Assessment-I, Bangalore. IAC (C) (Asst.) Bangalore. IAC (C), Bangalore. IAC, Range-III, Bangalore. .. IAC, Mysore Range.
2. Commissioner of Income-tax (Appeals)-II, Bangalore.	1. IAC, Assessment-II, Bangalore. 2. IAC, Range-V (Assessment) Bangalore. 3. Company Circle-II & IV, Bangalore. 4. Foreign Section, Bangalore. 5. Hassan Circle, Hassan 6. Mandya Circle, Mandya 7. Shimoga Circle, Shimoga	IAC, Assessment-II, Bangalore. IAC, Range-V Bangalore. .. IAC, Range-VI, Bangalore. IAC, Mysore Range. .. ..

1	2
2. Commissioner of Income-tax (Appeals) II Bangalore (C. ntd.)	8. Tumkur Circle, Tumkur 9. Chickmagalur Circle, Chickmagalur 10. Mangalore Circle, Mangalore 11. Udupi Circle, Udupi 12. Central Circle-IV & V, Bangalore 13. Circle-II, Bangalore 14. Kolar Circle, Kolar 15. Gadag Circle, Gadag 16. Raichur Circle, Raichur 17. ED cum I.T. Circle, Bangalore (IT/ W.T./G.T. cases)
3. Commissioner of Income-tax (Appeals)-III, Bangalore	1. IAC (Inv), Bangalore 2. Company Circle-V and VI Bangalore 3. Survey Circles, Bangalore 4. Investigation Circles 5. Circle-V, Bangalore 6. Circle-I, Bangalore 7. Circle-III, Bangalore 8. Hospet Circle, Hospet 9. Bellary Range, Bangalore 10. Davanagere Circle, Davanagere 11. Chitradurga Circle, Chitradurga 12. Gulbarga Circle, Gulbarga 13. Coorg Circle, Mercara
4. Commissioner of Income-tax (Appeals), Belgaum	1. Belgaum Circle, Belgaum 2. Bijapur Circle, Bijapur 3. Bagalkot Circle, Bagalkot 4. Hubli Circle, Hubli 5. Dharwar Circle, Dharwar 6. Karwar Circle, Karwar
	IAC, Mysore Range. IAC, Range-II, Bangalore. .. IAC, Belgaum Range. IAC, Range IV, Bangalore. IAC (Inv), Bangalore IAC, Range-VI, Bangalore .. IAC, (Investigation) Bangalore. IAC, Range IV, Bangalore. IAC, Range-I, Bangalore. IAC, Range-III, Bangalore. IAC, Dharwar Range .. IAC, Belgaum Range IAC, Mangalore Range. IAC, Range-II, Bangalore. .. IAC, Goa Range, Panaji.

1

2

3

4. Commissioner of Income-Tax (Appeals) Belgaum (Contd.)	7. Panaji Circle, Panaji	IAC, Goa Range, Panaji
	8. Margao Circle, Margao	"

**NOTE :—** In exercise of the powers conferred by sub-section (2A) of section 4 of the Estate Duty Act, 1953 (3 of 1953), the Central Government has appointed the Commissioner of Income-tax (Appeals-III) Bangalore, the Appellate Controller of Estate Duty, Bangalore with effect from 3-1-1983 (vide Notification No. 58/52 ED-F. No. 307/11/82-ED dated 28-12-82). As per notification No. 59/82-F. No. 307/11/82-ED dated 28-12-82, issued by Central Board of Direct Taxes, New Delhi the Appellate Controller of Estate Duty, Bangalore will have jurisdiction over Estate Duty appeals against orders passed by all Assistant Controllers of Estate Duty, within the jurisdiction of the Controller of Estate Duty, Bangalore with effect from 3-1-1983.

2. Whereas an Income-tax Circle, Ward or District or part thereof stands transferred by this notification from one charge to another charge, appeals arising out of the assessments made in the Income-tax Circle, Ward or District or part thereof and pending immediately before the date of this notification before the Commissioner or Income-tax (Appeals) of the charge from whom the Income-tax Circle, Ward or District or part thereof is transferred, shall from the date this notification takes effect be transferred to and dealt with by the Commissioner of Income-tax (Appeals) of the charge to whom the said Circles, Wards or Districts or part thereof is transferred.

3. This notification shall take effect from 1-10-1985.

[No. 6434 (F. No. 261/13/85 ITJ)]  
SURENDER PAUL, Under Secy.  
Central Board of Direct Taxes

नई दिल्ली, 24 सितम्बर, 1985

आयकर

का. आ. 5142.—आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) की धारा 121 की उपधारा (1) द्वारा प्रवरत शक्तियों का प्रयोग करते हुए, केन्द्रीय प्रत्यक्ष कर बोर्ड एतद्वारा विनाक 1-3-1984 की अपनी अधिसूचना सं. 5675/का. सं. 187/41/81-आ. क. (नि.-I) में निम्नलिखित संशोधन करता है।

2. कालम 3 में ग के सामने कम सं. 2 पर उल्लिखित विवेष परिमिति-6 कलकत्ता तथा विवेष परिमिति-7 कलकत्ता समाप्त किये जाते हैं।

यह अधिसूचना 3-10-1985 से प्रभावी होगी।

[सं. 6444/आ. सं. 187/9/85-आ. क. (नि.-I)]

New Delhi, the 24th September, 1985

INCOME-TAX

S.O. 5142.—In exercise of the powers conferred by sub-section (1) of Section 121 of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961), the Central Board of Direct Taxes hereby makes the following amendment to its Notification No. 5675 dated 1st March, 1984 F. No. 187/41/81-IT(AI).

2. Special Circle-VI, Calcutta and Special Circle-VII, Calcutta appearing at S. No. 2 against C in column 3 are abolished.

This notification shall take effect from 3rd October, 1985.

[No. 6444/F. No. 187/9/85-IT(AI)]

नई दिल्ली, 1 सितम्बर, 1985

आयकर

का. आ. 5143.—भारत सरकार के संयुक्त सचिव ने, जिसे विदेशी मुद्रा संरक्षण और तस्करी निवारण अधिनियम, 1974 (1974 का 52) की धारा 3 की उपधारा (1) के प्रधान विवेष रूप से संशोधन किया गया है, उक्त उपधारा के प्रधान अदेश फा.सं. 673/62/85-सी.०-ग०-VIII, तारीख 3-7-1985 को यह निर्देश देते हुए जारी किया था कि श्री गुलबचंद पूर्वोरज जैन, 56-कर्वर स्ट्रीट, बम्बई-400001 को केन्द्रीय जैन, बम्बई में निरहुआ कर लिया जाए और अभिरक्षा में रखा जाए ताकि उसे विदेशी मुद्रा को संबूद्धि में बाधक किसी भी कार्य को करने से रोका जा सके।

2. केन्द्रीय सरकार के पास यह विश्वास करने का कारण है कि पूर्वोरज अविक्षित करार हो गया है या अपने को छिपा रखा है जिससे उक्त आदेश का निष्पादन नहीं हो सके; और

3. अदेश केन्द्रीय सरकार, उक्त अधिनियम की धारा 7 की उपधारा (1) के खंड (ब) द्वारा प्रदत शक्तियों का प्रयोग करते हुए, एतद्वारा यह निर्देश देते हैं कि पूर्वोरज अविक्षित इस आदेश के राजबन्ध में प्रकाशन के 7 दिन के भीतर पुलिस अधिकृत, बम्बई के समक्ष हाजिर हो।

[फा.सं. 673/62/85-सी.०-ग०-VIII]

New Delhi, the 1st November, 1985

ORDER

S.O. 5143.—Whereas the Joint Secretary to the Government of India, specially empowered under sub-section (1) of section 3 of the Conservation of Foreign Exchange and Prevention of Smuggling Activities Act, 1974 (52 of 1974) issued order F. No. 673/62/85-Cus. VIII, dated 3-7-1985 under the said sub-section directing that Shri Gulabchand Prithviraj Jain 56, Karwar Street, Bombay-400001 be detained and kept in custody in the Central Prison, Bombay with a view to preventing him from acting in any manner prejudicial to the augmentation of foreign exchange.

2. Whereas the Central Government has reason to believe that the aforesaid person has absconded or is concealing himself so that the order cannot be executed;

3. Now, therefore, in exercise of power conferred by clause (b) of sub-section (1) of section 7 of the said Act, the Central Government hereby directs the aforesaid person to appear before the Commissioner of Police, Bombay within 7 days of the publication of this order in the official gazette.

[F. No. 673/62/85-Cus.VIII]

का. आ. 5144.—भारत सरकार के संयुक्त सचिव ने, जिसे विदेशी मुद्रा संरक्षण और तस्करी निवारण अधिनियम, 1974 (1974 का 52) की धारा 3 की उपधारा (1) के प्रधान विवेष रूप से संशोधन किया गया है, उक्त उपधारा के प्रधान अदेश फा.सं. 673/62/85-सी.०-ग०-8, तारीख 12-7-1985 यह निर्देश देते हुए जारी किया था कि श्री किरण ब्रह्मनन्द परिलक, मर्कन श्री भास्कर नन्दनन्दन शर्मा, 111-बॉल कुटीर नेपियन सी रोड, बम्बई-400026 को केन्द्रीय जैन, बम्बई में निरहुआ कर लिया जाए और अभिरक्षा में रखा जाए ताकि उसे विदेशी मुद्रा को संबूद्धि में बाधक किसी भी कार्य को करने से रोका जा सके।

2. केन्द्रीय सरकार के पास यह विश्वास करने का कारण है कि पूर्वोरज अविक्षित करार हो गया है या अपने को छिपा रखा है जिससे उक्त आदेश का निष्पादन नहीं हो सके; और



भारतीय वित्त बैंक  
(ग्रामण अधिकारी और अधिकारी विभाग)

केन्द्रीय कार्यालय

वृन्दावन, 18 अक्टूबर, 1985

का. आ. 5148.—भारतीय वित्त बैंक अधिनियम, 1934 (1934 का 2) की धारा 42 की उपधारा (7) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, भारतीय रिजर्व बैंक एन्ड द्वारा केन्द्रीय ग्रामीण बैंक अधिनियम, 1976 (1976 का 21) के अंतर्गत गठित समस्त शक्तियों द्वारा ग्रामीण बैंकों को भारतीय रिजर्व बैंक अधिनियम, 1934 की धारा 42 की उपधारा (10) के उपबन्धों से दिनांक 12 नवम्बर, 1985 से अग्रामीण एक वर्ष के लिए मुक्त करता है।

[मंदर्भ आरपीसीडी सं. 888/324-85]

सी. बी. नायर, कार्यपालक निवेशक

RESERVE BANK OF INDIA  
(Rural Planning and Credit Department)  
(Central Office)

Bombay, the 18th October, 1985

S.O. 5148.—In exercise of the powers conferred by sub-section (7) of Section 42 of the Reserve Bank of India Act, 1934 (2 of 1934), the Reserve Bank of India hereby exempts all Regional Rural Banks constituted under the Regional Rural Banks Act, 1976 (21 of 1976) from the provisions of sub-section (1A) of Section 42 of the Reserve Bank of India Act, 1934 for a further period of one year commencing from 12th November, 1985.

[Ref. RPPCD No. 888/324/85]

C. V. NAIR, Executive Director

ममाहतामिय केन्द्रीय वित्त बैंक

नागपुर, 16 मिन्हाज, 1985

एक्सिस्टेंस का. 10/85

का. आ. 5149.—अधीक्षक केन्द्रीय उत्पाद-शृंखला श्रेणी "ब" में पश्चोत्तर होने पर निम्नलिखित निरीक्षकों ने अधीक्षक केन्द्रीय उत्पाद-शृंखला श्रेणी "ब" में उनके नाम के पांगे दर्शकीय विधि से पदभार संभाला।

क्र.सं.	नाम	तेलांगाना कार्यालय सहन करने की विधि
1.	इमरेहकर, वाई.	अधीक्षक, के. उ. श. उमरेहकर
2.	पी. के. ओशी	अधीक्षक (निवारक) प्रधान अन्ध्रपुर।
3.	एम. प्रम. धकाने	अधीक्षक के. उ. श. रेज वराग

[मा. सं. II(3) 3/85-स्था. I 81831]  
आर. के. आरिम डा. समाहनी (का. श्री अध.)

CENTRAL EXCISE COLLECTORATE

Nagpur, the 16th September, 1985

NOTIFICATION NO. 10/85

S.O. 5149.—Consequent upon their promotion as Superintendent, Central Excise Group 'B' the following Inspectors of Central Excise have assumed their charges as Superintendent, Central Excise Group 'B' with effect from the dates as shown against each :—

S. No.	Name of the Officer	Place of posting	Date of assumption of charge
1.	Shri W.Y. Umredkar	Superintendent, C. Ex. Range, Awarpur.	9-8-85 (FN)
2.	Shri P.K. Joshi	Superintendent (P), C. Ex. Division Chandrapur.	13-8-85 (FN)
3.	Shri C.S. Dhakate	Superintendent, C. Ex. Range, Warora.	19-8-85 (FN)

[C. No. II(3) 3/85/ET. I/61831]  
R. K. AUDIM, Dy. Collector (P & E)

अधिकारी मंत्रालय

(वस्त्र विभाग)

नई फिल्मी, 29 अक्टूबर, 1985

का. आ. 5150.—केन्द्रीय सरकार, केन्द्रीय रेशम बोर्ड अधिनियम, 1948 (1948 का 61) की धारा 4 की उपधारा (3) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, पूर्ण एवं वस्त्र मंत्रालय (वस्त्र विभाग), भारत सरकार की अधिसूचना म. का. आ. 517 (अ), दिनांक 9 जून 1985 में एन्डवारा निम्नलिखित वंशोदयन करती है :—

उपर अधिसूचना में मद सं. 13 और उससे मंजुरित प्रतिलिपि के स्थान पर निम्नलिखित प्रतिलिपि दिया जाएगा, अर्थात् :—

"13 श्री एम. बी. शर्मा

अधिकारी मंत्रालय

विद्यारथ सरकार"

[एक. सं. 25012/8/85-रेशम]  
ए. के. सेनगुप्ता, निदेशक

MINISTRY OF COMMERCE

(Department of Textiles)

New Delhi, the 29th October, 1985

S.O. 5150.—In exercise of the powers conferred by sub-section (3) of section 4 of the Central Silk Board Act, 1948 (61 of 1948), the Central Government hereby makes the following amendment in the notification of the Government of India in the Ministry of Supply and Textiles (Department of Textiles) No. S.O. 517(E) dated 9th July, 1985 :—

In the said notification, for item 13 and the entry relating thereto, the following shall be substituted, namely :—

"13 Shri S. V. Sharan  
Commissioner and Secretary  
Department of Industries  
Government of Bihar"

[F. No. 25012/8/85-Silk]  
A. K. SENGUPTA, Director

(मुख्य सियालक, इयात-नियांत का कार्यालय)

नई फिल्मी, 18 अक्टूबर, 1985

प्राप्ति

का. आ. 5151.—डाकमालांग अन्ध्रप्रदेश, 726, 45वा कोड, 8था अन्ध्रप्रदेश, अंगलोर-41 को एक आडी 80 मी. एल डीजीप 1598 मी. सी. कार बेसिस नं. ३८८८ पर ए. बी. डी. डी. डी. ३८८८ पर ०३६४६० का फ्रेशार्क करने के लिये ९,०००/- रुपये माल का एक संभालुक नियांती परिविष्ट म. वी. ए. ३०६४९७४ दिनांक 7-२-८५ दिया गया था। आवेदक ने उपर उल्लिखित नियांती का परिविष्ट भी अनुसंधान प्रति धारी करने के लिये इस आधार पर आवेदन किया है कि नियांती की विद्युतीय विवरण उपर दिए गए हैं। आवेदक

बताया गया है कि भूत सीमानुक निकासी परमिट किसी भी सीमा अनुक प्राधिकारी के पास पंजीकृत नहीं था और यह तरह सीमानुक निकासी परमिट के भूत्य का विकल्प भी उपलब्ध नहीं किया गया था।

2. उपरोक्त तर्क के समर्थन में, लाइसेंसदाता ने उचित व्यापिक प्राधिकारी के सामने विविध गपय लेकर एक गपय पत्र दाखिल किया है। मैं सदृश्यार मन्मृष्ट हूँ कि आवेदक द्वारा सूत सीमानुक निकासी परमिट सं. पी/जे/3064974 दिनांक 7-2-85 द्वारा दिया गया है। समयन्तरमय पर यथा संशोधित प्रायात (नियंत्रण) प्रायात, 1955 की उपधारा 9 (ग) के प्रधीन प्रदत्त प्राधिकारों का प्रयोग करने के द्वारा डॉ. चन्द्रपा को आरोपी किये गये कलिंग पुल सीमानुक निकासी परमिट सं. पी/जे/3064974 दिनांक 7-2-85 की उपधारा 9 द्वारा किया जाना है।

3. सीमानुक निकासी परमिट की अनुमति प्रति पार्टी को अनुग्रह ने जारी की जा रही है।

[फाइल सं. प/सी-16/१४०५/जी पत्र एम/2125]

(Office of the Chief Controller of Imports & Exports)

New Delhi, the 18th October, 1985

#### ORDER

S.O. 5151.—Dr. M. H. Chandrappa, 726, 45th Cross, 8th Block Jayanagar, Bangalore-41 was granted a Customs Clearance Permit No. P/J/3064974 dt. 7-2-85 for Rs. 9,000 only for import of one Audi 80 CL Diesel 1598 CC car chassis No. WAUZZZ-81 ZDA 036460. The applicant has applied for issue of Duplicate copy of the above mentioned Customs Clearance Permit on the ground that the original CCP has been misplaced/lost. It has further been stated that the original CCP was not registered with any Customs authority and as such the value of the CCP has not been utilised at all.

2. In support of his contention the licensee has filed an affidavit duly sworn before appropriate judicial authority. I am accordingly satisfied that the original CCP No. P/J/3064974 dt. 7-2-85 has been lost by the applicant. In exercise of the powers conferred under Sub-Clause 9(cc) of the Import (Control) Order, 1955 dated 7-12-1955 as amended from time to time, the said original CCP No. P/J/3064974 dt. 7-2-85 issued to Dr. Chandrappa is hereby cancelled.

3. A duplicate copy of the Customs Clearance Permit is being issued to the party separately.

[F. No. A/C-16/84-85/BLS/2120]

#### प्राप्तिका

कानूनो 5152—श्री मुल्लान मोहिदीन शाह, पोस्ट बाक्स 2583, भारत (संयुक्त प्रदेश अमीरात). को एक श्री एम इल्यू रैल्स 316 द्वारा एक ही 1985 मालक की कार का साधारण करने के लिये १०,००० रुपये के बल का एक सीमानुक निकासी अनुमति पत्र सं. पी/जे/3052226, दिनांक 16-8-85 दिया गया था। आवेदक ने उपर्युक्त सीमानुक निकासी प्रदानात पत्र की अनुमिति प्रति जारी किये जारी का इस प्राधिक पर आवेदन किया है कि सीमानुक निकासी अनुमति पत्र की सूत प्रति प्रस्थानमय हो गई है/जो गई है। आगे यह कहा गया है कि सीमानुक निकासी प्रदानात पत्र की सूत प्रति किसी सीमानुक प्राधिकरण के पास पंजीकृत नहीं कराई गई थी तथा इस प्रकार सीमानुक निकासी प्रदानात पत्र के सूत का विकल्प भी उपलब्ध नहीं किया गया है।

2. उपरोक्त तर्क के समर्थन में, लाइसेंसदाती ने अपर्युक्त व्यापिक प्राधिकारी के समस्त विविध गपय लेकर एक गपय पत्र दाखिल किया है। मैं, तदनुसार, मंत्रुष्ट हूँ कि सूत सीमानुक निकासी अनुमति पत्र सं. पी/जे/3052226, दिनांक 16-8-85 आवेदक द्वारा दी गई है। समयन्तरमय १८ दशा गंशीधित आवात (नियंत्रण) प्रायात, 1955, दिनांक 7-12-1955 की उपधारा 9 (ग) के उल्लंघन प्रदत्त प्राधिकारों का

प्रयोग करते हुए, श्री मुल्लान मोहिदीन शाह को आरोपी किया गया। कथित मूल संवादानुसार निकासी अनुमति पत्र सं. पी/जे/3052226, दिनांक 16-8-85 एनक्सान द्वारा किया जाता है।

3. पार्टी को अनुग्रह ने सीमानुक निकासी प्रदानी पत्र की अनुमिति प्रति जारी की जा रही है।

[फाइल सं. प/म-८३/४५-८६/वी एल एम/2125]

एवं प्रदृश्यानुरूप, उप सूत नियवक, आयात-नियर्यात द्वारा मूल निकासी, आयात-नियर्यात

#### ORDER

S.O. 5152.—Mr. Sultan Mohideen Shah, Post Box 2583, Sharjah, (U.A.E.) was granted a Customs Clearance Permit No. P/J/3052226 dt. 16-8-85 for Rs. 80,000 only for import of one BMW Saloon 316 RHD 1985 Model car. The applicant has applied for issue of Duplicate copy of the above mentioned Customs Clearance Permit on the ground that the original CCP has been misplaced/lost. It has further been stated that the original CCP was not registered with any Customs authority and as such the value of the CCP has not been utilised at all.

2. In support of his contention, the licensee has filed an affidavit duly sworn before appropriate judicial authority. I am accordingly satisfied that the original CCP No. P/J/3052226 dt. 16-8-85 has been lost by the applicant. In exercise of the powers conferred under Sub-Clause 9(cc) of the Import (Control) Order, 1955 dt. 7-12-1955 as amended from time to time, the said original CCP No. P/J/3052226 dt. 16-8-85 issued to Shri Sultan Mohideen Shah is hereby cancelled.

3. A duplicate copy of the Customs Clearance Permit is being issued to the party separately.

[F. No. A/S-83/85-86/BLS/2123]  
N. S. KRISHNAMURTHY, Dy. Chief Controller of  
Imports & Exports

For Chief Controller of Imports & Exports

उपरोक्त और कम्पनी कार्य संबंधगत

(कम्पनी कार्य विभाग)

नई दिल्ली, 18 अक्टूबर, 1985

कानूनो 5153.—एकाधिकार तथा अवरोधक व्यापारिक अवधार प्रधिनियम, 1969 (1969 का 54) की धारा 26 की उपधारा (3) के अनुसार मैं, केंद्रीय संस्कार एवं द्रवदारा इस अधिसूचना के अनुसारमय में उत्तिलिम उपकरों के पंजीकरण को, उपर उल्लिखितों के बहु उपकरण होने पर, जिन पर उपकरणप्रधिनियम के आव्याय-III के मानक के उपर्युक्त तत्व लागू नहीं होते हैं, के लियस्तीकरण को अधिसूचित करती है।

[मं. १६/१२/३-८८०-३]

प्रदृश्य सं. १६/१२/३-८८०-३  
प्रदृश्य सं. १६/१२/३-८८०-३  
प्रदृश्य सं. १६/१२/३-८८०-३

प्रधिसूचना सं. १६/१२/८५-प्रदृश्य ३ का अनुसारनक

क्र.सं	उपकर का नाम	पंजीकृत पते	पंजीकरण संख्या
1	2	3	4
1.	भू. राजस्थान स्पीलिंग भीपवाडा भवन,		1500/80
	पंजीकरण मिल्स नं. 40-41, कम्पनीटी सेट्टर,		
	गई क्रेन्स्ट लाइनों,		
	मई विल्सन-110-651		

1	2	3	4	1	2	3	4
2. मैं भीलवाडा मन्डिरम् लि०	26 इन्डस्ट्रीयल एस्टेटा, पो०ब०० न० १७, पोस्ट ऑफिस भीलवाडा-३११००१ (राजस्थान)	1502/80		5. M/s. Goodyear India Ltd.	Mathura Road, Ballabgarh, (Faridabad) Haryana.	910/73	
3. मैं बजाज टेम्पो लि०	बम्बई-पूना रोड, ग्रन्डॉर्बा०, पुणे-४११००५	1528/81		6. M/s. Ceramic Services Ltd.	603, Deep Shikha, 8-Rajendra Place, New Delhi-110008.	1138/75	
4. मैं केमी फार्मो लेब्रो- रेट्रीज लि०	५, एम० आई०ड० सी० कल्याण चिवाली रोड, पोस्ट पंडु ग्राम सारावली आया-कल्याण, जिला बांगा (महाराष्ट्र)	1571/82					
5. मैं गुडइयर इंडिया लि०	मधुरा रोड, बल्कमाड (फरोवाबाब इंडिया)	910/73					
6. मैं सेरामिक सर्विसेज लि०	603, दीपा शिवा, ८-राजेन्द्र प्लेस, नई दिल्ली-११०००८						

## MINISTRY OF INDUSTRY

(Department of Company Affairs)

New Delhi, the 18th October, 1985

S.O. 5153.—In pursuance of sub-section (3) of Section 26 of the Monopolies and Restrictive Trade Practices Act, 1969 (54 of 1969), the Central Government hereby notifies the cancellation of the registration of the undertakings mentioned in the Annexure to this notification, the said undertakings being undertakings to which the provisions of Part A Chapter III of the said Act no longer apply.

[No. 16/12/85.M-III]

L. C. GOYAL, Under Secy.

Annexure to the Notification No. 16/12/85. M-III

S. No.	Name of the Undertakings	Registered Address	Regis- tration No.
1	2	3	4
1.	M/s. Rajasthan Spinning & Weaving Mills Ltd.	Bhilwara Bhawan, 40-41, Community Centre, New Friends Colony, New Delhi- 110065.	1500/80
2.	M/s. Bhilwara Synthetics Ltd.	26 Industrial Area, P.B. No. 17, Post Office Bhilwara- 311001 (Rajasthan)	1502/80
3.	M/s. Bajaj Tempo Ltd.	Bombay-Poona Road, 1528/81 Akurdi, Pune-411035.	
4.	M/s. Chemo Pharma Labo- ratories Ltd.	5, M.I.D.C., 1571/82 Kalyan-Bhiwandi Road, Post & Vill- age Saravali Via- Kalyan Distt. Thana (Maharashtra).	

स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय

नई दिल्ली, 18 अक्टूबर, 1985

का. धा. 5154.—केस्टरॉय सरकारी स्थान (प्रशांतिक प्रयोगियों की वेदान्ती) अधिनियम, 1971 (1971 का 40) की प्राप्ता ३ द्वारा प्रदत्त अधिकारों का प्रयोग करते हुए और भारत सरकार के स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय (स्वास्थ्य विभाग) की प्रशिक्षितमा में, नई १६०१२/१/७६- एच., तारीख ८ जून, 1984 को, उन शासी के सिवाय प्रधिकारों करने के लिए अधिकारों के स्वास्थ्य संस्थान से पहले नियोग दिया गया है या करने का लोप किया गया है नीर्धि की सारणी के सम्बन्ध (१) में उनियित अधिकारों को, जो सरकार का राजपत्रित अधिकारी है, उनके अधिनियम के प्रयोजनों के लिये, संघर्ष भ्रष्टकारी नियुक्त करती है, जो उनके सारणी के सम्बन्ध (२) में की तर्ज स्थान। प्रधिकार में विनियिष्ट सरकारी स्थानों की बाबत अपने अधिकारियों की स्थानीय सीमाओं के भीतर उनके अधिनियम द्वारा या उसके प्रधीन संपदा अधिकारी को प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करना और उन पर प्रतिरोधित करनेवालों का पालन करना।

## सारणी

अधिकारी का पदाधिकार सरकारी स्थानों के प्रबंध और अधिकारियों की स्थानीय सीमाएं।

प्रधिकारी अधिकारी,	१. सफवरजग अस्पताल, नई दिल्ली की भूमि के सभी प्लाट भवन
	२. मवनगीर जनता टाइप ४० फ्लैट्स
	३. चिंग रोड १९२ क्वार्टर्स (राजनगर के पास) नई दिल्ली।
	४. नविंग का तुगना महाविद्यालय (९७ कमरों), जसवंत सिंह रोड के पास, नई दिल्ली।

[स. नई. १६०१२/१/७६- एच.]  
हिमन राह धकालिया, अपर सचिव

## MINISTRY OF HEALTH AND FAMILY

## WELFARE

New Delhi, the 18th October, 1985

S.O. 5154.—In exercise of the powers conferred by section 3 of the Public Premises (Eviction of Unauthorised Occupants) Act, 1971 (40 of 1971) and in supersession of the notification of the Government of India in the Ministry of Health and Family Welfare (Department of Health No. Y. 16012/1/76- H, dated the 8th June, 1984, except as respect things done or omitted to be done before such supersession, the Central Government hereby appoints the officer mentioned in column (1) of the Table below, being a Gazetted Officer of the Government, to be an Estate

Officer for the purposes of the said Act, who shall exercise the powers conferred, and perform the duties imposed, on Estate Officers by or under the said Act within the local limits of his jurisdiction in respect of the public premises specified in the corresponding entry in column (2) of the said Table.

TABLE

Designation of the Officer	Categories of Public premises and the local limits of jurisdiction
Medical Officer, Safdarjang Hospital, New Delhi.	<ol style="list-style-type: none"> <li>1. All plots of lands/buildings belonging to the Safdarjang Hospital, New Delhi.</li> <li>2. Madangir Janta Type 40 Flats.</li> <li>3. Ring Road-192 quarter (Near Raj Nagar) Delhi.</li> <li>4. Old College of Nursing (97 rooms) near Jaswant Singh Road, New Delhi.</li> </ol>

[No. Y. 16012/1/76-H]

H.S. DHAKAALIA, Under Secy.

मई दिनांक, 18 अक्टूबर, 1985

पृष्ठिपत्र

का. आ. 5155.—भारत के राजपत्र, भाग 2, खंड 3, उपबंड (ii) में पृष्ठ 3565 पर प्रकाशित भारत सरकार के स्वास्थ्य और परिवर्तन भवन भवनालय (स्वास्थ्य विभाग) की अधिसूचना में का. आ. 3099 तारीख 21 जून, 1985 में "विविधिविद्यालय, बोई अवार्ड विकितसा संस्था का नाम" शब्द के नीचे "29 होम्योपैथिक" अंक और शब्द के स्थान पर "29 क. होम्योपैथिक" अंक, अंक और शब्द पढ़ें।

[सं. वं. 27021/14/85-होम्यो.]  
पं. एस. कपूर, डेस्क अधिकारी, (होम्यो.)

New Delhi, the 18th October, 1985

## CORRIGENDUM

S.O. 5155.—In the notification of the Government of India in the Ministry of Health and Family Welfare Department of Health) No. S.O. 3099, dated the 21st June, 1985, published in the Gazette of India, Part II, Section 3, sub-section (ii), at page 3565, under the heading "Name of University, Board or Medical Institution", for "29. The Council" read "29A. The Council".

[No. V-27021/14/85-Homoeo]  
P. L. KAPUR, Desk Officer

ऊर्जा भवनालय

(कोयला विभाग)

नई दिल्ली, 24 अक्टूबर, 1985

शुद्धि पत्र

का. आ. 5156—भारत के राजपत्र नारीश 2 मार्च, 1985 के भाग 2, खंड 3, उपबंड (ii) में पृष्ठ 1031 पर प्रकाशित भारत सरकार के इस्पात, आम और कोयला भवनालय, कोयला विभाग की अधिसूचना का आ. सं. 882 तारीख 12 फरवरी, 1985 में—

पृष्ठ 1021 पर—

- (1) अधिसूचना में "कोयला भवनालय" के स्थान पर "कोयला इस्टेट भवनालय" पढ़िए।
- (2) 'कोयला इस्टेट' के स्थान पर "कोयला इस्टेट" पढ़िए। अनुसूची में—
- (3) अम भवन। प्रांत 5 में सहीन स्थान के नीचे काला अ. 5 में रानी के नाम पर "बर्णा" पढ़िए।
- (4) कम भवन। 1 में "खेत लेटेटोने में" स्थान के नीचे "184.21" के स्थान पर "184.21" पढ़िए।

1022 पर—

गोमा बंगल में—

- (5) रेखा बंगल में रेखा "गुलबर" के स्थान पर "गुलबर" पढ़िए और "वैदिका" के स्थान पर "वैदिका" पढ़िए।

[सं. 43019/21/84-सी.ए.]

## MINISTRY OF ENERGY

(Department of Coal)

New Delhi, the 24th October, 1985

## CORRIGENDUM

S.O. 5156.—In the notification of the Government of India in the Ministry of Steel, Mines and Coal (Department of Coal) S.O. No. 882 dated 12th February, 1985, published at pages 1021 to 1023 of the Gazette of India, Part II, Section 3, Sub-section (ii) dated 2nd March, 1985 :

At page 1023 :

- (a) in the Schedule—against serial number 19, for "Niljal" read "Niljal".
- (b) in the boundary description—
  - (i) in line A-B, "Ag si" read "Agasi";
  - (ii) in line D-A, for "a starting point 'A'" read "at starting point 'A'".

[No. 43019/21/84-CA]

का.आ. 5157—केन्द्रीय सरकार ने, भारत के राजपत्र तारीख 17 सितम्बर, 1983 में प्रकाशित कोयला धारक बोर्ड (अर्जन और विकास) अधिनियम, 1957 (1957 का 20) की धारा 7 की उप-धारा (1) के अधीन आरी को गई भारत सरकार के ऊर्जा भवनालय (कोयला विभाग) की अधिसूचना में का.आ. 3565 तारीख 30 अगस्त, 1983 द्वारा, उक्त अधिसूचना में संलग्न अनुसूची में विनिविष्ट परिमाण 185.00 एकड़ (लगभग) या 66.67 हेक्टर (लगभग) साप की मूलि का अर्जन करने के अपने आशय की सूचना दी थी;

और मध्यम प्राधिकारी ने उक्त अधिनियम की धारा 8 के अनुसार अपनी रिपोर्ट केन्द्रीय सरकार को दे दी है;

और केन्द्रीय सरकार का पूर्वोक्त रिपोर्ट पर विचार करने और विहार सरकार से परामर्श करने के पश्चात यह समाधान हो गया है कि इससे संलग्न अनुसूची में घण्टित 165.00 एकड़ (लगभग) या 66.77 हेक्टर (लगभग) साप की मूलि का अर्जन किया जाना चाहिए;

अत, अब, केन्द्रीय सरकार, उक्त अधिनियम की धारा 8 की उपलब्ध (1) द्वारा प्रदत्त अनुसूची का प्रयोग करते हुए, यह विवरण करते हैं

कि उक्त अनुसूची में वर्णित 165.00 एकड़ (लगभग) या 66.77 हेक्टर (लगभग) माप की भूमि का अर्जन किया जाता है;

इस अधिसूचना के अन्वयन अनेकां थेल के रेखांक का निर्धारण उपर्युक्त, लज्जारीबाग (बिहार) के कार्यालय या कोमला नियंत्रक, 1, काउन्सिल हाउस स्ट्रीट, कालकत्ता या सेल्लूल कॉनफरेंस लिमिटेड (राजस्व अनुभाग), दरभंगा ड्राइव, रायगढ़ (बिहार) के कार्यालय में किया जा सकता है।

#### अनुसूची

लोहमो लालक खिस्तार  
परिवर्ती बोकारो कोयला खनन,  
जिला हजारी बाग (बिहार)

क्षात्र संख्या राजस्व 101/84

नारीड़ 29-6-1984

(विसमें अर्जित भूमि दर्शित की गई है)

#### मर्मी अधिकार

क्रम संख्या	प्रामाण	बाजार बाजार	जिला	थेल	टिप्पणी
सं.		मं.		(एकड़ में)	
1. लोहमो	मालू	162	हजारीबाग	165.00	भाग
				कुल थेल: 165.00 एकड़ (लगभग)	
				या 66.77 हेक्टर (लगभग)	

#### लोहमो ग्राम में अवित 'प्लाट संख्यांक

1155 (भाग), 1156 (भाग), 1171 (भाग), 1838 (भाग), 1836 (भाग), 1843 (भाग), 1843 (भाग), 1844 (भाग), 1845 से 1854, 1855 (भाग), 1857 (भाग), 1858 (भाग), 1910 (भाग), 1911 (भाग), 1912 (भाग), 1913 से 1930, 1934 (भाग) 1953 (भाग), 1956 (भाग), 1957 (भाग), 1958, 1959 (भाग), 1960 (भाग), 1972 (भाग), 1973 (भाग), 1978 (भाग), 1979 (भाग), 1980 से 1994, 1995 (भाग), 1996, 1997, 1998, 1999 (भाग), 2009, 2001, 2002 (भाग), 2003 (भाग), 2013 (भाग), 2119 (भाग), 2020 (भाग), 2021 (भाग), 2022 (भाग), 2023, 2024, 2025 (भाग), 2026 (भाग), 2027 (भाग), 2028, 2029 (भाग), 2030 (भाग), 2031 (भाग), 2032, 2033, 2034, 2035 (भाग), 2036 (भाग) 2037 से 2040, 2048 (भाग), 2513 (भाग), 2514 से 2517, 2520 (भाग), 2521, 2522, 2523, 2524 (भाग), 2525 से 2538, 2541 (भाग), 2542 से 2547, 2548 (भाग), 2552 (भाग), 2554 (भाग), 2555, 2556, 2557 और 3201 (भाग)।

#### सीमा बर्णन :

क-ख-ग-य रेखाएं, लोहमो ग्राम में प्लाट संख्यांक 2015, 1910, 1912, 1913, 1910, 1835, 1857, 1858 प्लाट संख्यांक 3462 की पूर्वी और दक्षिणी सीमा से होकर प्लाट संख्यांक 2524, 2513, 2524, 2520, 2524 और 3201 से होकर जाती है (जो लारखंड कोयला खनन के साथ भागता समिलित सीमा बनती है) और बिन्दु 'क' पर मिलती है।

ग-इ रेखा लोहमो ग्राम में प्लाट संख्यांक 3201, 2524, 2541 और 2524 से होकर जाती है (जो लोहमो कोयला खनन सीमा के साथ सम्मिलित सीमा बनती है) और बिन्दु 'क' पर मिलती है।

क-ख-ग-य रेखाएं लोहमो ग्राम के प्लाट संख्यांक 2524, प्लाट संख्यांक 2543 की पूर्वी सीमा से होकर

प्लाट संख्यांक 2548, 2524, 2552, 2524, 2554, 2524, 1842, 1843, 1844, 1836, 1835, 1910, 1931, 1933, 1956, 1957, 1959, 1960, 1972, 1973, 1978, 1979, 1978, 2003, 2002, 1999, 1995, 2013, 1996, 2021, 2022, 2021, 2021, 2025, 2026, 2027, 2020, 2019, 2028, 2031 और 2030 से होकर जाती है (जो कोयला अधिनियम को धारा 9(1) के अधीन अर्जित लोहमो ड्वाक के साथ सम्मिलित सीमा बनती है) और बिन्दु 'ज' पर मिलती है।

रेखा लोहमो ग्राम में प्लाट संख्यांक 2030, 2031, 1171, 2035, 2036, 1156 और 1155 से होकर जाती है और बिन्दु 'क' पर मिलती है।

रेखा लोहमो ग्राम में प्लाट संख्यांक 204 कूटुंबा नगरी की दक्षिणी सीमा के साथ सम्मिलित सीमा बनती है और अरमिन्द्र बिन्दु 'क' पर मिलती है।

[मं. 43019/23/81-सी. ए]

S.O.5157—Whereas by the notification of the Government of India in the Ministry of Energy (Department of Coal) No. S.O. 3566, dated the 30th August, 1983 issued under sub-section (1) of section 7 of the Coal Bearing Area (Acquisition and Development) Act, 1957 (20 of 1957), published in the Gazette of India, dated the 17th September, 1983, the Central Government gave notice of its intention to acquire the lands measuring 165.00 acres (approximately) 66.77 hectares (approximately) in the locality specified in the Schedule appended to the Notification;

And whereas the Competent Authority, in pursuance of Section 8 of the said Act, has made his report to the Central Government;

And whereas the Central Government, after considering the report aforesaid and after consulting the Government of Bihar, is satisfied that the lands measuring 165.00 acres (approximately) or 66.77 hectares (approximately), described in the said Schedule; appended hereto; should be acquired.

Now therefore, in exercise of the powers conferred by sub-section (1) of section 9 of the said Act, the Central Government hereby declares that the lands measuring 165.00 acres (approximately) or 66.77 hectares (approximately), described in the said Schedule; are hereby acquired.

2. The plans of the area covered by this notification may be inspected in the Office of the Deputy Commissioner, Hazaribagh (Bihar) or in the Office of the Coal Controller, 1, Council House Street, Calcutta or in the office of the Central Coalfields Limited (Revenue Section) Darbhanga House, Ranchi (Bihar).

## SCHEDULE

Loiyo Block Extr.  
West Bokaro Coalfield,  
Distt. Hazaribagh (Bihar)

Drg. No. Rev/101/84  
Dated : 27-6-85  
(Showing lands acquired)

## ALL RIGHTS

Serial Number	Village	Thana	Thana number	District	Area in acres	Remarks
1.	Loiyo	Mandu	162	Hazaribagh	165.00	Part
Total area :—165.00 acres (approximately) or 66.77 hectares (approximately)						

Plot numbers acquired in village Loiyo:—

1155(Part), 1156(Part), 1171 (Part), 1835(Part), 1836(Part), 1842 (Part), 1843(Part), 1844 (Part), 1845 to 1854, 1855 (Part), 1857 (Part), 1858 (Part), 1910 (Part), 1911 (Part), 1912 (Part), 1913 to 1930, 1931 (Part), 1953 (Part), 1956 (Part), 1957 (Part), 1958, 1959 (Part), 1960 (Part), 1972 (Part), 1973 (Part), 1978 (Part), 1979 (Part), 1980 to 1994, 1995 (Part), 1996, 1997, 1998, 1999 (Part), 2000, 2001, 2002 (Part), 2003 (Part), 2013 (Part), 2019 (Part), 2020 (Part), 2021 (Part), 2022 (Part), 2023, 2024, 2025 (Part), 2026 (Part), 2027 (Part), 2028, 2029 (Part), 2030 (Part), 2031 (Part), 2032, 2033, 2034, 2035 (Part), 2036 (Part), 2037 to 2040, 2048 (Part), 2513 (Part), 2514 to 2517, 2520 (Part), 2521, 2522, 2523, 2524 (Part), 2525 to 2538, 2541 (Part), 2542 to 2547, 2548 (Part), 2552 (Part), 2554 (Part), 2555, 2556, 2557, & 3201 (Part).

Boundary description:—

A-B-C-D lines pass through plot numbers 2048, 1910, 1912, 1911, 1910, 1855, 1857, 1858, eastern and southern boundary of plot number 3462 through plot numbers 2524, 2513, 2524, 2520, 2524, and 3201 in village Loiyo (which forms part common boundary with Jharkhand Colliery) and meet at point 'D'.

D-E line passes through plot numbers 3201, 2524, 2541, and 2524 in village Loiyo (which forms common boundary with Loiyo Colliery boundary) and meets at point 'E'.

E-F-G-H lines pass through plot number, 2524, eastern boundary of plot number 2543 through plot numbers 2548, 2524, 2552, 2524, 2554, 2524 1842, 1843, 1844, 1836, 1835, 1910, 1931, 1953, 1956, 1957, 1959, 1960, 1972, 1973, 1978, 1979, 2003, 2002, 1999, 1995, 2013, 1995, 2021, 2022, 2021, 2025, 2026, 2027, 2020, 2019, 2029, 2031 & 2030 in village Loiyo (which forms common boundary with Loiyo Block acquired u/s 9 (1) of the Coal Act) and meet at point 'H'.

H-I line passes through plot numbers 2030, 2031, 1171, 2035, 2036, 1156 & 1155 in village Loiyo and meets at point 'I'.

I-A line passes along the southern boundary of plot number 2041 (Chutua Nadi) in village Loiyo and meets at starting point 'A'.

[No. 43019/23/84-CA]

का आ 5158.—केन्द्रीय सरकार की यह प्रतीत होता है कि उसमें उपर्युक्त अनुसूची में उल्लिखित भूमि में कोकना अभियान किए जाने की संभावना है।

अ. केन्द्रीय सरकार, कोकना भारक देव (अर्जन और विकास) अभियान, 1957 (1957 का 30) की धारा 4 की आधारा (1) द्वारा प्रदत्त प्रतिक्रिया का प्रयोग करने हैं। उस देव में कोकने का पूर्वोक्त करने के अपने आपमें की सूचना दी गई है;

उम्भावितस्थान के अधीन आने वाले देव के नियम सं 30 राजस्व/31/82 तारीख 21 अप्रैल 1982 का नियमण संस्कृत कोकनीदेव लिमिटेड (राजस्व अनुभाग), दरभाना हाउस, रांची के कार्यालय में या उस द्वारा दर्ज, हार्डी ब्राउ (विकास) के कार्यालय में अधिक कोकना नियमण 1. काउन्सिल हाउस स्ट्रीट, कलकत्ता के कार्यालय में किया जा सकता है।

इन अभियुक्तों के अधीन आने वाली भूमि में हितवड़ पर्व श्रवित, उस अधियान की धारा 13 की उपधारा (7) वे नियमण संसी नस्तों, बाटों और अन्य वस्तुविवेजों को, इस अभियुक्तों के राजपत्र में प्रकाशम की तरीख से नव्वे दिन के भीतर, राजस्व अधिकारी, संस्कृत कोकनीदेव लिमिटेड, दरभाना हाउस, रांची द्वारा भेजेगा।

## अनुसूची

पार्ट्स, ज्ञाक  
प्रतिक्रिया कोकना भारक  
(पूर्वोक्त के नियम अभियुक्त भूमि)

द्वारा सं 30 राजस्व/

31/82—पार्ट्स 21-4-1982

प्र०	ग्राम	धारा	धारा	जिला	देव ऐक्टों	स्थितियाँ
सं०		सं०			में	
1.	पार्ट्स	मातृ	54	बजारीबाग	230.26	भाग
2.	कासाबाग	मातृ	123	बजारीबाग	37.50	भाग
3.	कार्चीचंडा	मातृ	124	बजारीबाग	410.87	भाग
4.	तंरा	मातृ	125	बजारीबाग	551.38	भाग
कुल देव						1230.00 एकाउ (लगभग)
या						497.75 हेक्टर (लगभग)

## सीमा वर्णन

क-अ रेखा, पादरंगी ग्राम से होकर जाती है और बिल्कु 'ध' पर मिलती है।

क-ब रेखा, पादरंगी और पिंडरा ग्रामों की सम्मिलित सीमा के साथ-साथ जाती है और बिल्कु 'ग' पर मिलती है।

क-च रेखा, तीरा और पिंडरा ग्रामों का सम्मिलित सीमा के साथ-साथ जाती है और बिल्कु 'ध' पर मिलती है।

क-द रेखा, तीरा और तोपा ग्रामों की सम्मिलित सीमा के साथ-साथ जाती है और बिल्कु 'क' पर मिलती है।

क-ए-क रेखा, तीरा ग्राम से होकर जाती है और बिल्कु 'ध' पर मिलती है।

क-ज रेखा, सींग और तोपा ग्रामों की सम्मिलित सीमा के साथ-साथ जाती है और बिल्कु 'ज' पर मिलती है।

ज-स रेखा, कारीबंधा और तोपा ग्रामों के साथ-साथ जाती है और बिल्कु 'स' पर मिलती है।

क-स रेखा, कारीबंधा और तोपा ग्रामों की सम्मिलित सीमा के साथ-साथ जाती है और बिल्कु 'अ' पर मिलती है।

क-ट रेखा, कारीबंधा और तोपा ग्रामों के साथ-साथ जाती है और बिल्कु 'स' पर मिलती है। [जो कोयला धारक सेव (अर्जन और विकास) अधियायम्, 1957 की धारा 4(1) के अधीन अधिसूचित मोहू ब्लाक के उप-ब्लाक-1 की सम्मिलित सीमा बनती है] और बिल्कु 'ट' पर मिलती है।

ट-ट रेखा, कारीबंधा और पिंडरा ग्रामों की सम्मिलित सीमा के साथ-साथ जाती है और बिल्कु 'ट' पर मिलती है।

ट-क रेखा, पादरंगी और पिंडरा ग्रामों की सम्मिलित सीमा के साथ-साथ जाती है और आर्टिशक बिल्कु 'क' पर मिलती है।

[S. 43015/23/85-सी.ए.]

S.O.5158.—Whereas it appears to the Central Government that coal is likely to be obtained from the lands mentioned in the Schedule hereto annexed:

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by sub-section (1) of section 4 of the Coal Bearing Areas (Acquisition and Development) Act, 1957 (20 of 1957), the Central Government hereby gives notice of its intention to prospect for therein.

The plan No. Rev/31/82 dated the 21st April, 1982 of the area covered by this notification can be inspected at the office of the Central Coalfields Limited (Revenue Section), Darbhanga House, Ranchi, or at the office of the Deputy Commissioner, Hazaribagh (Bihar) or at the office of the Coal Controller, 1, Council House Street, Calcutta.

All persons interested in the land covered by this notification shall deliver all maps, charts and other documents referred to in sub-section (7) of section 13 of the said Act to the Revenue Officer, Central Coalfields Limited, Darbhanga House, Ranchi, within ninety days from the date of publication of this notification in the Official Gazette.

Schedule  
Padrangi Block  
West Bikaro Coalfield

(Showing land  
notified for prospecting)

Drawing No.  
Rev/31/82  
dated 21-4-82

Serial number	Village number	Thana	Thana number	District	Area in acre	Remarks
1. Padrangi		Mandu	54	Hazaribagh	230.25	Part
2. Kasihhap		-do-	123	-do-	37.50	-do-
3. Karibanda		-do-	124	-do-	410.87	-do-
4. Toera		-do-	125	-do-	551.38	-do-

Total Area.—1230.00 acres (approximately)  
or 497.75 h. c. acres (approximately).

Boundary description:—

A-B line passes through village Padrangi and meets at point "AB".

B-C line passes along the common boundary of villages Padrangi and Pindra and meets at point 'C'.

passes along the common boundary of villages Toera and Pindra and meets at point 'D'.

D-E line passes along the part common boundary of villages Toera and Topa and meets at point 'E'.

E-F-G lines pass through village Toera and meets at point 'G'.

G-H line passes along the part common boundary of villages Toera and Topa and meets at point 'H'.

H-I line passes along the common boundary of village Karibanda and Topa and meets at point 'I'.

I-J line passes along the part common boundary of villages Kasikhap and Topa and meets at point 'J'.

J-K line passes through Bhera Nadi (River) in village Kasikhap then passes through village Kasikhap and Karibanda [which forms common boundary of sub-block-I of Mandu Block notified U/S 4(1) of the Coal Bearing Areas (Acquisition and Development) Act, 1957] and meets at point 'K'.

K-L line passes along the part common boundary of villages Karibanda and Semra and meets at point 'L'.

L-A line passes along the part common boundary of villages Padrangi and Semra and meets at starting point 'A'.

[No. 43015/23/85-CA]

नई दिल्ली, 25 अक्टूबर 1985

का. आ. 5159.—एतद्वारा यह अधिसूचित किया जाता है कि कोकर कोयला खान (गण्डीयकरण) अधिनियम, 1972 (1972 का 36) की धारा 20 की उपधारा (1) द्वारा प्रवत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए और भारत सरकार के ऊर्जा मंत्रालय (कोयला विभाग) की अधिसूचित सं. 11023/3/82 सी.ए., दिनांक 4 अक्टूबर, 1983 का अधिकरण करते हुए, केन्द्रीय सरकार ने श्री के. डी. शर्मा को उक्त अधिनियम के प्रयोगन के लिए भुगतान आयुक्त के पद पर 30 अगस्त, 1985 के पूर्वाह्न अर्थात् श्री पं. आर. भारद्वाज के पद भार छोड़ने की तारीख से नियुक्त किया है।

[फा: सं. 11024/3/84 गो.प.]  
टी.सी.ए. श्रीनिवासन, निवेशक

of Payments for the purpose of the said Act with effect from fore-noon of 30th August, 1985.

[F. No. 11024/3/84-CA]

T.C.A. SRINIVASAN, Director

नई दिल्ली, 24 अक्टूबर, 1985

का.आ. 5160.—केन्द्रीय सरकार को यह प्रतीत होता है कि इसमें उपर्युक्त अनुसूची में उल्लिखित भूमि में कोयला अभियान किए जाने की समावना है :

अन्. केन्द्रीय सरकार, कोयला धारक धेव (अंगैन और विकास) अधिनियम, 1957 (1957 का 20) की धारा 4 की उपधारा (1) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, उस धेव में कोयले का पूर्वेक्षण करने के अपने अग्रणी की सूचना देती है।

इस अधिसूचित के अधीन आने वाले धेव के रेखांक का निरीक्षण उपर्युक्त धनवाद्र (विहार) के कार्यालय या कोयला नियंत्रक, 1-काउन्सिल हाउस स्ट्रीट, कलकत्ता (पं. बंगाल) के कार्यालय या निवेशक (परियोजना), भारत कोकिं कॉम्प लिमिटेड, कोयला भवन डाकघर कोयला नगर, जिया धनवाद्र (विहार) में किया जा सकता है।

इस अधिसूचित के अधीन आने वाली भूमि में वित्तबंद सभी व्यक्ति उक्त अधिनियम की धारा 13 की उपधारा (7) में निर्दिष्ट सभी नक्शों, चाटी और अन्य दस्तावेजों को, इस अधिसूचित के गतिवय में प्रकाशन की तारीख से नव्वे दिन के भीतर, निवेशक (प्रचालन) भारत कोकिं कॉम्प लिमिटेड, धनवाद्र (विहार) को भेजेगा।

अनुसूची

धर्मवन्द विमान इनाक

सुर्योदाई धेव

पूर्वेक्षण के लिए अधिसूचित भूमि

क्रम. सं.	आम गं.	धारा गं.	जिला	धेव	टिप्पणी
1.	तारगा	305	तापचांडी धनवाद्र	694.65	सम्पूर्ण
2.	राधानगर	303	,,	473.60	सम्पूर्ण
3.	मुडियाडी	297	,,	53.48	सम्पूर्ण
4.	देवधर	302	,,	832.64	सम्पूर्ण
					कुल धेव 2054.37 एकड़ (नगरभग)
					या 821.7 एकड़ (नगरभग)

सीमा वर्णन :

क-ख

रेखा, मौजा तारगा की उत्तरी सीमा और मौजा गुरियाडी की उत्तरी-पश्चिमी सीमा के साथ-साथ जाती है और बिन्दु 'ख' पर मिलती है।

ख-ग

रेखा, मौजा सुर्योदाई की उमर पूर्वी सीमा के साथ-साथ जाती है और बिन्दु 'ग' पर मिलती है।

ग-घ

रेखा, मौजा देवधर की पूर्वी सीमा के साथ-साथ जाती है और बिन्दु 'घ' पर मिलती है।

घ-इ

रेखा, मौजा देवधर की वक्षिणी सीमा के साथ-साथ जाती है और बिन्दु 'इ' पर मिलती है।

इ-च

रेखा, मौजा राधानगर की पूर्वी सीमा के साथ-साथ जाती है और बिन्दु 'च' पर मिलती है।

च-छ

रेखा, मौजा राधानगर की वक्षिणी सीमा के साथ-साथ जाती है और बिन्दु 'छ' पर मिलती है।

छ-ज

रेखा, मौजा राधानगर की वक्षिणी सीमा के साथ-साथ जाती है और बिन्दु 'ज' पर मिलती है।

S.O. 5159.—It is hereby notified that, in exercise of the powers conferred by sub-section (1) of section 20 of the Coking Coal Mines (Nationalisation) Act, 1972 (36 of 1972), and, in supersession of the notification of the Government of India in the Ministry of Energy (Department of Coal) No. 11023/3/82-CA dated 4th October 1983, the Central Government has appointed Shri K. D. Sharma as the Commissioner

ज-स	रेखा; मौजा राधानगर की पश्चिमी सीमा के साथ-साथ जाती है और बिन्दु 'भ' पर मिलती है।
म-म	रेखा मौजा तारगा की दक्षिणी सीमा के साथ-साथ जाती है और बिन्दु '(३)' पर मिलती है।
ज-ट	रेखा, मौजा तारगा की पूर्वी सीमा के साथ-साथ जाती है और बिन्दु 'ट' पर मिलती है।
ट-ठ	रेखा मौजा तारगा की दक्षिणी सीमा के साथ-साथ जाती है और बिन्दु 'ठ' पर मिलती है।
ठ-ज	रेखा, मौजा तारगा की पश्चिमी सीमा के साथ-साथ जाती है और बिन्दु 'ड' पर मिलती है।
ज-ठ	रेखा, मौजा तारगा की दक्षिणी सीमा के साथ-साथ जाती है और बिन्दु 'ह' पर मिलती है।
क-ण	रेखा, मौजा तारगा की दक्षिणी सीमा के साथ-साथ जाती है और बिन्दु 'ण' पर मिलती है।
ण-त	रेखा, मौजा तारगा की दक्षिणी सीमा के साथ-साथ जाती है और बिन्दु 'त' पर मिलती है।
त-क	रेखा, मौजा तारगा की पश्चिमी सीमा के साथ-साथ जाती है और बिन्दु 'क' पर मिलती है।

]काल सं. 43015/11/85-सी.ए.]

New Delhi, the 24th October, 1985

S.O.5160.—Whereas it appears to the Central Government that coal is likely to be obtained from the lands mentioned in the Schedule hereto annexed,

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by sub-section (1) of section 4 of the Coal Bearing Areas (Aquisition and Development) Act, 1957 (20 of 1957), the Central Government hereby gives notice of its intention to prospect for coal therein.

The plan of the areas covered by this Notification may be inspected at the office of the Deputy Commissioner, Dhanbad (Bihar) or at the office of the Coal Controller, 1, Council House Street, Calcutta (West Bengal) or at the office of the Director (Projects) Bharat Coking Coal Limited, Koyla Bhavan, Post Office Koyla Nagar, District Dhanbad (Bihar).

All persons interested in the land covered by this notification shall deliver all maps, charts, and other documents referred to in sub-section (7) of section 13 of the said Act to the Director (Operations) West, Bharat Coking Coal Limited, Dhanbad (Bihar) within ninety days from the date of publication of the notification in the Gazette of India.

## SCHEDULE

### Dharmaband Extention Block

(Jharia Coal Field)

(Showing land notified for prospecting)

Sl./No.	Village	Thana Number	Thana	District	Area in acres	Remarks
1.	Targa	305	Topchanchi	Dhanbad—	694.65	Full
2.	Radhanagar	303	Topchanchi	Dhanbad	473.60	Full
3.	Suraiyadih	297	Topchanchi	Dhanbad	53.48	Full
4.	Deoghara	302	Topchanchi	Dhanbad	832.64	Full

— 2054.37 Acres (Approximately)  
or 821.7 hectares (approximately)

### Boundary description

A—B Line passes along the northern boundary of mouza Targa and north western boundary of mouza Suriyadih and meets at point "B".

B—C Line passes along the north eastern boundary of mouza Suriyadih and meets at point "C".

C—D Line passes along the northern boundary of mouza Deoghara and meets at point "D".

D—E Line passes along the eastern boundary of mouza Deoghara and meets at point "E".

E—F Line passes along the Southern boundary of mouza Deoghara and meets at point "F".

F—G Line passes along the eastern boundary of mouza Radhanagar and meets at point "G".

G—H Line passes along the southern boundary of mouza Radhanagar and meets at point "H".

H—I Line passes along the Western boundary of mouza Radhanagar and meets at point "I".

I—J Line passes along the southern boundary of mouja Targa and meets at point "J"  
 J—K Line passes along the eastern boundary of mouja Targa and meets at point "K"  
 K—L Line passes along the Southern boundary of mouja Targa and meets at point "L"  
 L—M Line passes along the western boundary of mouja Targa and meets at point "M"  
 M—N Line passes along with Southern boundary of mouja Targa and meets at point "N"  
 N—O Line passes along the southern boundary of mouja Targa and meets at point "O"  
 O—P Line passes along the southern boundary of mouja Targa and meets at point "P"  
 P—A Line passes along the western boundary of mouja Targa and meets at point "A"

[F. No. 43015/11/85-CA]

का. आ. 5161.—केन्द्रीय सरकार ने, कोयला धारक क्षेत्र (अर्जन और विधाय) अधिनियम, 1957 (1957 का 20) की धारा 4 की उप-धारा (1) के अधीन भारत सरकार के भूत्यूवं ऊर्जा मंत्रालय, कोयला विभाग, की अधिसूचना का आ.सं. 4043, तारीख 12 नवम्बर, 1984 द्वारा, जो भारत के राजपत्र, भाग 2, खंड 3, उप खंड (ii) तारीख 1 दिसम्बर, 1984 में प्रकाशित की गई थी, उस अधिसूचना में उपलब्ध कन्तुसूची में विनियिष्ट परिस्तेत्र में 426.73 हैक्टर (लगभग) या 1054.45 एकड़ (लगभग) माप की भूमि में कोयले का पूर्वोक्त करने के अपने आण्य की सूचना दी थी;

और केन्द्रीय गरकार का यह समाधान हो गया है कि उक्त भूमि के किसी भाग में कोयला अभिप्राप्त है;

अतः, केन्द्रीय गरकार, उक्त अधिनियम की धारा 7 की उपधारा (1) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, इसमें संलग्न कन्तुसूची में वर्णित 397.73 हैक्टर (लगभग) या 982.82 एकड़ (लगभग) माप की भूमि में, खनिजों के खनन, खदाई, बेधन, खोदने और खोजने तथा उक्त प्राप्त करने, निकालों और ले जाने के विकार के अर्जन करने के अपने आण्य की सूचना देती है;

टिप्पण 1: इस अधिसूचना के अंतर्भूत आने वाले क्षेत्र के रेखांक सं. गो.सी./एम/एल./306, तारीख 11 करवरी, 1985 का निरीक्षण कलकटर, सम्बलपुर (उड़ीसा) के कार्यालय में या कोयला नियंत्रक, 1, काउनिल हाउस स्ट्रीट, कलकत्ता के कार्यालय में अथवा वैस्टर्न कोलकाता लि. (राजस्व अनुभाग) कोयला एस्टेट, सिक्किल साईंस, नागपुर-440001 (महाराष्ट्र) के कार्यालय में किया जा सकता है;

टिप्पण 2: पूर्वक अधिनियम की धारा 8 के उपलब्धों की ओर ध्यान आकृष्ट किया जाता है जिसमें निम्नसिद्धित उपलब्ध है:—

अर्जन के प्रति आवेदन:

"8(1) किसी ऐसी भूमि में, जिसकी भावत धारा 7 के अधीन अधिसूचना आरों की गई है, हितबद्ध कोई भी व्यक्ति अधिसूचना जारी किए जाने के तीस दिन के भीतर संपूर्ण भूमि या उसके किसी भाग या ऐसी भूमि में या उस पर के किन्हीं अधिकारों का अर्जन किए जाने के बारे में आधेप कर सकेगा।

स्पष्टीकरण: इस धारा के अर्थात् यह किसी व्यक्ति की ओर ने नहीं कहना आधेप नहीं माना जाएगा कि वह स्वयं उस भूमि

में कोयला, उत्पादन के लिए खनन संक्रियाएं करना चाहता है और ऐसी संक्रियाएं केन्द्रीय सरकार या किसी अन्य व्यक्ति द्वारा नहीं की जानी चाहिए।

(2) उपधारा (1) के उपर्युक्त रूप से दिया जाएगा और सक्षम प्राधिकारी आक्षेपकारों को स्वयं सुने जाने का मा विध अवधारणा द्वारा मुनवाई का अवगत देगा और ऐसे सभी अधिकारों को सूनते के पश्चात और ऐसे अनिवार्यत जारी, यदि कोई है, करने के पश्चात जो वह आवलमक समझे, या तो धारा 7 को उपधारा (1) के अधीन अधिसूचित भूमि के या ऐसा भूमि में या उस पर के अधिकारों के संबंध में एक रिपोर्ट या ऐसा भूमि के विभिन्न टुकड़ों या ऐसा भूमि में या उस पर के अधिकारों के संबंध में आकर्षी पर आतो सिफरियों और उसके हारा की गई कार्रवाई के अभिनेत्र सहित विभिन्न रिपोर्ट के क्रमेण सरकार को उसके विनियोग के लिए देगा।

(3) इस धारा के प्रयोजनों के लिए वह अधिकत किसी भूमि से हितबद्ध समझा जाएगा जो प्रतिकर में हित का दावा करने का हकदार होता यदि भूमि या ऐसी भूमि में या उस पर के किन्हीं अधिकारों को इस अधिनियम के अधीन अधिन दर लिया जाता है।

टिप्पण 3: केन्द्रीय गरकार ने, कोयला नियंत्रक, 1, काउनिल हाउस स्ट्रीट, कलकत्ता को उक्त अधिनियम के अर्थन सक्षम प्राधिकारी नियुक्त किया है।

अनुसूचि:

ओरिएंट खान सं. 4 का उत्तरी परिवर्ती ब्लॉक आई बी बाट थक्क जिना गम्बलपुर (उड़ीसा)

उक्त अधिकार:

क्रम नं. ग्राम का नाम	तत्कालीन जिला	जिला	भूक्ति एकड़ में	टिप्पणिया
1. जुनाने-मुण्डा	आरसुगुडा	सम्बलपुर	109.87	भाग
2. अमादरहा	आरसुगुडा	सम्बलपुर	466.66	भाग
3. बद्रानका	आरसुगुडा	सम्बलपुर	37.66	भाग
4. जमेदारी बत	आरसुगुडा	सम्बलपुर	368.83	भाग

कुल वीण : 982.82 एकड़ (लगभग)

या

397.73 हैक्टर (लगभग)

जुनाने मुण्डा ग्राम में अधिनियम किए जाने वाले प्लाट सं.:

1 से 8, 9 (भाग), 10 से 17, 18 (भाग), 10 (भाग), 106, 107, 108 (भाग), 109 से 113, 115 से 119, 145, 151, 154, 157 (भाग), 162 (भाग), और 174:

आगरगांव ग्राम में अधिनियम किए जाने वाले प्लाट सं.:

1 से 97, 98 (भाग), 99 से 252, 352 (भाग), 254 से 279, 280 (भाग), 281 से 286, 387 (भाग), 289 से 303, 303 (भाग), 304 (भाग), 305 (भाग), 306, 308 (भाग), 320, (भाग), 321 (भाग), 322 से 331, 335 (भाग), 336 (भाग), 337 (भाग), 338 (भाग), 343 (भाग), 344 (भाग), 351 (भाग) 352, 353, 354 (भाग), 355 से 360, 361 (भाग), 362, 363, 373 (भाग), 374 (भाग), 384 (भाग), 233/399, 52/400, 88/401, 60/403, 244/404, 282/405, 289/406, 260/407, 92/408,

244/409, 270/410, 188/411, 186/412, 177/413, 128/414  
 238/415, 236/416, 238/417, 238/418, 240/419, 199/420  
 265/421, 363/424 (भाग), 129/425, 126/426  
 14/427, 195/428, 23/429, 82/430, 23/431, 103/432,  
 24/433, 201/434, 48/435, 56/436, 70/437, 98/438  
 (भाग), 98/439, 70/440, 70/441, 76/442, 76/443, 130/444,  
 130/445, 76/446, 300/447, 355/448, 191/449,  
 191/450, 43/451, 220/452 और 56/454.

ब्रह्माचका ग्राम में अंजित किए जाने वाले प्लाट सं. :

546 (भाग)

जमीदारी वन :

बृक्ष-कटाई शृंखला (फेनिंग सीरीज) 22 से 25, 26 (भाग),  
 27 (भाग) 28 (भाग), 29 (भाग), और 31 से 35 :

सीमा वर्णन :

क-ख रेखा, जूगनीमुण्डा ग्राम के प्लाट सं. : 108, 162,  
 9, 157, 18 और 34 से, और ब्रह्माचका ग्राम  
 के प्लाट सं. 546 भे होकर जाती है और फिर फिर  
 जमीदारी वन पर्वत शृंखला संख्यांक 29 में से होकर  
 जाती है और उसी शृंखला के बिन्दु 'ख' पर  
 मिलती है।

ख-ग रेखा, जमीदारी वन पर्वत शृंखला संख्यांक 29, 28, 17  
 और 26 से होकर जाती है और पर्वत शृंखला  
 संख्यांक 26 की उत्तरी सीमा पर, बिन्दु 'ग' पर  
 मिलती है।

ग-घ रेखा, छलकुथी ग्राम और जमीदारी वन की सम्मिलित  
 सीमा के साथ-साथ जाती है और छलकुथी,  
 वादजोन और जमीदारी वन ग्रामों के त्रिकोणात्मक  
 मिलन स्तम्भ पर, बिन्दु 'घ' पर मिलती है।

घ-ङ रेखा, वादजोन ग्राम और जमीदारी वन की सम्मिलित  
 सीमा के साथ-साथ जाती है और उसी सीमा पर,  
 बिन्दु 'ङ' पर मिलती है।

ङ-च रेखा, पर्वत शृंखला संख्यांक 35 और 36 की सम्मि-  
 लित सीमा के साथ-साथ जमीदारी वन से होकर  
 और पर्वत शृंखला संख्यांक 35 और 34 की  
 दक्षिणी सीमा के साथ-साथ फिर पर्वत शृंखला  
 संख्यांक 21 और 22 की सम्मिलित सीमा के  
 साथ-साथ जाती है और अमादरहा ग्राम की  
 उत्तरी सीमा पर, बिन्दु 'च' पर मिलती है।

च-छ रेखा, अमादरहा ग्राम और जमीदारी वन की सम्मिलित  
 सीमा के साथ-साथ जाती है और अमादरहा  
 छुआलिदरना और जमीदारी वन ग्रामों के  
 त्रिकोणात्मक मिलन स्तम्भ पर, बिन्दु 'छ' पर  
 मिलती है।

छ-ज रेखा, अमादरहा ग्राम के प्लाट सं. : 374, 384,  
 373, 361, 424 और 354 से होकर जाती है  
 और बिन्दु 'ज' पर मिलती है।

ज-झ रेखा, अमादरहा ग्राम के प्लाट सं. 351, 253,  
 280, 303, 305, 304, 303, 287, 320,  
 321, 335, 336, 337, 338, 98, 438,  
 343 और 344 से होकर जाती है और अमादरहा  
 और गंडधोर ग्रामों की सीमा के साथ-साथ

आगे जाती है और अमादरहा, जूगनीमुण्डा और  
 गंडधोर (बज्राजनपर शहर मूनिं सं. 3)  
 ग्राम के त्रिकोणात्मक मिलन स्तम्भ पर, बिन्दु  
 'झ' पर मिलती है।

झ-क रेखा, जूगनीमुण्डा ग्राम की दक्षिणी सीमा के साथ-  
 साथ, फिर 'लाट सं. 108 से जाती है और  
 भारतीय बिन्दु 'क' पर मिलती है।

[स. 43015/1/85-सी.ए.]

S.O. 5161.—Whereas by the notification of the Government of India in the late Ministry of Energy (Department of Coal), S.O. No. 4045 dated 20 November, 1984 under sub-section (1) of section 4 of the Coal Bearing Areas (Acquisition and Development) Act, 1957 (20 of 1957) and published in the Gazette of India in Part II, Section 3, sub-section (ii) dated the 1st December, 1984, the Central Government gave notice of its intention to prospect for coal the inlands measuring 426.73 hectares (approximately) or 1054.46 acres (approximately) in the locality specified in the Schedule annexed to that notification;

And whereas the Central Government is satisfied that coal is obtainable in a part of the said lands;

Now therefore, in exercise of the powers conferred by sub-section (1) of section 7 of the said Act, the Central Government hereby gives notice of its intention to acquire the rights to mine, quarry, bore, dig and search for, win, work and carry away minerals in the lands measuring 397.73 hectares (approximately) or 982.82 acres (approximately) described in the Schedule appended hereto.

Note—1 : The plan bearing No. OC[ML]306 dated the 11th February, 1985 of the area covered by this notification may be inspected in the Office of the Collector, Sambalpur (Orissa) or in the Office of the Coal Controller, 1, Council House Street, Calcutta or in the Office of the Western Coalfields Limited (Revenue Section), Coal Estate, Civil Lines, Nagpur-440001 (Maharashtra).

Note-2 : Attention is hereby invited to the provisions of Section 8 of the aforesaid Act, which provides as follows :

#### OBJECTIONS TO ACQUISITION :

“(8) (1) Any person interested in any land in respect of which a notification under section 7 has been issued may within thirty days of the issue of the notification, object to the acquisition of the whole or any part of the land or of any rights in or over such land.

#### EXPLANATION :

It shall not be an objection within the meaning of this section for any person to say that he himself desires to undertake mining operations in the land for the production of coal and that such operations should not be undertaken by the Central Government or by any other person.

(2) Every objection under sub-section (1) shall be made to the Competent Authority in writing and the Competent Authority shall give the objector an opportunity of being heard either in person or by a legal practitioner and shall, after hearing all such objections and after making such further enquiry, if any, as he thinks necessary, either makes a report in respect of the land which has been notified under sub-section (1) of Section 7 or of rights in or over such land, or make different reports in respect of different parcels of such land or of rights in or over such land, to the Central Government, containing his recommendations on the objections, together with the record of the proceedings held by him for the decision of that Government.

(3) For the purpose of this section, a person shall be deemed to be interested in land who would be entitled to claim an interest in compensation if the land or any rights in or over such land were acquired under this Act."

Note—3 : The Coal Controller, 1, Council House Street, Calcutta has been appointed by the Central Government as the Competent Authority under the Act."

### SCHEDULE

#### NORTH WEST BLOCK OF ORIENT MINE NO. 4

IB Valley Area

District Sambalpur (Orissa)

#### MINING RIGHTS

Serial Number	Name of village	Tahsil	District	Area in acres	Remarks
1.	Junanimunda	Jharsuguda	Sambalpur	109.87	Part
2.	Amadarha	Jharsuguda	Sambalpur	466.66	Part
3.	Baghrachaka	Jharsuguda	Sambalpur	37.66	Part
4.	Zamindar Forest	Jharsuguda	Sambalpur	368.63	Part

Grand Total :

982.82 acres (approximately)  
or 377.73 hectares (approximately)

Plot numbers to aquired in village Junanimunda :

1 to 8, 9 (Part), 10 to 17, 18 (Part), 30 (Part), 106, 107, 108 (Part), 109 to 113, 115 to 119, 145, 151, 157 (Part), 162 (Part) and 174.

Plot numbers to be aquired in village Amadarha :

1 to 97, 98 (Part), 99 to 252, 253 (Part), 254 to 279, 280 (Part), 281 to 286, 287 (Part), 289 to 302, 303 (Part), 304 (Part), 305 (Part), 306, 308 (Part), 320 (Part), 321 (Part), 322 to 334, 335 (Part), 336 (Part), 337 (Part), 338 (Part), 343 (Part), 344 (Part), 351 (Part), 352, 353, 354 (Part), 355 to 360, 361 (Part), 362, 363, 373 (Part), 374 (Part), 384 (Part), 233/399, 52/400, 88/401, 60/403, 244/404, 282/405, 289/406, 269/407, 92/408, 244/409, 270/410, 188/411, 186/412, 177/413, 128/414, 238/415, 236/416, 238/417, 238/418, 240/419, 199/420, 265/421, 363/424, (Part), 129/425, 126/426, 24/427, 195/428, 23/429, 82/430, 23/431, 105/432, 24/433, 201/434, 48/435, 56/436, 70/437, 98/438 (Part), 98/439, 70/440, 70/441, 76/442, 76/443, 130/444, 130/445, 76/446, 300/447, 355/448, 191/449, 191/450, 43/451, 220/452, and 56/454.

Plot numbers to be acquired in village Baghrachaka :

546 (Part).

Zamindari Forest :

Felling series number 22 to 25, 26 (Part), 27 (Part), 28 (part), 29 (Part) and 31 to 35.

Boundary description :

A—B— Line passes through village Jananimunda in plot numbers 108, 162, 9, 157, 18 & 30 and

through village Baghrachaka in plot number 546, then proceeds through Zamindari forest in felling series number 29 and meets in the same series at point "B"

B—C Line passes through Zamindari forest in felling series number 29, 28, 27 and 26, and meets on the northern boundary of felling series number 26 at point 'C'

C—D Line passes along the common boundary of village Chhelkuthi and Zamindari forest and meets at Tri-junction Pillar of villages Chhelkuthi Bad Job and Zamindari forest at point 'D'

D—E Line passes along the common boundary of village Bad Job and Zamindari forest and meets on the same boundary at point 'E'

E—F Line passes through Zamindar forest along the common boundary of felling series number 35 & 36 and proceeds along southern boundary of felling series number 35 & 34, then along the common boundary of felling series number 21 & 22, and meets on northern boundary of village Amadarha at point 'F'

F—G Line passes along the common boundary of village Amadarha and Zamindari forest and meets at tri-junction pillar of villages Amadarha, Chhiliberna and Zamindari forest at point 'G'

**G—H** Line passes through village Amadarha in plot numbers 374, 384, 373, 361, 424 and 354 and meets at point 'H.'

**H—I** Line passes through village Amadarha in plot numbers 351, 253, 280, 308, 305, 304, 303, 287, 320, 321, 335, 336, 337, 338, 98, 438, 343 and 344, then proceeds along village boundary of villages Amadarha and Gandghora and meets on the tri-junction pillar of villages Amadarha, Junanimunda and Gandghora (Brajra nagar town unit No. 3) at point 'I.'

**I—A** Line passes along the southern boundary of village Junanimunda, then proceeds in plot numbers 108 and meets at the starting point 'A.'

[No. 43015/14/85-CA]

नहीं दिल्ली, 25 अक्टूबर, 1985

का.आ. 5162:—केन्द्रीय सरकार ने, भारत सरकार के उर्जा मंत्रालय कोयला विभाग की अधिसूचना सं. 816 तारीख 2 मार्च, 1984 द्वारा जो भारत के राजपत्र, भाग 2, बंड 3 उपलेख (i) तारीख 17 मार्च, 1984 में प्रकाशित की गई थी, उस अधिसूचना से संलग्न भनुपूर्ची में वित्तिविष्ट परिवेश में माप में 349.00 एकड़ (लगभग) या 141.23 हैक्टर (लगभग) भूमि का अर्जन करने के अपने आशय की सूचना कोयला धारक थेल (अर्जन और विकास) अधिनियम, 1957 (1957 का 20) की धारा 7 की उपधारा (i) के अधीन दी थी;

और सक्रम प्राधिकारी ने, उक्त अधिनियम की धारा 8 के अनुसरण में, केन्द्रीय सरकार को अपनी रिपोर्ट दे दी है;

और केन्द्रीय सरकार का पूर्वोक्त रिपोर्ट पर विचार करने के पश्चात तथा बिहार सरकार से परामर्श करने के पश्चात यह समाधान हो गया है कि इससे संलग्न भनुपूर्ची में वर्जित माप में 349.00 एकड़ (लगभग) या 141.23 हैक्टर (लगभग) भूमि का अर्जन कर लिया जाना चाहिए;

अतः, केन्द्रीय गरकार, उक्त अधिनियम की धारा 9 की उपधारा (i) द्वारा प्रदत्त विविधों का प्रयोग करते हुए, घोषणा करती है कि सक्त अनुसूची में वर्णित, माप में 349.00 एकड़ (लगभग) या 141.23 हैक्टर (लगभग), भूमि का अर्जन किया जाना चाहिए।

2. इस अधिसूचना के अन्तर्गत आने वाले थेल के रेखांकित की निरीक्षण उपायकल गिरिशीह (बिहार) के कार्यालय में या कोयला नियंत्रक, 1. कार्डिगिल हाउस स्ट्रीट, कलकत्ता के कार्यालय में या सेन्ट्रल कोलकाता (i), (याजस्व अनुसार), दरभंगा राजस्थान, शरी (बिहार) के कार्यालय में किया जा सकता है।

प्रन्तसूची

गुजराठीह ब्लाक विस्तार

(पूर्वी बोकारी कोयला क्षेत्र)

बिहार

रेखांकित सं. राजस्व/105/84

तारीख 11-7-1985

(जिसमें अर्जित भूमि दिखाई नहीं है)

मधी अधिकार

क्र.सं.	थाना	याना सं.	जिला	क्षेत्र	टिप्पणियां
1.	माकोली	69 गिरिशीह		52.25	भाग
	नवाईही				
	(बोरमो)				
2.	गुजराठीह	72 गिरिशीह		230.25	भाग
	नवाईही				
	(बेरमो)				
3.	चपरी नवाईही	73 गिरिशीह		66.500	भाग
	(बेरमो)				
	कुल श्रेष्ठ या	349.00 एकड़ (लगभग)			
		141.23 हैक्टर (लगभग)			

ग्राम माकोली में अर्जित प्लाट संख्यांक 1 (भाग) ग्राम गुंजरडीह में अर्जित प्लाट संख्यांक 212 (भाग) ग्राम चपरी में अर्जित प्लाट संख्यांक 1440 (भाग)

सीमा वर्णन

फ-ख— रेखा ग्राम चपरी में प्लाट सं. 763, 764, 767 और 766 से होकर जाती है और बिन्दु "ख" पर मिलती है।

ख-ग— रेखाएँ ग्राम चपरी में प्लाट सं. 1440 में से माकोली ग्राम प्लाट सं.

घ-ड— और गुंजरडीह ग्राम में प्लाट सं. 212 से होकर जाती है (जो उक्त अधिनियम की धारा 9 (1) के अधीन अर्जित गुंजरडीह ब्लाक की सम्मिलित सीमा है) और बिन्दु "च" पर मिलती है।

च-छ-ज—रेखाएँ ग्राम गुंजरडीह में प्लाट सं. 212 से होकर जाती है और बिन्दु "ज" पर मिलती है।

ज-झ—रेखा ग्राम गुंजरडीह के प्लाट सं. 160, 155 की पूर्वी सीमा, प्लाट सं. 158 की पूर्वी और दक्षिणी सीमा प्लाट सं. 157 की दक्षिणी सीमा, प्लाट सं. 155 की पूर्वी सीमा प्लाट सं. 154 की पूर्वी और दक्षिणी सीमा प्लाट सं. 153 और 152 की दक्षिणी प्लाट सं. 155 की दक्षिणी सीमा प्लाट सं. 91, 78 की पूर्वी सीमा प्लाट सं. 77 की पूर्वी और दक्षिणी सीमा प्लाट सं. 76 की उत्तरी सीमा पूर्वी और दक्षिणी सीमा प्लाट सं. 80 की भागतः पूर्वी और दक्षिणी सीमा, प्लाट सं. 71, 72, 73 की पूर्वी सीमा, प्लाट सं. 74 की पूर्वी सीमा और भागतः दक्षिणी सीमा प्लाट सं. 212 में से और प्लाट सं. 75 की भागतः पूर्वी सीमा से होकर जाती है और बिन्दु "झ" पर मिलती है।

झ-ज-ट— रेखाएँ ग्राम गुंजरडीह और माकोली, चपरी और माकोली की भागतः सम्मिलित भीमा के गोष्ठ-माप गांवी हैं और बिन्दु "इ" पर मिलती है।

इ-इ-रेखा तिसरी नदी के भागत दोयें किनारे के साथ-साथ जाती है और बिन्दु "इ" पर मिलती है।

इ-क-रेखा ग्राम चपरी के प्लाट से, 1440 से होकर जाती है और आरंभिक बिन्दु "क" पर मिलती है।

[मं. 43019/19/84—सी. प.]  
ममय सिंह, अवर मंचिव

New Delhi, the 25th October, 1985

S. O. 5162.—Whereas by the notification of the Government of India in the Ministry of Energy (Department of Coal) No. S.O. 846 dated the 2nd March, 1984, published in the Gazette of India part II, section 3, sub-section (ii), dated the 17th March, 1984, under sub-section (1) of section 7 of the Coal Bearing Areas (Acquisition and Development) Act, 1957 (20 of 1957), the Central Government gave notice of its intension to acquire the lands measuring 349.00 acres (approximately) or 141.23 hectares (approximately) in the locality specified in the Schedule appended to that notification.

And whereas the Competent Authority, in pursuance of section 8 of the said Act, has made his report to the Central Government;

And whereas the Central Government, after considering the report aforesaid and after consulting the Government of Bihar, is satisfied that the lands measuring 349.00 acres (approximately) or 141.23 hectares (approximately) described in the Schedule appended hereto;

should be acquired.

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by sub-section (1) of section 9 of the said Act, the Central Government hereby declares that the lands measuring 349.00 acres (approximately) or 141.23 hectares (approximately) described in the said schedule.

are hereby acquired.

2. The plans of the area covered by this notification may be inspected in the Office of the Deputy Commissioner, Giridih (Bihar) or in the Office of the Coal Controller, 1, Council House Street, Calcutta or in the Office of the Central Coalfields Limited (Revenue Section) Darbhanga House, Ranchi (Bihar).

SCHEDULE  
Gunjardih Block Extn.  
East Bokaro Coalfield  
Bihar

Drg. No. Rev/105/84  
Date 11-7-84  
(Showing lands acquired)

All Rights

Serial	Village number	Thana	Thana number	District	Area	Remarks
1.	Makoli	Nawadih (Bermo)	69	Giridih	52.25	Part
2.	Gunjardih	-do-	72	Giridih	230.25	Part
3.	Chapri	-do-	73	Giridih	66.50	Part

Total area:— 347.00 acres (approximately)  
or 141.23 hectares (approximately)

Plot number acquired in village Makoli : 1 (Part).

Plot number acquired in village Gunjardih : 212 (part).

Plot number acquired in village Chapri : 1440 (part).

Boundary Description:—

A-B line passes along eastern boundary of plot numbers 763, 764, 767 and 766 in village Chapri and meets at point 'B'.

B-C-D-E-F lines pass through plot number 1440 in village Chapri, through plot number 1 in village Makoli then through plot number 212 in village Gunjardih (which forms common boundary of Gunjardih) Block acquired u/s 9(1) of the said Act and meet at point 'F'.

F-G-H lines pass through plot number 212 in village Gunjardih and meet at point 'H'.

H-I line passes along eastern boundary of plot numbers 160, 155, eastern and southern boundary of plot number 158, Southern boundary of plot number 157 eastern boundary of plot number 155, eastern and southern boundary of plot number 154, southern boundary of plot numbers 153 and 152 southern boundary of plot number 155, eastern boundary of plot numbers 91, eastern and southern boundary of plot numbers 77, 76 Northern boundary Eastern & Southern boundary of 76, part eastern and southern boundary of plot number 80, eastern boundary of plot

numbers 71, 72, 73 eastern boundary and part southern boundary of plot number 74, through plot number 212 and part eastern boundary of plot number 75 in village Gunjardih and meets at point 'T'.

I-J-K-L-M lines pass along the part common boundary of villages Ganjardih and Makoli, Chapri and Makoli and meet at point 'M'.

M-N line passes along the part right bank of Tisti Nadi in village Chapri and meets at point 'N'.

N-A line passes through plot number 1440 in village Chapri and meets at starting point 'A'.

[No. 43019/19/84-CA]  
SAMAY SINGH, Under Secy.

कृषि और ग्रामीण विकास मंत्रालय

(कृषि और महकार्गना विभाग)

नई दिल्ली, 17 अक्टूबर, 1985

का.आ. 5163.—केन्द्रीय मरकार, पश्च कूरता निवारण अधिनियम, 1960 (1960 का 59) की धारा 5 की उप-धारा (1) के खंड

(एच) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करने हुए, एकदलार श्री न्यायामूर्ति वी. आर. कृष्ण अग्रवाल की स्वार्थीय श्री न्यायामूर्ति वी. नाम प्रमाद गाव के स्थान पर नक्काल में आगामी अंतिमों तक भारतीय पशु कल्याण बोर्ड के गद्दय के रूप में नामजद करनी है। केन्द्रीय मरकार उपर अधिनियम की धारा 5 की उप-धारा (3) के तहत श्री न्यायामूर्ति वी. आर. कृष्ण अग्रवाल की नक्काल से आगामी अंतिमों तक बोर्ड के उपायकरण के रूप में भी नामजद करनी है।

[म. 14-6/85-एल. डी. I]  
के. जी. कृष्णमूर्ति, उप मन्त्रिव

MINISTRY OF AGRICULTURE AND RURAL DEVELOPMENT

(Department of Agriculture and Cooperation)

New Delhi, the 17th October, 1985

S.O. 5163.—In exercise of the powers conferred by clause (h) of sub-section (1) of section 5 of the Prevention of Cruelty to Animals Act, 1960 (59 of 1960), the Central Government hereby nominates Shri Justice V. R. Krishna Iyer as Member of the Animal Welfare Board of India with immediate effect and until further orders in place of Late Shri Justice T. Rama Prasad Rao. The Central Government also nominates Shri Justice V. R. Krishna Iyer to be the Vice-Chairman of the Board with immediate effect and until further orders by virtue of sub-section (3) of section 5 of the said Act.

[No. 14-6/85-LD. I]  
K. G. KRISHNAMOORTHY, Dy. Secy.

स्थायी और नागरोंके पूर्वी संशोधन

(गणराज्य पूर्वी विभाग)

भारतीय मानक संस्था

नई दिल्ली, 25 मिस्रावर, 1985

का.आ. 5164.—भारतीय मानक संस्था (प्रमाणन चिन्ह) विनियमावली, 1955 के विनियम 4 के अनुसार भारतीय मानक संस्था द्वारा अधिमूलित किया जाता है कि उबल विनियमावली के विनियम 3 के उपविनियम (1) द्वारा प्रदत्त अविकारणों के अधीन, यहाँ अमूल्यों में दिये गये भारतीय मानकों के संशोधन जारी किये गये हैं।

अनुसन्धान

प्रमाणित मानक की पदसंकला और ग्राहकों की संस्थान की संशोधन का संविधित विवरण	संशोधन सार्वजनिक होने की तिथि
मानक के तौयार होने की संदर्भ और नियम सूचना इसी संदर्भ संदर्भ और नियम	

1	2	3	4	5	6
1. IS : 158-1981 सिलें-सिलाये तैयार फैट-	—	संख्या 1	खंड 4-2. 1 संशोधित किया गया है।	1982-07-31	
पूरा योग्य, बिट्टनी काले, सीसा रहित, एस्ट्रिड, एकली और तपरोधी की विशिष्ट (सूर्तीय पुनरीक्षण)		जुलाई 1982			
3. IS : 443-1975 खड़क के होउंगों के नमूने लेने प्रमाणों 3530 और जौस करने की विधियाँ (विशेष पुनरीक्षण)	दिनांक 1977-10-19	संख्या 2	(1) खंड 0.3 के बाद खंड 0.4 जोड़ा गया है और खंड 0.4 की संख्या बदल कर 0.5 की गयी है। (2) खंड 15.2.5 के बाद परिवर्णित जोड़ा गया है।	1982-12-31	
3. IS : 745-1974 हैंडलम की सूर्तीय धोतियाँ प्रमाणों 776 [वी.विशेषित] (प्रथम पुनरीक्षण)	दिनांक 1976-02-21	संख्या 3	(1) सारणी 1 और खंड 6.1 संयोजित किये गये हैं। (2) सारणी 2 के स्थान पर तरीं सारणी रखी गयी है। (3) पृष्ठ 6 पर ("X" चिन्हित पादटिप्पणियों के स्थान पर तरीं पादटिप्पणी रखी गयी है।	1981-2-31	

1	2	3	4	5	6
4. IS : 904-1975 भूमिगत धमकाल तथा स्लूम बाल्व टाइप, को विशिष्ट (द्वितीय पुनरीक्षण)	एस-ओ० 3530 दिनांक 1977 11 19	संख्या 5 दिसंबर 1982	(1) खंड 3.1 के स्थान पर नया खंड रखा गया है। (2) खंड 3.2, 3.3, 3.5.1 (सी) 4.1 और 8.1 संशोधित किये गये हैं। (3) पृष्ठ 4 पर “*”, “+—” और “†” चिन्हित, पृष्ठ 5 पर “//” और “**” चिन्हित तथा पृष्ठ 8 पर “*” चिन्हित पादटिप्पणियों के स्थान पर नयी पादटिप्पणियाँ रखी गयी हैं।	1981 02 31	
5. IS : 1141-1973 इमारतों लकड़ी सुधाने के लिए रेति भैंहिता (प्रथम पुनरीक्षण)	एस-ओ० 2030 दिनांक 1975 09 06	संख्या 1 नवंबर 1982	(1) खंड 0.3 के स्थान पर नया रखा गया है। (2) खंड 7.4.11.1 के बाद खंड 7.4.12 जोड़ा गया है।	1982 11 30	
6. IS : 1451-1979 हैल्डम की सूती ट्रिलों की विशिष्टि (प्रथम पुनरीक्षण)	ए । दिनांक ।	संख्या 1 नवंबर 1982	(1) खंड 6.1 और सारणी 1 संशोधित किये गये हैं। (2) पृष्ठ 5 पर “*” चिन्हित पादटिप्पणी के स्थान पर नयी पादटिप्पणी रखी गयी है। (3) सारणी 2 के स्थान पर नयी सारणी रखी गयी है।	1982 11 30	
7. IS : 1507-1977 ताप्माक्सिस-क्लोराइड जलविर्जनीय पाउडर सौंदर्य की विशिष्टि (f सीयु पुनरीक्षण)	एस-ओ० 613 दिनांक 1980 03 15	संख्या 1 नवंबर 1982	(1) सारणी 1 और खंड 2.3.1 के स्थान पर नयी सारणी और खंड रखे गये हैं। (2) खंड 3.1 संशोधित किया गया है। (3) पृष्ठ 5 पर “+” चिन्हित पादटिप्पणी के स्थान पर नयी पादटिप्पणी रखी गयी है। (4) पृष्ठ 6 पर खंड 5.2 के बाद परिशिष्ट ए जागा रखा है।	1982 11 30	
8. IS : 1579-1979 हैल्डम के सूती ट्रिलों की विशिष्टि (प्रथम पुनरीक्षण)	एस-ओ० 3449 दिनांक 1982 10 02	संख्या 1 अक्टूबर 1982	(1) खंड 6.1, सारणी 1 और सारणी 2 संशोधित किये गये हैं। (2) पृष्ठ 5 पर “†” चिन्हित पादटिप्पणी के स्थान पर नयी पादटिप्पणी रखी गयी है।	1983 10 31	
9. IS : 1989 (भाग 1)-1978 अमड़े के सुरक्षा बूटों और जूतों की विशिष्टि भाग 1 खनिकों के लिये (द्वितीय पुनरीक्षण)	एस-ओ० 2322 दिनांक 1982 07 03	*संख्या 1 अक्टूबर 1982	(1) खंड 8.2, 8.7, 9.1, 16, 14.2, 14.7 और 14.16 के स्थान पर नये खंड रखे गये हैं। (2) खंड 8.5, 9.11, 15.5, 15.10 और 15.11 संशोधित किये गये हैं। (3) पृष्ठ 5 पर “‡” चिन्हित, पृष्ठ 6 पर “†” चिन्हित, पृष्ठ 13 पर “+” चिन्हित और पृष्ठ 14 पर “†” चिन्हित पादटिप्पणियों के स्थान पर नयी पादटिप्पणियाँ रखी गयी हैं। (4) पृष्ठ 4 पर खंड 3.2 के बाद खंड 3.3 जोड़ा गया है। (5) खंड 8.9.2, 8.13, 9.13, 10.4, 11.1, 14.9.2, 14.13, 15.12 और 17.1 में नयी सामग्री जोड़ी गयी है।	1982 11 30	
10. IS : 2141-1979 जस्तीकृत तान लड़ की विशिष्टि (द्वितीय पुनरीक्षण)	—	संख्या 2 सितंबर 1982	सारणी 1 और खंड 7.2.2 संशोधित किये गये हैं।	1982 09 30	

\*भारतीय मानक संस्था प्रभागन चिन्ह योजना के अनुसार के लिये, यह संशोधन 1983 03 16 से लागू होगा।

1	2	3	4	5	6
11. IS : 2181-1973 वर्षे कोर्टों के लिये सिनाई की मशीनों की सुइयों की विशिष्टि (प्रथम पुनरीक्षण)	एस०ओ० 3069 विनांक 1973 09 30	संख्या 1 नवंबर 1982	(1) छंड 0.3, 5.1 और 7.2 के स्थान पर मैंये छंड रखे गये हैं (2) छंड 8.1 और परिशिष्ट ए संशोधित किये गये हैं (3) छंड 5.1 के बाद छंड 5.2 जोड़ा गया है (4) सारणी 1 के बाद सारणी 2 जोड़ी गयी है तथा उसके बाद की सारणी 2 को सारणी 3 कर दिया गया है	(i) 1982 11 30	
12. IS : 2219-1962 मशीनी भौजारों के फोड़ की विशिष्टि (प्रथम पुनरीक्षण)	एस०ओ० 898 विनांक 1963 03 30	संख्या 1 अक्टूबर 1982	(1) सारणी 1 के नीचे “+” विनिहत पाठियाणी के स्थान पर मर्यादा पाद-टिप्पणी रखी गयी है (2) छंड 3.1.2 और छंड 3.2.2 के बाद क्रमशः छंड 3.1.3 और छंड 3.2.3 जोड़े गये हैं	1982 10 31	
13. IS : 2480-1973 सामान्य उपयोग के छोट मशीनों कोर्ट के विशिष्टि (प्रथम पुनरीक्षण)	एस०ओ० 776 विनांक 1976 02 21	संख्या 2 जून 1982	सारणी 1 संशोधित की गई है	1982 06 30	
14. IS : 2681-1979 तालों के साथ उपयोग के लिये असौह धातु के सरकवा चट्टानियों की विशिष्टि (द्वितीय पुनरीक्षण)	एस०ओ० 1342 विनांक 1982 04 03	संख्या 1 जून 1982	(1) पृष्ठ 8 पर, सारणी 3, संस्कृत में “गुजाइश” के सामने “ $\pm 2$ ” के स्थान पर $\pm 4$ रखा गया है (2) पृष्ठ 8 पर, सारणी 3, संस्कृत 14 में “सोहज 350, 375 और 450 के सामने “45” जोड़ा गया है	1982 06 30	
15. IS : 2720 (भाग 17)-1966 मिट्टी की जांच के लिये विधियां भाग 17: प्रबैर्यता का प्रयोग शालीय निर्धारण	एस०ओ० 1972 विनांक 1967 06 10	संख्या 2 नवंबर 1982	(1) छंड 3.2.1, 4.1.1, 4.1.2 और 4.1.4 संशोधित किये गये हैं (2) पृष्ठ 4 पर “+”, विनिहत और “ $\pm$ ” विनिहत तथा पृष्ठ 10 पर “*”, “ $\pm$ ”, “+” और “-” विनिहत पाद-टिप्पणियों के स्थान पर मर्यादा पाद-टिप्पणियों रखी गयी हैं	1982 11 30	
16. IS : 2972 (भाग 1)-1979 वर्षे भौटियों की विशिष्टि, भाग 1: सूम मोटर, (प्रथम पुनरीक्षण)	—	संख्या 1 अक्टूबर 1982	आकृति 3 की संशोधित की गयी है	1982 10 31	
17. IS : 4682 (भाग 1)-1968 जलयानों के अस्तर और रासायनिक प्रक्रियाओं के लिये उपकरणों के बाद अवधार संहिता भाग 1: रसायन का अस्तर	एस०ओ० 3745 विनांक 1968 10 26	संख्या 3 नवंबर 1982	छंड 5.3 के स्थान पर मर्यादा छंड रखा गया है	1982 11 30	
18. IS : 4985-1981 पेयजल द्रुति के लिये अन्तर्मिहत पीरीसी पाइपों की विशिष्टि (प्रथम पुनरीक्षण)	—	संख्या 1 नवंबर 1982	छंड 0.2.1, 5.2.1, 3, सारणी 1 और 3 संशोधित किये गये हैं	1982 11 30	
19. IS : 5154-1980 संसकाम्ल कर्वण वैटरियों की विशिष्टि (प्रथम पुनरीक्षण)	—	संख्या 1 विसंबर 1982	(1) छंड 7.1.1.1 (ई) के बाद नयी सामग्री जोड़ी गयी है (2) छंड 7.10.7 के बाद छंड 7.11, 7.11.1, 7.11.2, 7.11.3, 7.11.4, 7.11.5, 7.11.6, 7.11.7 और 7.11.8 जोड़े गये हैं	1982 12 31	
20. IS : 5277-1978 बोहेलोराब्स फार्मसी-नीय साम्रण की विशिष्टि (प्रथम पुनरीक्षण)	एस०ओ० 1550 विनांक 1981 05 23	संख्या 1 अक्टूबर 1982	(1) छंड 2.3.1 और ए-2.5 के स्थान पर नये छंड रखे गये हैं (2) छंड 2.3.1.1, ए-2.2, 3 और ए-2.3.2 के बाद क्रमशः छंड 2.3.1.3, ए-2.2.4 और ए-2.3.3 जोड़े गये हैं	1982 10 31	

1	2	3	4	5	6
21. IS : 5852-1977 जूसों के लिये इस्पात की बचाव फंजा टोपियों की विशिष्टि (प्रथम पुनरेकाण)	एस. नं. २११६ दिनांक १९८० ०८ ०९	*संक्षया १ अगस्त १९८२	(1) आकृति १ और २ के स्थान पर नयी आकृति रखी गयी है। (2) छंड ४. १ के बाद छंड ४. १. १ जोड़ा गया है तथा तदनुसार बाव के शब्दों की संक्षयाएं बदली गयी है। (3) “४” विनिहृत पावटिप्पणी के बाब शब्द “४” विनिहृत पावटिप्पणी जोड़ी गयी है।		१९८२ ०८ ३१
22. IS : ६३६३-१९७२ कायाच्चियन में पार्ट-आविक शब्दावली	एस. नं. ११५ दिनांक १९७५ ०१ ११	संक्षया १ नवंबर १९८२	(1) पृष्ठ ३८ पर, सूचक, “आर” के बाब अन्तिम प्रविश्टि में) “राउट डायग्राम” के स्थान पर “रूट डायग्राम” किया गया है। (2) (सामान्य) — जहां कहीं परिभाषा के पाठ में “मर्शीन” शब्द आया है वहां उसके स्थान पर “उपकारण/मर्शीन” कर लेना चाहिये। (3) छंड ३. १. १. २, ३. १. १. ३, ३. १. १. ४, ३. १. २. १ और ५. ७. ६ संशोधित किये गये हैं। (4) छंड ३. १. १. ५ के बाद छंड ३. १. १. ६ जोड़ा गया है। (5) छंड ४. १. १४ के बाद सभी सामग्री जोड़ी गयी है।		१९८२ ११ ३०
23. IS : ६६९५-१९७२ अष्टुमविकल्पों के संशलण एस. नं. २५५८ और प्रौद्योगिकी विशिष्टि	दिनांक १९७५ ०८ ०९	संक्षया १ नवंबर १९८२	सारणी १, २ और ३ संशोधित की गयी है।		१९८२ ११ ३०
24. IS : ६७८७-१९७३ एलेट, बोत, सैकलाफलिन एस. नं. १२९० की विशिष्टि	दिनांक १९७५ ०४ २६	संक्षया १ नवंबर १९८२	(1) आकृति १ के स्थान पर नयी आकृति रखी गयी है। (2) छंड ३ के बाद छंड ३. १ जोड़ा गया है।		१९८२ ११ ३०
25. IS : ६७८९-१९७२ ऐटोम्यूक्ट ज्वालासह एस. नं. २६८९ के बहुत युग्मकों और उपस्थोजकों की विशिष्टि दिनांक १९७५ ०८ १६		संक्षया १ नवंबर १९८२	सारणी ७ संशोधित की गयी है।		१९८२ १० ३१
26. IS : ६९१४-१९७८ संरचना इस्पात (मानक एस. नं. ३२११ किस्म) के रूप में बेलन के लिए उसे दिनांक १९८२ ०८ २२ विनेट इंगटों और लातातार इलेविल्टों की विशिष्टि (प्रथम पुनरेकाण)		*संक्षया १ अप्रैल १९८२	(1) छंड ७. २ के स्थान पर नया छंड रखा गया है। (2) पृष्ठ ६ पर छंड ७. २. १ को हटा किया गया है और बाव के बाद ७. २. २ की संक्षया बदल कर ७. २. १ की गयी है।		१९८२ ०४ ३०
27. IS : ६९७६-१९७३ धारा, कुंदस्वर, हीरा-मीक, की विशिष्टि	एस. नं. २०८१ दिनांक १९७५ ०७ ०८	संक्षया १ नवंबर १९८२	(1) आकृति १ के स्थान पर नयी आकृति रखी गयी है। (2) छंड २ के बाद छंड २. १ जोड़ा गया है।		१९८२ ११ ३०
28. IS : ७१८७-१९७४ धाइस्ट्रीम कोरोनों की विशिष्टि	—	संक्षया २ दिसंबर १९८२	संशोधन सं. १ के पृष्ठ २ पर पहली पंक्ति में “छंड ५. ३ के स्थान पर छंड ५. १” रखा गया है।		१९८२ ०९ ३०
29. IS : ७३५८-१९७४ धर्मोक्तप्त की विशिष्टि एस. नं. २८६८ दिनांक १९७६ ०८ ०७		संक्षया १ दिसंबर १९८२	छंड ९. २. ५ और परिशिष्ट भी के स्थान पर नया छंड भी परिशिष्ट रखा गया है।		१९८२ १२ ३१
30. IS : ७६०९-१९७६ ट्रायुम्फों के लिए इस्पात एस. नं. १६९२ अप्रैल संस्थान के प्रयोजनों के लिए यह संशोधन १९८२ १२ ०१ से लागू होगा।		संक्षया २ नवंबर १९८२	सारणी १ के स्थान पर नयी सारणी रखी गयी है।		१९८२ ०१ १

\*सामान्य मानक संस्था प्रमाणित मुहर योजना के प्रयोजनों के लिए यह संशोधन १९८२ १२ ०१ से लागू होगा।

(1)	(2)	(3)	(4)	(5)	(6)
31. IS: 7652-1975 रुद्धिरदाक्षमापी, निर्देश एस. आ०. 2547 प्रकार, की विशिष्टि	दिनांक 1977-06-13	*संख्या 1 नवंबर 1982	(1) खंड 4.1.1, 4.4, 4.4.1.1 और 1982-11-30 6.2 संशोधित किये गये हैं (2) खंड 4.2 के स्थान पर नया खंड रखा गया है (3) आकृति 2 और पृष्ठ 3 पर अनौप- चारिक सारणी के स्थान पर नयी आकृति और सारणी रखी गयी है		
32. IS: 8708-1978 मैंसीजेव जलविसर्जनीय एस. आ०. 3416 पावडर सांकेतिक	दिनांक 1980-12-13	संख्या 1 नवंबर 1982	(1) खंड 2.3.1 और सारणी 1 के 1982-11-30 स्थान पर नया खंड और नयी सारणी रखी गयी है। (2) खंड 3.1 संशोधित किया गया है (3) पृष्ठ 7 पर “*” चिह्नित पाव टिप्पणी के के स्थान पर नई पाव टिप्पणी रखी गई है।		
33. IS: 9129-1979 बिजली के वैशरों के एस. आ०. 2862 लिए सुरक्षित भरण तंत्रों के बास्ते तकनीकी विनांक 1981-10-17 आवश्यकताएँ		संख्या 2 नवंबर 1982	(1) खंड 4.1, 4.3.1 और सारणी 1982-11-30 4 संशोधित किये गये हैं। (2) आकृति 1 और 4 के स्थान पर नयी आकृतियां रखी गयी हैं। (3) पृष्ठ 10 पर खंड 6.3.3 हटा किया गया है। (4) खंड 6.4, 6.4.1 और 6.4.2 के स्थान पर नये खंड रखे गये हैं। (5) खंड 0.4, के बाद खंड 0.5 की संख्या बदल कर 0.6 की गयी है। (6) खंड 4.3.1 के घंत में नयी सामग्री जोड़ी गई है।		
34. IS: 9362-1980 ब्लूटीफ्लोर कणिकाओं की विशिष्टि	—	संख्या 1 नवंबर 1982	(1) खंड ए-2.1.3, 2.2.2 और 1982-11-30 2.2.4.1 संशोधित किये गये हैं। (2) खंड 2.2.1, 2.2.2.1, 2.2.3 पौर 2.3.1 के स्थान पर नये खंड रखे गये हैं। (3) खंड 2.2.3.1 और ए-1.1 हटाये गये हैं। (4) पृष्ठ 4 पर “*” चिह्नित पाव- टिप्पणी के स्थान पर नयी पाव- टिप्पणी रखी गयी है।		

\*भारतीय मानिक संस्था प्रमाणण विज्ञ प्रयोजनों के लिए यह संशोधन 1983-03-16 से लागू होगा।

इन संशोधनों को प्रतियां भारतीय मानक संस्था, मानक भवन, 9 बहादुरगाह जफर मार्ग, नई दिल्ली-110002 और अहमदाबाद, बंगलौर, भोपाल,  
भूदेश्वर, बम्बई, कलकत्ता, हैदराबाद, अयपुर, कानपुर, मद्रास, मोहूसी, पटना, और तिरुचन्तपुरम्, स्थित इसके शास्त्र कार्यालयों में उपलब्ध हैं।

[सं. सीएमडी/13: 5]

### MINISTRY OF FOOD AND CIVIL SUPPLIES

(Department of Civil Supplies)

INDIAN STANDARDS INSTITUTION

New Delhi, the 25th September, 1985

S.O. 5164—In pursuance of regulation 4 of the Indian Standards Institution (Certification Marks) Regulations, 1955, the Indian Standards Institution, hereby, notifies that amendment(s) to the Indian Standard(s) given in the schedule hereto annexed have been issued under the powers conferred by the sub-regulation (1) of Regulation 3 of the said Regulations.

## SCHEDULE

Sl. No. and title of the Indian Standard amended	No. and Date of Gazette	No. and Date of the Notification	Brief Particulars of the Amendment	Date from which the Amendment shall have effect	
(1)	(2)	(3)	(4)	(5)	(6)
1. IS : 158—1981 Specification for ready mixed paint, brushing, bituminous black, lead free, acid, alkali and heat resisting (third revision)	—	No. 1 Jul 1982	Clause A-2.1 has been amended	1982-07-31	
2. IS : 443—1975 Methods of sampling and tests for rubber hoses (second revision)	S.O. 3530 dt. 1977-11-19	No. 2 Dec. 1982	(i) Clause 0.4 has been added after clause 0.3 and clause 0.4 has been renumbered as 0.5 (ii) Appendix A has been added after clause 15.2.5	1982-12-31	
3. IS : 748—1974 Specification for hand-loom cotton dhotis (first revision)	S.O. 776 dt., No. 3* 1976-02-21	No. 3* Oct. 1982	(i) Table 1 and clause 6.1 have been amended (ii) Table 2 has been substituted by a new one (iii) Foot-notes with '*' and '±' marks (page 6) have been substituted by new one.	1982-10-31	
4. IS : 909—1975 Specification for underground fire hydrant, sluice-valve type (second revision)	S.O. 3530 dt. 1977-11-19	No. 5 Dec. 1982	(i) Clause 3.1 has been substituted by a new one (ii) Clauses 3.2, 3.3, 3.5.1(c), 4.1 and 8.1 have been amended (iii) Foot-notes with '*', '±' and '±' marks (page 4), with '//' and '***' marks (page 5) and with '*' mark (page 8) have been substituted by new ones	1982-12-31	
5. IS : 1141—1973 Code of practice for seasoning of timber (first revision)	S.O. 2939 1975-09-06	No. 1 Nov. 1982	(i) Clause 0.3 has been substituted by a new one (ii) Clause 7.4.12 has been added after clause 7.4.11.1	1982-11-30	
6. IS : 1451—1979 Specification for hand-loom cotton drills (first revision)	—	No. 1 Nov. 1982	(i) Clause 6.1 and Table 1 have been amended (ii) Foot-notes with '±' mark (page 5) has been substituted by a new one (iii) Table 2 has been substituted by a new one	1982-11-30	

\*For purposes of ISI Certification Marks Scheme; this amendment shall come into force with effect from 1983-03-16.

(1)	(2)	(3)	(4)	(5)	(6)
7.	IS : 1507—1977 Specification for copper oxychloride water dispersible powder concentrates (second revision)	S.O. 612 dt. 1980-03-15	No. 1 Nov. 1982	(i) Table 1 and clause 2.3.1 have been substituted by new ones (ii) Clause 3.1 has been amended (iii) Foot-note with '±' mark (page 5) has been substituted by a new one (iv) Appendix A has been added at page 6 after clause 5.2	1982-11-30
8.	IS : 1579—1979 Specification for handloom cotton twills (first revision)	S.O. 3449 dt. 1982-10-02	No. 1 Oct. 1982	(i) Clause 6.1, Table 1 and Table 2 have been amended (ii) Foot-note with '±' mark (page 5) has been substituted by a new one	1982-10-31
9.	IS : 1989 (Pt I)—1978 Specification for leather safety boots and shoes : Part I For miners (Third revision)	S.O. 2322 dt. 1982-07-03	*No. 1 Nov 1982	(i) Clauses 8.2, 8.7, 8.16, 14.2 14.7 and 14.16 have been substituted by new ones (ii) Clauses 8.5, 9.11, 9.12, 15.5, 15.10 and 15.11 have been amended (iii) Foot-notes with '§' mark (page 5), with '±' mark (page 6), with '±' mark (page 13) and '±' mark (page 14) have been substituted by new ones (iv) Clause 3.3 has been added after clause 3.2 at page 4 (v) New matter have been added in clause 8.9.2, 8.13, 9.13, 10.4, 11.1, 14.9.2, 14.13, 15.12 and 17.1	1982-11-30
10.	IS : 2141—1979 Specification for galvanized stay strand (second revision)	—	No. 2 Sep. 1982	Table 1 and clause 7.2.2 have been amended	1982-09-30
11.	IS : 2181—1973 Specification for sewing machine needles for household purposes (first revision)	S.O. 3069 dt. 1975-09-13	No. 1 Nov. 1982	(i) Clauses 0.3, 5.1, and 7.2 have been substituted by new ones (ii) Clause 8.1 and Appendix A have been amended (iii) Clause 5.2 has been added after clause 5.1 (iv) Table 2 has been added after Table 1 and the subsequent Table 2 has been redesignated as Table 3	1982-11-30
12.	IS : 2219—1962 Feeds for machine tools	S.O. 898 dt. 1963-03-30	No. 1 Oct. 1982	(i) Foot-note with 't' mark under Table 1 has been substituted by a new one (ii) Clauses 3.1.3 and 3.2.3 have been added after clauses 3.1.2 and 3.2.2 respectively	1982-10-31

\*For purposes of ISI Certification Marks Scheme; this amendment shall come into force with effect from 1983-03-16.

(1)	(2)	(3)	(4)	(5)	(6)
13. IS : 2480-1973 Specification for solid stem general purposes glass thermometers ( <i>first revision</i> )		S.O. 776 dt. 1976-02-21	No. 2 Jun. 1982	Table 1 has been amended	1982-06-30
14. IS : 2681-1979 Specification for non-ferrous metal sliding door bolts (alidrops) for use with pad locks ( <i>second revision</i> )		S.O. 1342 dt. 1982-04-03	No. 1 Jan. 1982	(i) (Page 8, Table 3, Col 3, against (Tolerances)—Substitute '+4' for ' $\pm 2$ '. (ii) (Page 8, Table 3, Col. 4, against 'Size 350, 315 and 450')—Add '45'	1982-06-30
15. IS : 2720 (Pt. XVII)—1966 Methods of test for soils : Part XVII Laboratory determination of permeability		S.O. 1972 dt. 1967-06-10	No. 2 Nov. 1982	(i) Clauses 3.2.1, 4.1.1., 4.1.2 and 4.1.4 have been amended. (ii) Foot-notes with '+' marks and '‡' marks (page 4) and with '*', '+', '‡' and '\$' marks (page 10) have been substituted by new ones.	1982-11-30
16. IS : 2972 (Pt I)-1979 Specification for textile motors : Part I looms motors ( <i>first revision</i> ).	—		No. 1 Oct. 1982	Fig. 3B has been amended.	1982-10-31
17. IS : 4682 (Pt I)-1968 Code of practice for lining of vessels and equipment for chemical processes : Part I Rubber Lining		S.O. 3745 dt. 1968-10-26	No. 3 Nov. 1982	Clause 5.3 has been substituted by a new one.	1982-11-20
18. IS : 4985-1981 Specification for unplasticised PVC pipes for potable water supplies ( <i>first revision</i> )	—		No. 1 Nov. 1982	Clause 0.2.1, 5.2.1.3, Table 1 and 3 have been amended.	1982-11-30
19. IS : 5154-1980 Specification for lead-acid traction batteries ( <i>first revision</i> )	—		No. 1 Dec. 1982	(i) New matter has been added after clause 7.1.1.1(e) (ii) Clauses 7.11, 7.11.1, 7.11.2, 7.11.3, 7.11.4, 7.11.5, 7.11.6, 7.11.7 and 7.11.8 have been added after clause 7.10.7	1982-12-31
20. IS : 5277-1978 Specification for dichlorovos emulsifiable concentrates ( <i>first revision</i> )		S.O. 1550 dt. 1981-05-23	No. 1 Oct. 1982	(i) Clauses 2.3.1. and A-2.5 have been substituted by new ones. (ii) Clauses 2.3.1.2, A-2.2.4 and A-2.3.3 have been added after clauses 2.3.1.1, A-2.2.3 and A-2.3.2 respectively.	1982-10-31
21. IS : 5852-1977 Specification for protective steel toe caps for foot-wear ( <i>first revision</i> ).		S.O. 2116 dt. 1980-08-09	No. 1 Aug. 1982	(i) Fig. 1 and 2 have been substituted by new ones. (ii) Clause 4.1.1 has been added after clause 4.1 and the subsequent clauses have been renumbered accordingly. (iii) Foot-note with '\$' mark has been added after foot-note with '‡' mark.	1982-08-31

\*For purposes of ISI Certification Marks Scheme; this amendment shall come into force with effect from 1982-12-01

(1)	(2)	(3)	(4)	(5)	(6)
22.	IS : 6363-1972 Glossary of terms in workstudy.	S.O. 115 Nov 1982 dt. 1975-01-11		(i) (Page 38, Index, last entry under 'R') Substitute 'Route Diagram' for 'Rout diagram'  (ii) (General)--Wherever the word 'Machine' appears in the text of definition it may be replaced by 'Equipment/Machine'.  (iii) Clauses 3.1.1.2, 3.1.1.3, 3.1.1.4, 3.1.2.1 and 5.7.6 have been amended.  (iv) Clauses 3.1.1.6 has been added after clause 3.1.1.5.  (v) New matter has been added after clause 4.1.14.	1982-11-20
23.	IS : 6695-1972 Code for conservation and maintenance of honey bees	S.O. 2558 Nov 1982 dt. 1975-08-09		Tables 1, 2 and 3 have been amended.	1982-11-30
24.	IS : 6787-1973 Specification for plate, bone, McLaughlin.	S.O. 1290 Nov 1982 dt. 1975-04-26		(i) Fig. 1 has been substituted by a new one.  (ii) Clause 3.1 has been added after clause 3.	1982-11-30
25.	IS : 6789-1972 Specification for bolted flameproof cable couplers and adaptors.	S.O. 2669 Oct. 1982 dt. 1975-08-16		Table 7 has been amended	1982-10-31
26.	IS : 6914-1978 Specification for cast billet ingots and continuously cast billets for rolling into structural steel (standard quality) (first Revision)	S.O. 2211 Apr 1982 dt. 1981-08-22		(i) Clause 7.2 has been substituted by a new one.  (ii) (Page 6, clause 7.2.1) Delete and renumber the subsequent clause '7.2.2' as '7.2.1'.	1982-04-30
27.	IS : 6976-1973 Specification for awl, kuntscher, diamond pointed.	S.O. 2081 dt. 1975-07-05 Nov. 1982		(i) Fig. 1 has been substituted by a new one.  (ii) Clause 2.1 has been added after clause 2.	1982-11-30
28.	IS : 7187-1974 Specification for ice cream cones.	— No. 2 Sep 1982		(Page 2 of Amendment No. 1, line 1) Substitute 'clause 5.1' for 'clause 5.3'.	1982-09-30
29.	IS : 7358-1974 Specification for thermocouples.	S.O. 2858 Dec 1982 dt. 1976-08-07		Clause 9.2.5 and Appendix D have been substituted by a new one	1982-12-31
30.	IS : 7609-1975 General requirements for tents	S.O. 1892 Nov. 1982 dt. 1977-06-11		Table 1 has been substituted by a new one.	1982-11-30

\*For purposes of ISI Certification Marks Scheme; this amendment shall come into force with effect from 1983-03-31.

(1)	(2)	(3)	(4)	(5)	(6)
31. IS : 7652-1975 Specification for sphygmomanometer, aneroid type		S.O. 2547 dt. 1977-08-13	No. 4 Nov. 1982	(i) Clause 4.1.1, 4.4, 4.4.1.1 and 6.2 have been amended. (ii) Clause 4.2 has been substituted by a new one. (iii) Fig. 2 and Informal table at page 3 have been substituted by new ones.	1982-11-30
32. IS : 8708-1978 Specification for mancozeb water dispersible powder concentrates.		S.O. 3416 dt. 1980-12-13	No. 1 Nov. 1982	(i) Clause 2.3.1 and Table 1 has been substituted by a new one. (ii) Clause 3.1 has been amended. (iii) Foot-note with '*' mark (page 7) has been substituted by a new one.	1982-11-30
33. IS : 9129-1979 Technical requirements for safe feeding systems for power threshers.		S.O. 2862 dt. 1981-10-17	No. 2 Nov. 1982	(i) Clauses 4.1, 4.3.1 and Table 4 have been amended. (ii) Fig. 1 and 4 have been substituted by new ones. (iii) (Page 10, clause 6.3.3)—Delete. (iv) Clauses 6.4, 6.4.1 and 6.4.2 have been substituted by new ones. (v) Clause 0.5 has been added after clause 0.4 and the subsequent clause 0.5 has been renumbered as 0.6 (vi) New matter has been added at the end of clause 4.3.1	1982-11-30
34. IS : 7362-1980 Specification for butachlor granules.	—		No. 1 Nov. 1982	(i) Clauses A-2.1.3, 2.2.2 and 2.2.1.4 has been amended. (ii) Clauses 2.2.1, 2.2.2.1, 2.2.3 and 2.3.1 have been substituted by new ones. (iii) Clauses 2.2.3.1 and A-1.1—Delete. (iv) Foot -note with '+' mark (page 4) has been substituted by a new one.	1982-11-30

Copies of these amendments are available with the Indian Standards Institution, Manak Bhavan, 7 Bahadur Shah Zafar Marg, New Delhi-110002 and also from its branch offices at Ahmedabad, Bangalore, Bhopal, Bhubaneshwar, Bombay, Calcutta, Hyderabad, Jaipur, Kanpur, Madras, Mohali, Patna and Trivandrum.

[No. C M D/13 : 5]

क्र. नं. 5165.—नवय-समय पर उगोधिन भारतीय म.नक तस्वा (प्रमाणन चिन्ह) विभिन्न 1955 के विनियम 4 के अनुसार भारतीय मानक मंस्या द्वारा प्राविष्टित किया जाता है कि उक्त विनियमों के विनियम (3) के संपर्कित विनियम (1) के अनुसार प्राप्त मधीन अनुसूची में यह भारतीय मानकों के संशोधन ज.सी किए जाते हैं:

\*For purposes of ISI Certification Marks Scheme; this amendment shall come into force with effect from 1983-03-16.

## मनुसंस्कृती

क.सं. संशोधित भारतीय भानक की पर संख्या जिस राजपत्र में भारतीय संशोधन की संख्या संशोधन का संक्षिप्त विवरण संशोधन सामूहिक एवं शीर्षक मानक के निर्धारित होने और तिथि की सूचना भी तभी उम्मीकी संख्या निम्न एवं शीर्षक

1	2	3	4	5	6
1. IS : 186-1965 मन्मत की विशिष्टि एस. ओ. 1992 (पुनरीक्षण)	विनांक 1966 07 02	संख्या 2 फरवरी 1980	खंड 2. 2. 1 के बाद एक नयी टिप्पणी जोड़ी जाई है।	1980 02 29	
2. IS : 203-1972 कौश बनियों के लिए एस. ओ. 770 शुष्क बैटरियों की विशिष्टि (तीसरा पुनरीक्षण)	विनांक 1975 03 08	*संख्या 2 अप्रैल 1980	(1) खंड 0. 5 के स्थान पर नया विषय गया है। (2) सारणी 3, 4 और 5 का संशोधन किया गया है।	1980 04 30	
3. IS : 220-1972 फेरोरीलो टेनेट काउंटेन- एस. ओ. 423 पेन की स्थाह (0. 1 प्रतिशत लीह युक्त) की विशिष्टि (दूसरा पुनरीक्षण)	दिनांक 1975 02 15	संख्या 3 मार्च 1980	"IS : 8642-1977 पानी से बनी लिखने की स्थाही के रंगों की विशिष्टि" के प्रकाशन को व्यापार में रखते हुए जिस में नीली स्थाही के रंग की अपेक्षाएं सन्मिलित की गई है, "IS : 2247-1962 स्थाही उद्योग के लिए नीली स्थाही की विशिष्टि" को वापिस से लिया गया है। भल: यह संशोधन जारी किया जा रहा है।	1980 03 31	
4. IS : 233 (भाग 1 से 4)-1978 सूती कपड़े की सम्भाई प्राचल के निर्धारण की पद्धति (पहला पुनरीक्षण)	--	संख्या 1 मार्च 1980	पृष्ठ 15 पर सारणी 1 और खंड 4. 2. 4 का संशोधन किया गया है।	1983 03 31	
5. IS : 517-1967 मैथेनोल (मेथाइल एथल- कोहल) की विशिष्टि (पहला पुनरीक्षण)	एस. ओ. 1719 विनांक 1968 05 18	संख्या 1 अप्रैल 1980	पृष्ठ 5 पर सारणी 1 का संशोधन किया गया है और सारणी के बाद "—" विलू वाली एक नई टिप्पणी जोड़ी जाई है।	1980 04 30	
6. IS : 666 (भाग 2)-1972 जिग शुर्पों की एस.ओ. 423 विशिष्टि भाग 2 नवीकरण फ्रिल द्वारे दिनांक 1975 02 15 (दूसरा पुनरीक्षण)	--	संख्या 1 अप्रैल 1980	पृष्ठ 3 पर सारणी 1 और पृष्ठ 4 पर सारणी 2 का संशोधन किया गया है	1980 04 30	
7. IS : 1200 (भाग 6)-1974 भवन-निर्माण एस.ओ. 983 एवं विविध इंजीनियरों कार्यों की मापन पद्धति दिनांक 1976 03 06 भाग 6 उपासाह कार्य (दूसरा पुनरीक्षण)	--	संख्या 1 फरवरी 1980	(1) खंड 3. 10 का संशोधन किया गया है। (2) पृष्ठ 6 पर '*' और '+' विलू वाली पाद टिप्पणियों के स्थान पर नई पाद टिप्पणियों दी गई है।	1980 02 29	
8. IS : 1374-1979 मुर्गियों के चूपे की विशिष्टि (तीसरा पुनरीक्षण)	--	संख्या 1 मई 1980	पृष्ठ 5 पर सारणी 1 का संशोधन किया गया है।	1980 05 31	
9. IS : 1879 (भाग 1 से 10)-1975 ग्रम ओ 313 कुट्टीय नियंत्रण लोहे के पात्र की विशिष्टि दिनांक 1979 10 27 की विशिष्टि भाग 1 सामान्य अपेक्षाएं (पहला पुनरीक्षण)	--	संख्या 4 अप्रैल 1980	(1) खंड 11 एवं 11.1 के स्थान पर नये खंड दिये गये हैं। (2) पृष्ठ 7 पर '+' एवं '—' विलू वाली पाद टिप्पणियों को हटायें। (3) खंड 6.1 के बाद खंड 6.1.1 को जोड़ा गया है। (4) सारणी 1 और 2 का संशोधन किया गया है।	1980 04 30	

\*भारतीय मन्मत संख्या की प्रमाणन विलू योजना हेतु यह संशोधन 1980 07 01 से लागू होगा।

1	2	3	4	5	6
10. IS : 1883-1975 घास के खानेदार रैक (घट-बढ़ सकने वाले) की विशिष्टि (दूसरा पुनरेक्षण)	--	संख्या 4 मार्च 1980	(1) खंड 7-1-1, 7-1-2 और 7-1-3 के स्थान पर नए खंड दिये गये हैं (2) “४” और “८” चिन्ह वालों पद टिप्पणियों के स्थान पर नई पाद टिप्पणियां दी गई हैं। (3) खंड 7.3 के बाद खंड 8, 8.1, 8.2, 8.3, 8.4 और 8.5 को जोड़ा गया है और अनुवर्ती खंडों को तदनुसार फिर से संख्या दी गई है। (4) (पृष्ठ 11, “*” चिन्ह वालों पद टिप्पणी) --- चर्चेमान प.द.टिप्पणी के बाद निम्नलिखित नई प.द.टिप्पणी को जोड़ें :— “+” तैयार मिश्रित रोपन और इनेमन का परोक्षण पद्धतियां (दूसरा पुनरेक्षण)	1980 03 31	
11. IS : 2032 (भाग 21) 1977 विद्युत ओशोपिकों में प्रयुक्त सेक्षापिक्रीय चिन्ह भाग 21 विद्युत इलाई उपकरण	--	संख्या 1 अप्रैल 1980	खंड 2.1.9, 2.1.11, 2.1.14, 2.1.15 और 2.1.16 का संशोधन किया गया है।	1980 04 30	
12. IS : 2052-1979 पर्यावरों के मिश्रित आहुर एस.ओ. 3820 की विशिष्टि (तीसरा पुनरेक्षण)	विनाक 1979 11 24	संख्या 1 मई 1980	सारणी 1 का संशोधन किया गया है	1980 05 31	
13. IS : 2428-1964 मधीनिंग, प्रयोग की सीमा और रंग कोह के लिय कार्बाइड के विनाक 1965 09 04 प्रयोग	एस.ओ. 2729	संख्या 1 मार्च 1980	(1) खंड 0-3, 0.4, 0.5, 0.6, एवं 0.7 के स्थान पर नये खंड दिये गये हैं (2) खंड 2.1 के बाद नये खंड 2.2 जोड़ा गया है।	1980-03-31	
14 IS . 2974 (भाग 3) — 1975 मधीनि मीबों के विज्ञान एवं निर्माण की रीति संहिता भाग 3 शूर्यन टाइप की मधीनिं की नईं (भव्य और उच्च आवृत्ति वाली) (पहला पुनरेक्षण)	एस.ओ. 3439 विनाक 1978 12 02	संख्या 1 फरवरी 1980	(1) खंड 0.2, 2.0, 3.2.2 (वे), 4.2.1 और 5.1.2 (वे) का संशोधन किया गया है। (2) पृष्ठ 5 पर “*” चिन्ह वालों पृष्ठ 7 पर “—” चिन्ह वालों, पृष्ठ 10 पर “*” एवं “—” चिन्हों वाली और पृष्ठ 11 पर “*” चिन्ह वाली पद टिप्पणियों के स्थान पर नई पाद टिप्पणियां दी गई हैं। (3) खंड 4.6.1 एवं 6.1.3 के स्थान पर नये खंड दिए गए हैं। (4) परिशिष्ट 'से' के स्थान पर नई परिशिष्ट दी गई है।	1980 02 29	
15. IS : 3314-1974 कार्यालय के सामान्य एस.ओ. 1892 कार्यों के लिय काइल रखने की दस्तावेज विनाक 1977 06 11 की कैबिनेट (अलमारी) (पहला पुनरेक्षण)	एस.ओ. 1892 विनाक 1977 06 11	संख्या 3 फरवरी 1980	(1) खंड 5.10, 7.1, 7.2 और 7.2.1 को संशोधित किया गया है। (2) खंड 7.3 के बाद नये खंड 8, 8.1, 8.2, 8.3, 8.4 और 8.5 को जोड़ा गया है तथा अनुवर्ती खंडों को तदनुसार फिर से संख्यांकित किया गया है।	1980 02 29	

1	2	3	4	5	6
16.	IS : 3450-1976 हथ से लिखने के एम.ओ. 3823 कार्बन कागजों को विशिष्ट (पहला पुनरेक्षण)	संख्या 1 दिनांक 1979 11 24	संख्या 1 फरवरी 1980	(1) (पृष्ठ 4, छंड 4.2 पंक्ति 2) IS : 3413-1966 “+” के स्थान पर IS : 3413-1977 “+” कर दे । (2) (पृष्ठ 4, “+” चिन्ह वाली पाद टिप्पणी) — वर्तमान पाद-टिप्पणी के स्थान पर निम्नलिखित पादटिप्पणी कर लें ; “+” कार्बन कागज के लिए आधारभूत कागज को विशिष्ट (पहला पुरेक्षण)	1980 02 29
17.	IS : 3455-1971 सादा चर्केसों को भापन रति (पहला पुनरेक्षण)	एसओ. 1265 दिनांक 1974 05 25	संख्या 2 अप्रैल 1980	छंड 10-3-4 के स्थान पर नया छंड दिया गया है	1980 04 30
18.	IS : 3498-1975 धातु मजों कार्यालय टाइप को विशिष्ट (पहला पुनरेक्षण)	एस.ओ. 5530 दिनांक 1977 11 19	संख्या 3 अप्रैल 1980	(1) छंड 5.1, 5.2 और 5.3 के स्थान पर नये छंड दिय रख हैं। (2) पृष्ठ 7 पर “ $\delta$ ” एवं “ $\pi$ ” चिन्हों वाली पादटिप्पणी के स्थान पर नई पादटिप्पणी दी गई है। (3) छंड 5.5 के बाद नये छंड 6; 6.1, 6.2, 6.3, 6.4, और 6.5 जोड़े गये हैं तथा अनुक्रमी छंडों को तदनुसार फिर से संख्यांकित किया गया है। (4) पृष्ठ 7 पर “ $\pi$ ” चिन्ह वाली पादटिप्पणी के बाद “* *” चिन्ह वाली पाद टिप्पणी को जोड़ा गया है।	1980 04 30
19.	IS : 4175 (भाग 1) — 1967 पशुधन के परिवहन को नियमावली : भाग 1 अधिकारी दिनांक 1977 11 18 परिवहन (रेल, सड़क तथा समुद्री भागों द्वारा घोड़, खल्क्षर एवं गधों परिवहन।	एस.ओ. 4080 दिनांक 1977 11 18	संख्या 3 फरवरी 1980	छंड 4.2 के स्थान पर नया छंड दिया गया है	1980 02 29
20.	IS : 4521-1967 एकत्रेत विकलेवन सूधम- एस.ओ. 520 दर्वी को विशिष्ट	दिनांक 1968 02 10	*संख्या 1 दिसम्बर 1979	छंड 3.8 का संशोधन किया गया है	1979 12 31
21.	IS : 4398-1967 पिंड, बेलन, और बय- एस.ओ. 2015 रिंग रेसिंग के निर्माण हेतु कार्बन कोमियम दिनांक 1975 06 28 इस्पात को विशिष्ट (पहला पुनरेक्षण)	—	संख्या 3 फरवरी 1980	छंड 8.1 की टिप्पण के स्थान पर नई टिप्पणी दी गई है	1980 03 29
22.	IS : 4430-1979 इस्पात के सौचे की विशिष्ट (पहला पुनरेक्षण) —	—	संख्या 1 अप्रैल 1980	सारणी 2 को संशोधित किया गया है।	1980 04 30
23.	IS : 4431-1978 कार्बन एवं कार्बन-मैथ- मै.ज इस्पात की सुकृदृश्य कठाई की विशिष्ट (पहला पुनरेक्षण)	—	संख्या 1 अप्रैल 1980	सारणी 1 और 5 का संशोधन किया गया है।	1980 04 30
24.	IS : 4874-1968 खाने के बिनोले के आट एस.ओ. 2330 और विशिष्ट (कोलू डाग मिसा हुआ) दिनांक 1969 06 14	—	संख्या 1 मार्च 1980	(1) सारणी 1 का संशोधन किया गया है। (2) परिशिष्ट अंडे के बाद परिशिष्ट सी जोड़ा गया है।	1980 03 31
25.	IS : 6571 1972 संस्थागत नमूने की बन्द एस.ओ. 2241 न छाने वाले पद्धियावार कृतियों को विशिष्ट दिनांक 1975 08 31	—	संख्या 1 मार्च 1980	(1) छंड 4.1, 5.3, 6.1 और सारणी के 1 के स्थान पर नये छंड/सारणी दी गई है। (2) छंड 5.1, 6.2, 6.3, 6.6, 6.7, एवं 6.8 का संशोधन किया गया है। (3) छंड 5.5.1 के बाद छंड 5.5.2 जोड़ा गया है। (4) छंड 5.6 और 6.4 के बाद नई सामग्री जोड़ी गई है।	1980 03 31

\*सारणी मानक संस्था को प्रभागन विन्हू योजना हेतु यह संशोधन 1980 09 01 से सार्व होगा।

(1)	(2)	(3)	(4)	(5)	(6)
26. IS 7098 (भाग 1)-1977 कार्यालय पोलिएथिलेन रोधित पीवीसी के खोलदार केबलों की विशिष्टि : भाग 1 1100 बोल्ट तक की कार्यकारी बोल्टना के लिए	—	*संख्या 1 फरवरी 1980	(i) खंड 0.4, 8.1 और 8.3 के अन्तर्गत अनोपचारिक सारणियों का संशोधन किया गया है। (ii) खंड 0.7 का संशोधन किया गया है। (iii) (पृष्ठ 6, खंड 1.4) हटा दें खंड 3.3 को टिप्पणी के स्थान पर नई टिप्पणी दी गई है।	1980-02-29	
27. IS : 7119-1973 पथलों और पथ के लिए एस.ओ. 2939 सूती कपड़े की विशिष्टि दिनांक 1975-09-08	संख्या 2 फरवरी 1980	(i) पृष्ठ 6, आँकड़ि 2 "अनुभाग 5" के लिए आरेख) हटा दें (ii) (पृष्ठ 14, परिविष्ट "ए" अनोग- चारिक सारणी, अम संख्या 3) हटा दें तथा अनुवर्ती मर्दों के तदनु- सार किर से संक्षया दें। (iii) खंड 5.2 के बाव खंड 5.2.1 को जोड़ा गया है।	1980-02-29		
28. IS : 7452-1974 दरवाजों, खिड़कियों एवं एस.ओ. 3081 रोधनवालों के लिए ग्राम वेल्वेट इस्मात दिनांक 1977-10-08 खंडों की विशिष्टि	संख्या 2 फरवरी 1980	खंड 1 का संशोधन किया गया है	1980-03-31		
29. IS: 7468- 1974 प्रेशर कुकरों के लिए एस.ओ. 1092 रखड़ के छलों की विशिष्टि दिनांक 1977-04-09	संख्या 2 मार्च 1980	खंड 3.13 के स्थान पर नया खंड दिया गया है।	1980-02-29		
30. IS: 7503 (भाग 2)- 1976 रखड़ उपयोग में प्रयुक्त पारिवारिक शब्दावली भाग 2	संख्या 1 फरवरी 1980	(i) खंड 8 पर खंड 6.1.1, 6.1. 2 एवं 6.1.3 तथा "§" और "π" चिह्नों वाली पाइटिप्पणी के स्थान पर नए खंड/पाइटिप्पणी दी गई है। (ii) खंड 6.2 के बाव खंड 7, 7.1, 7.2, 7.3, 7.4 और 7.5 को जोड़ा गया है और अनुवर्ती लंबों को फिर से तदनुसार संज्ञाकित किया गया है। (iii) पृष्ठ 8 पर "π" चिह्न वाली पाइटिप्पणी के बाव "π" चिह्न वाली पाइटिप्पणी जोड़ी गई है।	1980-04-30		
31. IS: 7760--1975 आगे योशा लगी इस्मात एस.ओ. 2239 की केबिनेटों (अल्मारियों) की विशिष्टि दिनांक 1978-08-03	संख्या 3 प्रैल 1980	खंड 8-2.1 के सूत्र के स्थान पर नया सूत्र दिया गया है।	1980-04-30		
32. IS: 7894- 1975 घटी के बांधों के स्था- पित्र विश्लेषण की गीति संहिता	—	संख्या 1 प्रैल 1980	खंड 3.4, सी-2.1, सी-2.2, 2.3 एवं सारणी 1 का संशोधन किया गया है।	1980-04-30	
33. IS: 8154-- 1976 पूर्वगठित कैलिंगम एस.ओ. 3821 सिलिकेट रोधन की विशिष्टि ( 650 से तक दिनांक 1979-11-24 के सामान के लिए )	संख्या 1 अप्रैल 1980	(i) खंड 4.2 (ए), 5.3, 5.6, 11.3, 11.16 एवं 11.17 के स्थान पर नये खंड दिये गये हैं। (ii) पृष्ठ 11 पर "*" चिह्न वाली पाइटिप्पणी के स्थान पर नई पाइ- टिप्पणी दी गई है।	1980-04-30		
34. IS : 8448--1977 घरेलू उपयोग के लिए ( स्टेप टाश्प ) स्ववालित लाइन बोल्ट- सा गुधारक की विशिष्टि	—	*संख्या 1 अप्रैल 1980	(i) खंड 3.1 के स्थान पर नया खंड दिया गया है। (ii) पृष्ठ 8, आँकड़ि 2, सेक्ष्यों की आ- वाय, परित 10—"k <sub>2</sub> " "के स्थान पर "k <sub>3</sub> " कर दें।	1980-04-30	
35. IS : 8737 ( भाग 1 )-- 1979 5 लीटर पानी की अमता से श्रधिक वाले तरल पेट्रो- लियम गैस ( एल पी जी ) सिलिंडरों में प्रयुक्त बाल्ब फिटिंगों की विशिष्टि : भाग 1 प्रति- स्थापन कार्य के लिए	—	संख्या 1 मार्च 1980	(i) खंड 3.1 के स्थान पर नया खंड दिया गया है। (ii) पृष्ठ 8, आँकड़ि 2, सेक्ष्यों की आ- वाय, परित 10—"k <sub>2</sub> " "के स्थान पर "k <sub>3</sub> " कर दें।	1980-03-31	

\*भारतीय मानक संस्था की प्रमाणन विहू योजना हेतु यह संशोधन 1980-06-01 से लागू होगा।

†भारतीय मानक संस्था प्रमाणन विहू योजना हेतु यह संशोधन 1980-9-01 से लागू होगा।

(1)	(2)	(3)	(4)	(5)	(6)
36. IS : 8829 - 1978 वायु प्रदूषण भव्यवन	हेतु ग्राम-प्रोसेस विज्ञान वै. इ. नक्नीकों के मार्गदर्शी सिद्धान्त	--	संख्या 1 प्रत्रेस 1980	पृष्ठ 18 पर घंड 3.2.2, 3.5.2, 4.5.3.1, 4.5.6 सारणी 4 और प्राकृति 3 को संशोधित किया गया है	1980-04-30

इन संशोधनों की प्रतियां भारतीय मानक संस्था, मानक भवन, 9 बहादुरशाह मार्ग, नई दिल्ली-110002 पौर प्रह्लदाबाद, बंगलौर, भोपाल, भुवने  
श्वर, बर्द्दई, कलकता, चौड़ीगढ़, हैदराबाद, जयपुर, कानपुर, मद्रास, पटना और लिवेन्ट्रम लिप्त इसके शास्त्र कार्यालयों से सी प्राप्त की जा सकती है।

[सं. नं. एम दे/13:5]

S.O. 5165.—In pursuance of regulation 4 of the Indian Standards Institution (Certification Marks) Regulations, 1955, the Indian Standards Institution, hereby, notifies that amendment(s) to the Indian Standard(s) given in the schedule hereto annexed have been issued under the powers conferred by the sub-regulation (1) of Regulation 3 of the said Regulations.

#### SCHEDULE

Sl. No. and title of the Indian Standard amended No.	No. and Date of Gazette Notification in which the establishment of the Indian Standard was notified	No. and Date of the Amendment	Brief particulars of the Amendment	Date from which the Amendment shall have effect	
(1)	(2)	(3)	(4)	(5)	(6)
1. IS:186-1965 Specification for mulls (revised)	S.O. 1992 dated 1766-07-02	No. 2 Feb, 1980	A new note has been added after Clause 2.2.1	1980-02-29	
2. IS:203-1972 Specification for dry batteries for flash lights (third revision)	S.O. 770 dated 1975-03-03	*No. 5 Apr. 1980	(i) Clause 0.5 has been substituted by a new one (ii) Tables 3, 4 and 5 have been amended	1980-04-30	
3. IS:220-1972 Specification for ferro-gallo tannate fountain pen ink (0.1 percent iron content) (second revision)	S.O. 423 1975-02-15	No. 3 March, 1910	In view of the publication of IS:8642-1977 'Specification for dyes for water-based writing inks' in which the requirements of dye, ink blue, have been covered, IS:2247-1962 'Specification for dye, ink blue for ink industry' has been withdrawn. Hence this amendment is being issued	1980-03-31	
4. IS:233 (Parts I to VI)-1978 Methods for determination of length parameters of cotton fibres (first revision)	—	No. 1 Mar. 1980	Table 1 at page 15 and Clause 4.2.4 have been amended	1980-03-31	
5. IS:517-1967 Specification for methanol (methyl alcohol) (first revision)	S.O. 1719 dated 1968-05-18	No. 1 Apr. 1980	Table 1 at page 5 has been amended and a new foot-note with '‡' mark has also been added after the table	1980-04-30	

\*for purposes of ISI Certification Marks Scheme, this Amendment shall come into force with effect from 1980-07-01.

(1)	(2)	(3)	(4)	(5)	(6)
6. IS:666, (Part II)-1972 Specification for jig bushes : Part II renewable drill bushes (second revision)	S.O. 423 dated 1975-02-15	No. 1 Apr. 1980	Table 1 at page 3 and table 2 at page 4 have been amended	1980-04-30	
7. IS:1200 (Part VI)-1974 Method of measurement of building and civil engineering works : Part VI Refractory work (second revision)	S.O. 988 dated 1976-03-06	No. 1 Feb. 1980	(i) Clause 3.10 has been amended. (ii) Foot notes with '*' and '†' marks at page 6 have been substituted by new ones.	1980-02-29 1980-02-29	
8. IS:1374-1979 Specification for poultry feeds (third revision)	—	No. 1 May, 1980	Table 1 at page 5 has been amended	1980-05-31	
9. IS:1879 (Parts I to X)-1975 Specification for malleable cast iron pipe fittings (first revision) : Part I General requirements	S.O. 313 dated 1979-01-27	No. 4 Apr. 1980	(i) Clauses 11 and 11.1 have been substituted by new ones (ii) Foot notes with '†' and '‡' marks at page 7 have been deleted (iii) Clause 6.1.1 has been added after Clause 6.1 (iv) Tables 1 and 2 have been amended	1980-04-30	
10. IS:1883-1975 Specification for metal shelving rack (adjustable type) (second revision)	—	No. 4 Mar. 1980	(i) Clauses 7.1.1, 7.1.2 and 7.1.3 have been substituted by new ones (ii) Foot notes with '§' and '॥' mark have been substituted by new ones (iii) New Clauses 8, 8.1, 8.2, 8.3, 8.4 and 8.5 have been added after Clause 7.3 and the subsequent clauses have been re-numbered accordingly (iv) (Page 11, foot-note with mark '**')-Add the following new foot-note after the existing:  ‘†Methods of test for ready mixed paints and enamels (second revision).’	1980-03-31	
11. IS:2032 (Part XXI)-1977 Graphical symbols used in electrotechnology : Part XXI Electric welding equipment	—	No. 1 Apr. 1980	Clauses 2.1.9, 2.1.11, 2.1.14, 2.1.15 and 2.1.16 have been amended.	1980-04-30	
12. IS:2052-1977 Specification for compounded feeds for cattle (third revision)	S.O. 3820 dated 1979-11-24	No. 1 May, 1980	Table 1 has been amended	1980-05-31	
13. IS:2428-1964 Application of carbides for machining, ranges of application and colour code	S.O. 2729 dated 1965-09-04	No. 1 Mar. 1980	(i) Clauses 0.3, 0.4, 0.5, 0.6 and 0.7 have been substituted by new ones. (ii) New clause 2.2 have been added after Clause 2.1	1980-03-31	

(1)	(2)	(3)	(4)	(5)	(6)
14.	IS:2974 (Part III)-1975 Code of practice for design & construction of machine foundations: Part III Foundations for rotary type machines (medium and high frequency) (first revision)	S.O. 3439 dated 1978-12-02	No. 1 Feb. 1980	(i) Clauses 0.2, 2.0, 3.2.2(b), 4.6.2.1 and 5.1.2.(j) have been amended (ii) Foot notes with '*' mark at page 5, with '†' mark at page 7, with '*' and '‡' marks at page 10 and with '*' mark at page 11 have been substituted by new ones (iii) Clauses 4.6.1 and 6.1.3.3 have been substituted by new ones (iv) Appendix C has been substituted by a new one.	1980-02-29
15.	IS:3313-1974 Specification for steel filing cabinets for general office purposes (first revision)	S.O. 1892 dated 1977-06-11	No. 3 Feb. 1980	(i) Clauses 5.10, 7.1, 7.2 and 7.2.1 have been substituted by new ones (ii) New Clauses 8, 8.1, 8.2, 8.3, 8.4 and 8.5 have been added after clause 7.3 and the subsequent clauses have been re-numbered accordingly	1980-02-29
16.	IS:3450-1976 Specification for carbon papers, handwriting (first revision)	S.O. 3823 dated 1979-11-24	No. 1 Feb. 1980	(i) (Page 4, clause 4.2, line 2)— Substitute 'IS:3413-1977 †' for 'IS:3413-1966†'. (ii) (Page 4, foot-note with '†' mark)—Substitute the following for the existing foot-note: 'Specification for base paper for carbon paper (first revision)'	1980-02-29
17.	IS:3455-1971 Gauging practice for plain work pieces (first revision)	S.O. 1265 dated 1974-05-25	No. 3 Apr. 1980	Clause 10.3.4 has been substituted by a new one	1980-04-30
18.	IS:3498-1975 Specification for metal tables (office type) (first revision)	S.O. 3530 dated 1977-11-19	No. 3 Apr. 1980	(i) Clauses 5.1, 5.2 and 5.3 have been substituted by new ones (ii) Foot-note with '†' and '  ' marks at page 7 have been substituted by new ones (iii) New clauses 6, 6.1, 6.2, 6.3, 6.4 and 6.5 have been added after Clause 5.5 and the subsequent clauses have been re-numbered accordingly (iv) A new foot note with '***' mark has been added at page 7 after foot-note with '  ' mark	1980-04-30
19.	IS:4157 (Part I)-1967 Code for the transport of livestock : Part I Transport of equines (horses, mules & donkeys) by rail, road & sea	S.O. 4080 dated 1967-11-18	No. 2 Feb. 1980	Clause 4.2 has been substituted by a new one	1980-02-29

(1)	(2)	(3)	(4)	(5)	(6)
20. IS:4328-1967 Specification for monocular dissecting microscope	S.O. 520 dated 1968-02-10	*No. 1 Dec. 1979	Clause 3.8 has been amended		1979-12-31
21. IS:4398-1972 Specification for carbon-chromium steel for the manufacture of balls, rollers and bearing races (first revision)	S.O. 2015 dated 1975-06-28	No. 3 Feb. 1980	Note of clause 8.1 has been substituted by a new one		1980-02-29
22. IS:4430-1979 Specification for mould steels (first revision)		No. 1 Apr. 1980	Table 2 has been substituted by a new one		1980-04-30
23. IS:4431-1978 Specification for carbon and carbon-manganese free-cutting steel (first revision)		No. 1 Apr. 1980	Tables 1 and 5 have been amended		1980-04-30
24. IS:4874-1968 Specification for edible cotton seed flour (expeller pressed)	S.O. 2330 dated 1969-06-14	No. 1 Mar. 1980	(i) Table 1 has been amended (ii) Appendix C has been added after Appendix B.		1980-03-31
25. IS:6571-1972 Specification for non-folding wheel chairs, institutional model	S.O. 2241 dated 1975-08-31	No. 1 Mar. 1980	(i) Clauses 4.1, 5.3, 6.1 and table 1 have been substituted by new ones. (ii) Clauses 5.1, 6.2, 6.3, 6.6, 6.7 and 6.8 have been amended. (iii) Clause 5.5.2 has been added after clause 5.5.1 (iv) New matter have been added after Clauses 5.6 and 6.4.		1980-03-31
26. IS:7098 (Part I)-1977 Specification for crosslinked polyethylene insulated PVC sheathed cables: Part I For working voltages up to and including 1100 volts		†No. 1 Feb. 1980	(i) Informal tables under Clauses 0.4, 8.1 and 8.3 have been amended (ii) Clause 0.7 has been amended (iii) (Page 5, clause 1.4)—Delete		1980-02-29
27. IS:7119-1973 Specification for cotton cloth for <i>pagris</i> and <i>pags</i>	S.O. 2939 dated 1975-09-06	No. 2 Feb. 1980	Note of clause 2.2 has been substituted by a new one		1980-02-29
28. IS:7452-1974 Specification for hot rolled steel sections for doors, windows and ventilators	S.O. 3081 dated 1977-10-08	No. 2 Feb. 1980	(i) (Page 6, Fig. 2, diagram for 'Section 75')—Delete. (ii) (Page 14, Appendix A, informal table, SI No. 3)—Delete and renumber the subsequent items accordingly. (iii) Clause 5.2.1 has been added after clause 5.2		1980-02-29
29. IS:7466-1974 Specification for rubber gaskets for pressure cookers	S.O. 1092 dated 1977-04-09	No. 2 Mar. 1980	Table 1 has been amended		1980-03-31

\*For purposes of ISI Certification Marks Scheme, this amendment shall come into force with effect from 1980-09-01

†For purposes of ISI Certification Marks Scheme; this amendment shall come into force with effect from 1980-06-0

(1)	(2)	(3)	(4)	(5)	(6)
30. IS:7503 (Part II)-1976	Glossary of terms used in rubber industry Part II	—	No. 1 Feb. 1980	Clause 3.13 has been substituted by a new one	1980-02-29
31. IS:7760-1975	Specification for steel glass-front cabinets	S.O. 2239 dated 1978-08-05	No. 3 Apr. 1980	(i) Clauses 6.1.1, 6.1.2, 6.1.3 and foot notes with '§' and 'π' marks at page 8 have been substituted by new ones. (ii) Clause 7, 7.1, 7.2, 7.3, 7.4 and 7.5 have been added after clause 6.2 and the Subsequent clauses have been re-numbered accordingly (iii) A new foot note with 'π' mark has been added at page 8 after foot-note with 'π' mark.	1980-04-30
32. IS:7894-1975	Code of practice for stability analysis of earth dams	—	No. 1 Apr. 1980	Formula of clause E-2.1 has been substituted by a new one	1980-04-30
33. IS:8154-1976	Specification for pre-formed calcium silicate insulation (for temperature up to 650°C)	S.O. 3821 dated 1979-11-24	No. 1 Apr. 1980	Clauses 3.4, C-2.1, C-2.2, 2.3 and table 1 have been amended	1980-04-30
34. IS:8448-1977	Specification for automatic line voltage correctors (Step type) for domestic use	—	*No. 1 Apr. 1980	(i) Clauses 4.2(a), 5.3, 5.6, 11.3, 11.16 and 11.17 have been substituted by new ones. (ii) Foot note with '*' mark at page 11 has been substituted by a new one	1980-04-30
35. IS:8737 (Part I)-1979	Specification for valve fittings for use with liquified petroleum gas (LPG) cylinders of more than 5 litre water capacity; Part I Valve fittings for replacement purposes	—	No. 1 Mar. 1980	(i) Clause 3.1 has been substituted by a new one (ii) (Page 9, Fig. 2, explanation to legends, line 10)-Substitute 'K <sub>3</sub> ' for 'K <sub>2</sub> '.	1980-03-31
36. IS:8829-1978	Guidelines for micrometeorological techniques in air pollution studies	—	No. 1 Apr. 1980	Clauses 3.2.2, 3.5.2, 4.5.3.1, 4.5.6, Table 4 and Fig. 3 at page 18 have been amended	1980-04-30

Copies of these Amendments are available with the Indian Standards Institution, Manak Bhavan, 9 Bahadur Shah Zafar Marg, New Delhi-110002 and also from its branch offices at Ahmedabad, Bangalore, Bhopal, Bhubaneshwar, Bombay, Calcutta, Chandigarh, Hyderabad, Jaipur, Kanpur, Madras, Patna and Trivandrum.

\*For purposes of ISI Certification Marks Scheme ; this amendment shall come into force with effect from 1980-09-01

[No. CMD/13-:5]

नई विली, 1985-09-25

का. नं. 5166.—भारतीय मानक संस्था (प्रमाणन चिह्न) विनियम 4 के अनुसार आमा संस्था द्वारा यह अधिसूचित किया जाता है कि नीचे अनुसूची में जिन मानकों के संशोधन वर्णित किये गये हैं उक्त विनियमों के विनियम 3 के उपविनियम (1) के अधीन प्रदत्त शक्तियों के अनुसार जारी किये गए हैं:—

## अनुसूची

क्र. सं. संशोधित भारतीय मानक की संख्या गणक अधिसूचना की संख्या संशोधन की संख्या संशोधन का संक्षिप्त विवरण संशोधन लागू होने की तिथि

शीर पदनाम जिसमें आमा का निर्धारण और तिथि प्रधिसूचित हुआ था

1	2	3	4	5	6
1. IS : 1660 (भाग 1)---1982 पिटवां एलु- मिनियम बर्टनों के विशिष्टि: आना पकाने, आना परोसने, रखने और बैरिंग के बर्टन (दूसरा पुनरीक्षण)	--	*संख्या 2 जुलाई 1984	(पेज 21, खंड 9.1) बर्टनान खंड 1980-07-31 की जगह निम्नलिखित खंड जोड़े: 9.1 प्रत्येक बर्टन की बाहरी सतह प्रथमा हुये पर निर्माता का नाम प्रथमा पंजीकृत व्यापारिक नाम और सारणी 1 में निर्विष्ट सांकेतिक मोटाई की सुस्पष्ट और अभिन्न मुहर लगाई जाए।		
2. IS : 2580---1982 सीमेंट पैकिंग के लिए पटसन के बोरों की विशिष्टि	--	*संख्या 2 जनवरी 1985	यह संशोधन हिरेकल सिलाई के लिए 1985-01-31 प्रयुक्त धागे का 380x3 टेक्स की जगह 300x3 टेक्स काउंट निर्विष्ट करने के लिए जारी किया जा रहा है। सिलाई धागे का द्रव्यमान निकालने के लिए धागे की विचारार्थ लम्बाई हिरेकल की टांका लम्बाई से 9.5 गुणा और शिरोपरि सिले हुए धैरों की टांका से लम्बाई से 7 गुणा ली गई है उपर्युक्त को ध्वनि में रखते हुए हिरेकल सिलाई और शिरो परि सिलाई किए गए धैरों का वजन संगत एक ही धारा है और यह इस संशोधन में वर्णिया गया है। निर्माण में आने वाली कठिनाईयों दूर करने के लिए बाल्ब परीप के साइज के लिए अधिक क्षूट दी गई है।		
3. IS : 3255---1980 चिकित्सा उपयोग की सिरिजों की सामान्य अपेक्षाएं (पहला पुनरीक्षण)	--	*संख्या 1 अगस्त 1984	(1) (पृष्ठ 6, खंड 7; 1, अंतिम वाक्य) बर्टनान सामग्री की जगह निम्न- लिखित सामग्री जोड़ें:— “पिट्सन और टिप की फि- निय अच्छी चिकित्सी विसी सतह वाली हो और सतही दोषों जैसे पिट, एपर लाइन हाई स्पाट प्रथमा पेषण चिह्नों से मुक्त हों। बैरल की प्रत्यक्षी सतह साफ प्रथमा ग्राउंड फिनिश की गई हो उपरोक्त की भाँति सतही दोषों से मुक्त हो”।		1984-08-31

\*भा मा संस्था की प्रमाणन चिह्न योजना के प्रयोजनों हेतु यह संशोधन 1984-11-16 से लागू होगा।

\*भा मा संस्था की प्रमाणन चिह्न योजना के प्रयोजनों के लिए यह संशोधन 1985-02-01 से लागू होगा।

\*भा मा संस्था प्रमाणन मुहर योजना के प्रयोजनों के लिए यह संशोधन 1984-11-01 से लागू होगा।

1	2	3	4	5	6
				(2) (पृष्ठ 6 भाँड 7, खंड 7.2, प्रतिम से पहला वाक्य) -- वर्तमान सामग्री की जगह निम्नलिखित सामग्री जोड़ें:—	
4. IS: 3237--1980 श्वरस्तवक सिर्जिंगों की विशिष्टि, घोड़ी कामता की (पहला पुनरीक्षण)		*संख्या 1 जुलाई 1984		“पिस्टन के निकटस्थ सिरे को इस प्रकार उपयुक्त प्राकार बिया जाए कि यह सपाठ धर्यवा अवताल सतह वाले एक बटन का रूप धारण कर ले, ताकि प्रांगठे द्वारा इसे बचाने में सुविधा हो”।	
			(1) (पृष्ठ 6, सारणी 1, कालम 5, 1984-07-31 1.00 मिलि द्व्यूब्रैक्यूलिन सिर्जिंग के सामने, परित) -- 0.02 के स्थान पर 0.01 धर्यवा 0.02 जोड़ें।	(2) (पृष्ठ 7, खंड 3.2.3) -- 3.2.3 के बाद निम्नानुसार एक नया खंड जोड़ें: “3.2.4 1 मिलि इंसुलिन सिर्जिंगों को 40 या 80 यूनिट वशमि के लिए व्यक्ति किया जा सकता है”।	

[स. सी एम डी/13 : 5]  
बी. एन. सिंह, प्रपर महानिदेशक

\*भा मा संस्था प्रमाणन चिह्न योजना के प्रयोगनों हेतु यह संशोधन 1984-11-16 से लागू होगा।

INDIAN STANDARDS INSTITUTION  
New Delhi, 1985-09-25

S.O. 5166:—In pursuance of regulation 4 of the Indian Standards Institution (Certification Marks) Regulations, 1955, the Indian Standards Institution, hereby, notifies that amendments to the Indian Standards given in the Schedule hereto annexed have been issued under the powers conferred by the sub-regulation (1) of Regulation 3 of the said Regulations.

THE SCHEDULE

Sl. No. and title of the Indian Standard amended No.	No. and Date of Gazette in which the establishment of the Indian Standard was notified (1)	No. and Date of the amendment in which the establishment of the Indian Standard was notified (2)	Brief Particulars of the Amendment (3)	Date from which the amendment shall have effect (4)	(5)	(6)
1. IS : 1660(Pt I)--1982 Specification for wrought aluminium utensils cooking, table, serving, storing and baking utensils (second revision)		*No. 2 July 1984	(Page 21, Clause 9.1)—Substi-1984-07-31 tute the following for the existing clause : 9.1 Each Utensil shall be legible and indelibly stamped on the outside surface or handle with the manufacturer's name or registered trade- mark and the nominal thick- ness specified in Table 1.			

\*For purposes of ISI Certification Marks Scheme; this amendment shall come into force with effect from 1984-11-16

(1)	(2)	(3)	(4)	(5)	(6)
2. IS : 2580—1982 Specification for jute sacking bags for packing cement (second revision)		*No. 2 Jan 1985	This Amendment is being issued to specify the count of stitching yarn for herakle stitch as $300 \times 3$ tex in place of $380 \times 3$ tex. Also for calculation of the mass of stitching yarn the length of yarn taken into consideration has been used as 9.5 times the stitch length for herakle and 7 times the stitch length in case of overhead sewn bags. Taking the above into consideration the weight of herakle stitch and overhead stitched bags, comes to almost same and this has been reflected in this amendment. Also a wider tolerance has been specified for size of valve flap to overcome the manufacturing difficulties.		1985-01-31
3. IS : 3235—1980 General Requirements for syringes for medical use (first revision)	..	**No. 1 Aug 1984		<p>(i) (Page 6, Clause 7.1, Last Sentence)—Substitute the following for the existing matter :</p> <p>“The finish of the piston and the tip shall be of fine smooth ground finish and free from surface defects such as pits, air lines, high spots or grind marks. The inside of the barrel may be clear or ground finish and free from surface defects as above.”</p> <p>(ii) Page 6, and 7, Clause 7.2, Last but one sentence)—Substitute the following for the existing matter:</p> <p>“The proximal end of the piston shall be suitably shaped to form a button with flat or concave surface to facilitate the thumb passing it”</p>	1984-08-31

\*For purposes of ISI Certification Marks Scheme; this amendment shall come into force with effect from 1985-02-01.

\*\*For purposes of ISI Certification Marks Scheme; this amendment shall come into force with effect from 1984-11-01.

(1)	(2)	(3)	(4)	(5)	(6)
4. IS : 3237—1980 Specification for hypodermic syringes, small capacity (first revision)	—	*No. 1 July 1984	(i) Page 6, Table 1, Col. 5, against 1.00 ml. tuberculin syringes, third row)—Substitute '0.01 or 0.02' for '0.02' (ii) (Page 7, Clause 3.2.3)—Add a new clause after 3.2.3 as follows : '3.2 4 1 ml Insuline syringe may be marked to indicate 40 or 80 units'		1984-07-31

[No. CMD 13 : 5]

B.N. SINGH, Additional Director General

\*For purposes of ISI Certification Marks Scheme; this amendment shall come into force with effect from 1984-11-01.

## संचार मंत्रालय

(पूरसंचार बोर्ड)

नई दिल्ली, 31 अक्टूबर, 1985

का. अ. 5167.—स्थायी प्रादेश संख्या 627, दिनांक 8 मार्च, 1980 द्वारा लागू किये गये भारतीय तार नियम, 1951 के नियम 434 के अंग-III के पैरा (क) के अनुसार महानिदेशक, पूरसंचार विभाग ने महाबलिपुरम टैलीफोन केन्द्र में दिनांक 16-11-1985 से प्रमाणित दर प्रणाली लागू करने का निश्चय किया है।

[सं. 5-20/85/पी एच बी]

## MINISTRY OF COMMUNICATIONS

(Department of Telecommunication)

New Delhi, the 31st October, 1985

S.O. 5167.—In pursuance of para (a) of Section III of Rule 434 of Indian Telegraph Rules, 1951, as introduced by S.O. No. 627 dated 8th March, 1960, the Director General, Department of Telecommunication, hereby specifies 16-11-1985 as the date on which the Measured Rate System will be introduced in Mahabalipuram Telephone Exchange, Tamil Nadu Circle.

[No. 5-20/85-PHB]

नई दिल्ली, 1 नवम्बर, 1985

का. अ. 5168.—स्थायी प्रादेश संख्या 627, दिनांक 8 मार्च, 1980 द्वारा लागू किये गये भारतीय तार नियम, 1951 के नियम 434 के अंग-III के पैरा (क) के अनुसार महानिदेशक, पूरसंचार विभाग ने ईर्ष्योर्जा टैलीफोन केन्द्र में दिनांक 16-11-1985 से प्रमाणित दर प्रणाली लागू करने का निश्चय किया है।

[संख्या 5-22/85/पी एच बी]  
के० पी० शर्मा, सहायक महानिदेशक  
(पी० एच०बी०)

New Delhi, the 1st November, 1985

S.O. 5168.—In pursuance of para (a) of Section III of Rule 434 of Indian Telegraph Rules, 1951, as introduced by S.O. No. 627 dated 8th March, 1960, the Director General, Department of Telecommunication, hereby specifies 16-11-1985 as the date

on which the Measured Rate System will be introduced in Eathamozhi Telephone Exchange Tamil Nadu Circle.

[No. 5-22/85-PHB]

K. P. SHARMA, Assistant Director General (PHB)

## धर्म मंत्रालय

नई दिल्ली, 18 अक्टूबर, 1985

का. अ. 5169.—केन्द्रीय सरकार को यह प्रतीत होता है कि भैसर्म महाराजा हुंजरो बर्से, श्री लक्ष्मी बलन मिल्स कंपनी, सैकिंड फ्लॉर, डा. ई. मोसेस रोड, बम्बई-11 नामक स्थापन के संबंध नियोजक बोर्ड कर्मचारियों को बहुसंख्या इस बासी पर सहमत हो गई है कि कर्मचारों भविष्य निश्च और प्रकार उपबंध अधिनियम, 1952 (1952 का 19 के उपबंध उक्त स्थापन को लागू करें जाने चाहिए।

अतः केन्द्रीय सरकार, उक्त अधिनियम को धारा 1 की उपधारा-(4) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए उक्त अधिनियम के उपबंध उक्त स्थापन को लागू करता है।

[सं. एस. 35018/17/85-एस. एस.-2]

## MINISTRY OF LABOUR

New Delhi, 18th Oct., 1985

S.O. 5169.—Whereas it appears to the Central Govt. that the employer and the majority of the employees in relation to the establishment known as M/s. Maharaja Hosiery Works, Shri Laxmi Woollen Mills Compound Hind Floor D.R. E. Moses Road, Bombay-11 have agreed that the Provisions of the Employees' Provident Funds and Miscellaneous Provisions Act, 1952 ((19 of 1952), should be made applicable to the said establishment;

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by Sub-Section (4) of Section 1 of the said Act, the Central Government hereby applies the Provisions of the said Act to the said establishment.

[No. S-35018/17/85-SS. II]

का. अ. 5170.—केन्द्रीय सरकार को यह प्रतीत होता है कि भैसर्म स्वीट अर्ट प्रिंटर्स मर्टे उचीग मयन, जा० सहिं, मराठे मर्ज, बम्बई-25 नामक स्थापन के संबंध नियोजक बोर्ड कर्मचारियों को बहुसंख्या

इस बात पर सहमत हो गई है कि कर्मचारी भविष्य निधि और प्रकार्ण उपबंध अधिनियम, 1952 (1952 का 19) के उपबंध उक्त स्थापन को लागू किए जाने चाहिए।

अतः केन्द्रीय सरकार, उक्त अधिनियम की धारा-1 की उपधारा-(4) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए उक्त अधिनियम के उपबंध उक्त स्थापन को लागू करती है।

[सं. एस-35018/16/एस. एम.-2]

S.O. 5170.—Whereas it appears to the Central Govt. that the employer and the majority of the employees in relation to the establishment known as M/s. Swift Art Printers Marathi Udyog Bhavan, APPA, Saheb Marathe Marg, Bombay-25 have agreed that the Provisions of the Employees' Provident Funds and Miscellaneous Provisions Act, 1952 (19 of 1952) should be made applicable to the said establishment;

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by Sub-Section (4) of Section 1 of the said Act, the Central Government hereby applies the Provisions of the said Act to the said establishment.

[No. S-35018/16/85-SS. II]

का. आ. 5171.—केन्द्रीय सरकार को यह प्रतीत होता है कि मैसर्स ईन्यु उद्योग 24, नं. टी. रोड, कामरठी, कलकत्ता-58 और कार्यालय 117-ए, वित्तनगर प्लैन्ट, कलकत्ता-73 में स्थित नामक स्थापन के संबंध नियोजक और कर्मचारियों को बहुसंख्या इप बात पर सहमत हो गई है कि कर्मचारी भविष्य निधि और प्रकार्ण उपबंध अधिनियम, 1952 (1952 का 19) के उपबंध उक्त स्थापन को लागू किए जाने चाहिए।

अतः केन्द्रीय सरकार, उक्त अधिनियम की धारा-1 की उपधारा-(4) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए उक्त अधिनियम के उपबंध उक्त स्थापन को लागू करती है।

[सं. एस-35017/94/85-एस. एम.-2]

S.O. 5171.—Whereas it appears to the Central Govt. that the employer and the majority of the employees in relation to the establishment known as M/s. Indu Udyog, 24 B.T. Road, Kamarhatty, Calcutta-58 including its office at 117-A, Chittaranjan Avenue, Calcutta-73, have agreed that the Provisions of the Employees' Provident Funds and Miscellaneous Provisions Act, 1952 (19 of 1952), should be made applicable to the said establishment;

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by Sub-Section (4) of Section 1 of the said Act, the Central Government hereby applies the Provisions of the said Act to the said establishment.

[No. S-35017/94/85-SS.II]

का. आ. 5172.—केन्द्रीय सरकार को यह प्रतीत होता है कि मैसर्स बर्मन मेडिकल स्टोर, 42, स्ट्रैन्ड रोड, कलकत्ता-7 नामक स्थापन के संबंध नियोजक और कर्मचारियों को अधिकारीय इप बात पर नहमत हो गई है कि कर्मचारी भविष्य निधि और प्रकार्ण उपबंध अधिनियम, 1952 (1952 का 19) के उपबंध उक्त स्थापन को लागू किए जाने चाहिए।

अतः केन्द्रीय सरकार, उक्त अधिनियम की धारा-1 की उपधारा-(4) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए उक्त अधिनियम के उपबंध उक्त स्थापन को लागू करती है।

[सं. एस-35017/95/85-एम. एम.-2]

S.O. 5172.—Whereas it appears to the Central Govt. that the employer and the majority of the employees in relation to the establishment known as M/s. Burman Medical Store, 42, Strand Road, Calcutta-7 have agreed that the provisions of the Employees' Provident Funds and Miscellaneous Provisions Act, 1952 (19 of 1952), should be made applicable to the said establishment;

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by Sub-Section (4) of Section 1 of the said Act, the Central Government hereby applies the Provisions of the said Act to the said establishment.

[No. S-35017/95/85-SS. II]

का. आ. 5173.—केन्द्रीय सरकार को यह प्रतीत होता है कि मैसर्स शुक्ल सोप मिल, सॉ-2/1, मायपुर पर फैज-2, नई दिल्ली-27 नामक स्थापन के संबंध नियोजक और कर्मचारियों को बहुसंख्या इस बात पर सहमत हो गई है कि कर्मचारी भविष्य निधि और प्रकार्ण उपबंध अधिनियम, 1952 (1952 का 19) के उपबंध उक्त स्थापन को लागू किए जाने चाहिए।

अतः केन्द्रीय सरकार, उक्त अधिनियम की धारा-1 की उपधारा-(4) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए उक्त अधिनियम के उपबंध उक्त स्थापन को लागू करती है।

[सं. एस-35019/382/85-एस.एस.-2]

S.O. 5173.—Whereas it appears to the Central Govt. that the employer and the majority of the employees in relation to the establishment known as M/s. Shukla Soap Mills, C-2/1, Mayapuri, Phasc-II, New Delhi-27 have agreed that the Provisions of the Employees' Provident Funds and Miscellaneous Provisions Act, 1952 (19 of 1952), should be made applicable to the said establishment;

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by Sub-Section (4) of Section 1 of the said Act, the Central Government hereby applies the Provisions of the said Act to to the said establishment

[No. S-35019/382/85-SS. II]

का. आ. 5174.—केन्द्रीय सरकार को यह प्रतीत होता है कि मैसर्स हमोसेन्स प्राइवेट लिमिटेड, 18, वेनिपर स्ट्रॉट, मद्रास-1 नामक स्थापन के संबंध नियोजक और कर्मचारियों को बहुसंख्या इस बात पर सहमत हो गई है कि कर्मचारी भविष्य निधि और प्रकार्ण उपबंध अधिनियम, 1952 (1952 का 19) के उपबंध उक्त स्थापन को लागू किए जाने चाहिए।

अतः केन्द्रीय सरकार, उक्त अधिनियम की धारा-1 की उपधारा-(4) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए उक्त अधिनियम के उपबंध उक्त स्थापन को लागू करती है।

[सं. एस-35019/383/85-एस. एम.-2]

S.O. 5174.—Whereas it appears to the Central Govt. that the employer and the majority of the employees in relation to the establishment known as Messrs Hamosens Apparels Private Limited, 18, Vannir Street, Madras-1 have agreed that the Provisions of the Employees' Provident Funds and Miscellaneous Provisions Act, 1952 (19 of 1952), should be made applicable to the said establishment.

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by sub-section (4) of Section 1 of the said Act, the Central Government hereby applies the Provisions of the said Act to the said establishment.

[No. S-35019/383/85-SS. II]

का. आ. 5175.—केन्द्रीय सरकार को यह प्रतीत होता है कि मैसर्स शान्तपाल हैडस्ट्रेज, 73, सेवा गली, तिल्जुलालगां, नौर्य अरकाट कास्ता, मसिनगर नामक स्थापन के संबंध नियोजक और कर्मचारियों को बहुसंख्या इस बात पर सहमत हो गई है कि कर्मचारी भविष्य निधि और प्रकार्ण उपबंध अधिनियम, 1952 (1952 का 19) के उपबंध उक्त स्थापन को लागू किए जाने चाहिए।

अतः केन्द्रीय सरकार, उक्त अधिनियम की धारा-1 की उपधारा-(4) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए उक्त अधिनियम के उपबंध उक्त स्थापन को लागू करती है।

[सं. एस-35019/384/85-एस.एस.-2]

S.O. 5175.—Whereas it appears to the Central Govt. that the employer and the majority of the employees in relation to the establishment known as Messrs Shanmuga Industries, 73, Seda Street, Trivannamalai, North Arcot District Tamil Nadu have agreed that the Provisions of the Employees' Provident Funds and Miscellaneous Provisions Act, 1952 (19 of 1952), should be made applicable to the said establishment.

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by Sub-section (4) of Section 1 of the said Act, the Central Government hereby applies the Provisions of the said Act to the said establishment.

[No. S-35017/384/85-SS. II]

का. आ. 5176.—केन्द्रीय सरकार को यह प्रतीत होता है कि मैसर्स रामसन एंड संस, नं. 157, लिंग्ही चेटी गली, मद्रास-1 नामक स्थापन के संबद्ध नियोजक और कर्मचारियों की बहुसंख्या इस बात पर सहमत हो गई है कि कर्मचारी भविष्य निधि और प्रकोर्ण उपबंध अधिनियम, 1952 (1952 का 19) के उपबंध उक्त स्थापन को लागू किए जाने चाहिए।

अतः केन्द्रीय सरकार, उक्त अधिनियम की धारा-1 की उपधारा-(4) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए उक्त अधिनियम के उपबंध उक्त स्थापन को लागू करती है।

[सं. एस-35019/385/85-एस.एस.-2]

S.O. 5176.—Whereas it appears to the Central Govt. that the employer and the majority of the employees in relation to the establishment known as Messrs Ramson and Sons, No. 157, Linghi Chetty Street, Madras-1 have agreed that the Provisions of the Employees' Provident Funds and Miscellaneous Provisions Act, 1952 (19 of 1952), should be made applicable to the said establishment.

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by Sub-section (4) of Section 1 of the said Act, the Central Government hereby applies the Provisions of the said Act to the said establishment.

[No. S-35019/385/85-SS. II]

नई दिल्ली, 22 अक्टूबर, 1985

का. आ. 5177.—केन्द्रीय सरकार को यह प्रतीत होता है कि मैसर्स कुमुरानन नं. 12, नेश्वरा रोड, टी. नगर, मद्रास-600017 नामक स्थापन के संबद्ध नियोजक और कर्मचारियों की बहुसंख्या इस बात पर सहमत हो गई है कि कर्मचारी भविष्य निधि और प्रकोर्ण उपबंध अधिनियम, 1952 (1952 का 19) के उपबंध उक्त स्थापन को लागू किए जाने चाहिए।

अतः केन्द्रीय सरकार, उक्त अधिनियम की धारा-1 की उपधारा-(4) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए उक्त अधिनियम के उपबंध उक्त स्थापन को लागू करती है।

[सं. एस-35019/386/85 एस.एस.-2]

New Delhi, the 22nd October, 1985

S.O. 5177.—Whereas it appears to the Central Government that the employer and the majority of the employees in relation to the establishment known as Messrs Kumurans No. 12, Nageswara Rao Road, T. Nagar, Madras-600017, have agreed that the Provisions of the Employees' Provident Funds and Miscellaneous Provisions Act, 1952 (19 of 1952), should be made applicable to the said establishment.

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by Sub-section (4) of Section 1 of the said Act, the Central Government hereby applies the Provisions of the said Act to the said establishment.

[No. S-35019/386/85-SS. II]

का. आ. 5178.—केन्द्रीय सरकार को यह प्रतीत होता है कि मैसर्स अलवद मार्केटिंग सर्विसेस, 22 डा. राधाकृष्णन सलाई, मद्रास-600004 नामक स्थापन के संबद्ध नियोजक और कर्मचारियों की बहुसंख्या इस बात पर सहमत हो गई है कि कर्मचारी भविष्य निधि और प्रकोर्ण उपबंध अधिनियम, 1952 (1952 का 19) के उपबंध उक्त स्थापन को लागू किए जाने चाहिए।

अतः केन्द्रीय सरकार, उक्त अधिनियम की धारा-1 की उपधारा-(4) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए उक्त अधिनियम के उपबंध उक्त स्थापन को लागू करती है।

[सं. एस-35019/387/85-एस.एस.-2]

S.O. 5178.—Whereas it appears to the Central Government that the employer and the majority of the employees in relation to the establishment known as Messrs Alved Marketing Services 22, Dr. Radhakrishnan Salai, Madras-600004 have agreed that the Provisions of the Employees' Provident Funds and Miscellaneous Provisions Act, 1952 (19 of 1952), should be made applicable to the said establishment.

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by Sub-section (4) of Section 1 of the said Act, the Central Government hereby applies the Provisions of the said Act to the said establishment.

[No. S-35019/387/85-SS. II]

का. आ. 5179.—केन्द्रीय सरकार को यह प्रतीत होता है कि मैसर्स—साराथी इंडस्ट्रीज, 340-ए, ओल्ड महाबलीपुरम रोड, नेहरू नगर, पेरुंगुडी, मद्रास-96 नामक स्थापन के संबद्ध नियोजक और कर्मचारियों की बहुसंख्या इस बात पर सहमत हो गई है कि कर्मचारी भविष्य निधि और प्रकोर्ण उपबंध अधिनियम, 1952 (1952 का 19) के उपबंध उक्त स्थापन को लागू किए जाने चाहिए।

अतः केन्द्रीय सरकार, उक्त अधिनियम की धारा-1 की उपधारा-(4) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए उक्त अधिनियम के उपबंध उक्त स्थापन को लागू करती है।

[सं. एस-35019/388/85 एस.एस.-2]

S.O. 5179.—Whereas it appears to the Central Government that the employer and the majority of the employees in relation to the establishment known as Messrs Sarathy Industries, 340-A, Old Mahabalipuram Road, Nehru Nagar, Perungudi, Madras-96 have agreed that the Provisions of the Employees' Provident Funds and Miscellaneous Provisions Act, 1952 (19 of 1952), should be made applicable to the said establishment.

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by Sub-section (4) of Section 1 of the said Act, the Central Government hereby applies the Provisions of the said Act to the said establishment.

[No. S-35019/388/85-SS. II]

का. आ. 5180.—केन्द्रीय सरकार को यह प्रतीत होता है कि मैसर्स साराद इंडस्ट्रीज फॉर्मेस प्रा. लिमिटेड, प्लॉट नं. 1, साराद इंडस्ट्रीज कांपनीस, रोड हिल्स रोड, ओरेशावाम, मद्रास-53 नामक स्थापन के संबद्ध नियोजक और कर्मचारियों की बहुसंख्या इस बात पर सहमत हो गई है कि कर्मचारी भविष्य निधि और प्रकोर्ण उपबंध अधिनियम, 1952 (1952 का 19) के उपबंध उक्त स्थापन को लागू किए जाने चाहिए।

अतः केन्द्रीय सरकार, उक्त अधिनियम की धारा-1 की उपधारा-(4) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए उक्त अधिनियम के उपबंध उक्त स्थापन को लागू करती है।

[सं. एस-35019/389/85-एस.एस.-2]

S.O. 5180.—Whereas it appears to the Central Government that the employer and the majority of the employees in relation to the establishment known as Messrs Sarad Industrial furnaces private Ltd., Plot No. 1, Sarad Industrial

Complex, Red Hills Road, Oregadum, Madras-53, have agreed that the Provisions of the Employees' Provident Funds and Miscellaneous Provisions Act, 1952 (19 of 1952), should be made applicable to the said establishment.

Now, therefore, in exercise of the powers conferred of Sub-section (4) of Section 1 of the said Act, the Central Government hereby applies the Provisions of the said Act to the said establishment.

[No. S-35019/389/85-SS. II]

का. अ. 5181—केन्द्रीय सरकार को यह प्रमेत होता है कि मैरम्म ईस्टर्न रबर इंस्ट्रीज़, नं. 1-5, ईस्टर्न इंस्ट्रीज़, मद्रास-60 नामक संस्थान के संबद्ध नियोजक बोर्ड कर्मचारियों की बहुसंख्या इग बात पर महसूस हो गई है कि कर्मचारों भविष्य निधि और प्रकार्ती उपचंथ अधिनियम, 1952 (1952 का 19) के उपचंथ उक्त स्थापन को नहीं किया जाने चाहिए।

अतः केन्द्रीय सरकार उक्त अधिनियम को धारा-1 की उपाया-(4) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए उक्त अधिनियम के उपचंथ उक्त स्थापन को लागू करते हैं।

[म. नं. 35019/390/85-एम.एम.-2]

S.O. 5181.—Whereas it appears to the Central Government that the employer and the majority of the employees in relation to the establishment known as Messrs Eastern Rubber Industries, No. 1-5, Industrial Estate, Madras-60, have agreed that the Provisions of the Employees' Provident Funds and Miscellaneous Provisions Act, 1952 (19 of 1952), should be made applicable to the said establishment;

Now, therefore, in exercise of the powers conferred of Sub-section (4) of Section 1 of the said Act, the Central Government hereby applies the Provisions of the said Act to the said establishment.

[No. S-35019/390/85-SS. II]

का. अ. 5182—केन्द्रीय सरकार को यह प्रमेत होता है कि मैरम्म जावरिलाल शांतीलाल प्लॉट कंपनी कॉटन मर्चेन्ट्स प्लाट नं. 5, शॉप नं. 38, राजेंद्रागंज, रायचुर नामक स्थापन के संबद्ध नियोजक बोर्ड कर्मचारियों की बहुसंख्या इग बात पर महसूस हो गई है कि कर्मचारी भविष्य निधि और प्रकार्ती उपचंथ अधिनियम, 1952 (1952 का 19) के उपचंथ उक्त स्थापन को लागू किया जाने चाहिए।

अतः केन्द्रीय सरकार, उक्त अधिनियम को धारा-1 की उपाया-(4) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए उक्त अधिनियम के उपचंथ उक्त स्थापन को लागू करते हैं।

[म. नं. 35019/391/85-एम.एम.-2]

ए.कॉ. मद्रास अवधि, गनिव

S.O. 5182.—Whereas it appears to the Central Government that the employer and the majority of the employees in relation to the establishment known as Messrs Jawrilal Shantilal and Company Cotton Merchants, Plot No. 5, Shop No. 38, Rajendragunj, Raichur have agreed that the Provisions of the Employees' Provident Funds and Miscellaneous Provisions Act, 1952 (19 of 1952), should be made applicable to the said establishment;

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by Sub-section (4) of Section 1 of the said Act, the Central Government hereby applies the Provisions of the said Act to the said establishment.

[No. 35019/391/85-SS. II]  
A. K. BHATTARAI, Under Secy.

नई दिल्ली, 25 अक्टूबर, 1985

का. अ. 5183—प्रौद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 (1947 का 14) की धारा 17 के अनुसारण में, केन्द्रीय सरकार ईस्टर्न कोल फोर्म लिमिटेड की शामपुर-ए कॉमिटी के प्रबंधनत्र से संबद्ध नियोजकों और उनके कर्मचारों के बीच अनुचंथ में निविष्ट औद्योगिक विवाद में केन्द्रीय सरकार औद्योगिक अधिकरण, नं. 2 धनबाद के प्लाट को प्रकाशित करती है, जो केन्द्रीय सरकार को 16 अक्टूबर, 1985 को प्राप्त हुआ था।

991 GT/85-7

New Delhi, the 16th October, 1985

S.O. 5183.—In pursuance of section 17 of the Industrial Disputes Act, 1947 (14 of 1947), the Central Government hereby publishes the award of the Central Government Industrial Tribunal No. 2, Dhanbad, as shown in the Annexure in the industrial dispute between the employers in relation to the management of Shyampur-A Colliery of Messrs Eastern Coalfields Limited and their workmen, which was received by the Central Government on the 16th October, 1985.

## ANNEXURE

## BEFORE THE CENTRAL GOVERNMENT INDUSTRIAL TRIBUNAL (No. 2) AT DHANBAD

## PRESENT :

Shri I. N. Sinha, Presiding Officer.

Reference No. 31 of 1985

In the matter of Industrial Disputes under Section 10(1)-(d) of the I.D. Act, 1947.

## PARTIES :

Employers in relation to the management of Shyampur-A Colliery of M/s. Eastern Coalfields Limited and their workmen.

## APPEARANCES :

On behalf of the employers.—Shri R. S. Murthy, Advocate.

On behalf of the workmen.—Shri D. Mukherjee, Secretary, Bihar Colliery Kamgar Union.

## STATE : Bihar.

## INDUSTRY : Coal.

Dated. Dhanbad, the 9th October, 1985

## AWARD

The Government of India, Ministry of Labour in exercise of the powers conferred on them under Section 10(1)(d) of the I.D. Act, 1947 has referred the following dispute to this Tribunal for adjudication under Order No. L-20012 (361)84-D.III(A), dated, the 29th March, 1985.

## SCHEDULE

“Whether the action of the management of Shyampur-A Colliery of Messrs Eastern Coalfields Limited in superannuating with effect from 9-6-1984 Shri Etwari Chamar, Security Guard, was justified ? If not, to what relief is the said workman entitled ?”

The case of the workmen is that the concerned workman Shri Etwari Chamar was a permanent Security Guard in Shyampur-A colliery of M/s. E. C. Ltd., since long. The management illegally and arbitrarily superannuated the concerned workman with effect from 1-3-79 on the basis of alleged medical board's report. The concerned workman challenged the report of the Medical board as the decision of the said medical board had never been communicated to the concerned workman. The management appreciating its mistake again referred the concerned workman for determination of his age by the Appellate Medical Board. The Appellate medical board assessed the age of the concerned workman as 50 years on 22-3-1979. On the basis of the appellate Medical Board's report the concerned workman was again allowed to resume his duties with effect from 18-5-1979. The management also corrected the age of the concerned workman in the Identity card as assessed by the Appellate Medical Board. However, the management superannuated the concerned workman with effect from 9-6-1984. The action of the management in superannuating the concerned workman with effect from 9-6-1984 was illegal, arbitrary and unjustified and against the principles of natural justice as he had not completed the age of 60 years which is the age for superannuation. The concerned workman represented before the management against his illegal order of superannuation but to no effect. Thereafter the union of the concerned workman raised an industrial dispute before the A.I.C.C., Dhanbad for conciliation but the same

ended in failure and thereafter a failure report was sent to the Government of India leading to the present reference, for adjudication. During the conciliation proceeding the management revealed that the age of the concerned workman was determined as 56 years by the Appellate Medical Board in the year 1979. The union challenged the said report of the Medical Board as the same had not been communicated to the concerned workman. The report of the appellate Medical board determining the age of the concerned workman was determined in violation of the medical jurisprudence and as such it cannot be relied upon. It has been submitted that the action of the management in superannuating the concerned workman was not justified.

The case of the management is that the age of superannuation fixed for the workmen of the management of ECL is 60 years and the same has been enforced since the time of nationalisation of the Coal mines in 1973. The concerned workman was earlier retired with effect from 1-3-1979 which led to a dispute regarding his age and it was decided by the management that his age be reassessed by the Appellate Medical Board of M/s. E.C.L. at Sanctoria. Accordingly his age was determined as 56 years on 22-3-1979 by the Appellate Medical Board. Thereafter the concerned workman was put on duty and he was to retire in normal course from 22-3-1983 on completing the age of 60 years. It is stated by the Management that when the re-assessed age of the concerned workman was being communicated by the Dy. P. M. Mugna area (in which Shampur-A colliery fell) a typographical mistake occurred in the letter dated 12-5-1979. At one place in the said letter the re-assessed age of the concerned workman was erroneously typed as 50 years and at another place it was correctly shown as 56 years. This mistake was not detected by Shampur-A colliery at the relevant time and they erroneously took the age of the concerned workman as 50 years and on its basis correction was made in the identity card of the concerned workman and also in the Form B Register. In April 1984 the office of the G.M. Nirsa Area which was formerly Mugna area detected the mistake that the concerned workman who was to be superannuated with effect from 22-3-1983 had not been superannuated. Thereafter the Dy. P. M. Nirsa Area wrote a letter dated 19/20-4-1984 to the Agent Shampur-A Colliery to superannuate the concerned workman with immediate effect. The management of Shampur-A colliery sent a letter dated 27-4-1984 to the Dy. Chief Personnel Manager indicating the discrepancy which had occurred due to typographical mistake. The matter was submitted to the G.M. and it was decided that the concerned workman should be superannuated by giving one month's notice. Accordingly the concerned workman was served with a notice of superannuation dated 9-5-1984 stating that he would stand superannuated with effect from 9-6-1984 and accordingly the concerned workman was superannuated with effect from 9-6-1984. Due to the typing mistake the reassessed age of the concerned workman was wrongly entered in the Form B Register and Identity Card of the concerned workman. When the mistake was detected it was rectified. In this process, the workman remained in service for over 13 months even after attaining the age of superannuation. The management was entitled to rectify the mistake which was detected and take consequential steps and the concerned workman cannot take advantage of the said mistake. It has been submitted on behalf of the management that their action in superannuating the concerned workman with effect from 9-6-1984 was fully justified and that the concerned workman is not entitled to any relief.

The only point for decision is whether the management was justified in superannuating the concerned workman with effect from 9-6-1984.

The management examined three witnesses and in support of their case. The workmen did not examine any witness on their behalf.

Admittedly, the concerned workman Etwari Chamar was examined by the Appellate Medical Board on 22-3-1979 for the assessment of his age and the Appellate medical board assessed his age. In para 2 of the W.S. of the workmen it is stated that earlier the management had arbitrarily superannuated the concerned workman with effect from 1-3-1979 on the basis of alleged medical Board's report. In

para-3 it is stayed that the concerned workman challenged the alleged medical Boards report as the decision of the medical Board was not communicated to him and thereafter the management again referred the concerned workman to the Appellate Medical Board for determination of his age and that on the basis of the said Appellate medical Board's report he was allowed to resume his duties with effect from 18-5-1979. Thus it is clear that the Appellate medical Board had examined the concerned workman and had assessed his age. MW-1 is Dr. P. P. Bhattacharyya who was one of the members of the Appellate Medical Board. He has stated that the Medical Board consisted of himself, Dr. C. R. Mahatha, Dr. A. M. Murthy. He has stated that the Appellate Medical Board assessed the age of the concerned workman as 56 years on 22-3-1979. He has proved the medical report Ext. M-1 bearing the signature of all the doctors of the medical Board and the two members who were the Superintendent of Mines and Senior Personnel Officer. It will appear from his evidence that Ext. M-1 is the extract of the Medical board's report and that it will not show the tests which were made in the case of the concerned workman at the time of determining his age. The said detailed report showing the tests have not been produced by the Management. MW-2 has stated that the original Medical report had been sent along with the forwarding letter Ext. M-2 to the Colliery. It is stated on behalf of the management that the said original report is not being traced. However, it will appear that the management has produced Ext. M-1 which is a report of the Appellate Medical Board held at Sanctoria on 22-3-1979 in respect of the concerned workman and 5 others. It will appear from Ext. M-1 that the age of Etwari Chamar was assessed around 56 years approximately by the appellate Medical Board. Ext. M-1 bears the signature of the 3 doctors and two others members of the committee and there is no reason to doubt the correctness of this Ext. It is clear, therefore that the Appellate Medical Board had assessed the aged of the concerned workman at about 56 years.

The entire mischief appears to have been done by the conflicting entries in Ext. M-3 which is a letter from the Dy. Personnel Manager to the Manager Shampur-A colliery dated 12-5-1979. It will appear from Ext. M-3 that three workers were superannuated on attaining the age of 60 years as assessed by the original medical board but they appealed to the Appellate Medical Board Sanctoria for re-examination and it gives the finding of age of the three persons by the Appellate medical Board which also includes the assessment of age of the concerned workman. Item No. 2 is the entry regarding the concerned workman which shows that his age was assessed around 50 years but from the next para it appears that his age was assessed as 56 years. It is stated in the last para that at the age of Smt. Hudani Mehan and Shri Etwari Chamar is assessed as 50 years and 56 years respectively and fit for work they may be allowed to resume their duties with immediate effect. Thus Ext. M-3 shows that in item No. 2 the age of the concerned workman was typed as 50 years whereas in the last para his age was typed as 56 years. The case of the management is that the Appellate Medical Board has assessed the age of the concerned workman as 56 years and that there was a typographical mistake in Ext. M-3 in item No. 2 where the age of the concerned workman has been typed as 50 years although in the last para the age has been correctly typed as 56 years in accordance with the findings of the Appellate Medical Board. In view of the fact that Ext. M-1 shows that the age of the concerned workman was assessed at about 56 years and the said fact finds stated in last para of Ext. M-3 as well, there appears to be a typographical mistake in item No. 2 against the name of the concerned workman where the age is stated to be 50 years.

The submission made on behalf of the management therefore appears to be correct that there was typographical mistake in Ext. M-3 against the name of the concerned workman where the age is stated as 50 years.

The case of the concerned workman is that the management had corrected the age of the concerned workman in the identity card and in the Form B Register in accordance with the age assessed by the Appellate medical Board. Ext. W-2 is the identity card of the concerned workman where the year of his birth was written as 1923 and the same has been penned through and on its back his age is recorded

as 50 years as vide the assessment of his age by letter dated 12-5-1975, Ext. M-3 is the letter dated 12-5-1979 on the basis of which the age has been corrected in identity card Ext. W-2. I have already discussed above about the typographical mistake in recording the age of the concerned workman in item No. 2 as 50 years. Ext. W-1 is the photo copy of Form B Register. Sl. No. 85 is the entry regarding the concerned workman where original year of birth was recorded as 1923 and the same was corrected as 50 years as per Dy. P.M.'s letter dated 12-5-1979. This correction of age in Form B Register is also made on the basis of Ext. M-3 regarding which I have already discussed. There is no independent document in support of the fact that the age of the concerned workman was fixed by the Appellate Medical Board as 50 years on 22-3-1979.

The only matter in dispute is whether the age of the concerned workman was assessed by the appellate medical board as 50 years or 56 years. It appears from Ext. M-1 that the age of the concerned workman was assessed as 56 years and the said age also finds noted in Ext. M-3 in the last para but through mistake that the age of the concerned workman was typed as 50 years in item No. 2 by the office of the Dy. P.M. It cannot therefore be said that the Appellate medical Board had not assessed the age of the concerned workman as 56 years because the very foundation on which the concerned workman has built his case also shows that the age of the concerned workman was assessed as 56 years. There is no case of the concerned workman that the age 56 years last para of Ext. M-3 is a typographical mistake for 50 years. I hold therefore that the Appellate Medical Board had assessed the age of the concerned workman as 56 years on 22-3-1979. The question regarding the tests which the Appellate medical Board applied in arriving at the age of the concerned workman are not available as the detailed tests are missing. The Doctor MW-1 has stated that the Board gives the tests for arriving at the conclusion regarding the assessment of age and he has also stated as to what could have been the tests applicable in assessment of age of the concerned workman. As however, the detailed paper regarding the test are not available, it cannot be said that the age of the concerned workman had not been assessed as 56 years. The documents on the record, namely, Ext. M-1 is of unpeachable character denoting the assessment of age of the concerned workman as 56 years and as the matter really in issue in this reference is as to what was the age assessed by the Appellate Medical Board, I think that the consideration of the tests applied in the assessment of age of the concerned workman is of not much importance.

Ext. M-9 is an application by the concerned workman to the Manager, Shampur-A colliery which shows that he had been served with a notice of superannuation vide letter dated 9th May, 1984 (Ext. M-8) and that as he had not attained the age of 60 years his superannuation was unjustified. It is thus accepted in this letter that the age of superannuation is 60 years. Now, calculating the age of superannuation of the concerned workman it will appear that he should have been superannuated with effect from 23-3-1983 but the concerned workman had continued to work till 8-6-1984 because of the typographical mistake of his age in Ext. M-3. In view of the above the concerned workman has rightly been superannuated with effect from 9-6-1984 he having already worked for a period beyond the date of his superannuation.

In the result I hold that the action of the management of Shampur-A colliery of M/s. Eastern Coalfields Ltd. superannuating the concerned workman Shri Etwari Chamar, Security Guard with effect from 9-6-1984 is justified and that he is entitled to no relief.

This is my Award.

9-10-1985.

I. N. SINHA, Presiding Officer.  
[No. I-12012(361)]/84-D.IV(A)  
A. V. S. SARMA, Desk Officer.

नई दिल्ली, 28 अक्टूबर, 1985

कार्यालय 5184.—श्रीदैविक विवाद अधिनियम, 1947 (1947 का 14) की धारा 17 के अनुसरण में केन्द्रीय सरकारी, यूनियन बैंक आफ चंडीगढ़, अम्बाला के प्रबंधनत से सम्बद्ध नियोजकों और उनके कर्मकारों के बीच, अनुवंश में निर्काट श्रीदैविक विवाद में केन्द्रीय सरकार श्रीदैविक अधिकरण, चंडीगढ़ के पंचाट को प्रकाशित करती है, जो केन्द्रीय सरकार को 11-10-85 को प्राप्त हुआ था।

New Delhi, the 28th October, 1985

S.O. 5184.—In pursuance of section 17 of the Industrial Disputes Act, 1947 (14 of 1947), the Central Government hereby publishes the award of the Central Government Industrial Tribunal, Chandigarh as shown in the Annexure in the industrial dispute between the employers in relation to the Union Bank of India, Ambala and their workmen, which was received by the Central Government on the 11th October, 1985.

#### ANNEXURE

BEFORE SHRI I. P. VASISHTH, PRESIDING OFFICER,  
CENTRAL GOVERNMENT, INDUSTRIAL TRIBUNAL,  
CHANDIGARH

Case No. I. D. 170/81 (Delhi); 52 of 1984 (CHD)

#### PARTIES :

Employers in relation to the management of Union Bank of India,

AND

Their Workman : Sohan Singh.

#### APPEARANCES :

For the Management.—Shri Gopal Mahajan.

For the Workman.—Shri R. K. Gulati.

ACTIVITY : Banking

STATE : Haryana.

#### AWARD

Dated, the 4th of October, 1985

The Central Government, Ministry of Labour, in exercise of the powers conferred on them under Section 10(1)(d) of the Industrial Disputes Act, 1947, per their Order No. L-42012/176/80-D.II (A) dated the 7th of November, 1981 read with S.O. No. S-11025(9)/84-D.IV (B) dated the 26th October, 1984, referred the following Industrial Dispute to this Tribunal for adjudication :—

“Whether the action of the management of Union Bank of India, Ambala, in imposing the penalty of Stoppage of two increments permanently and not paying the difference of wages pertaining to the suspension period in respect of Shri Sohan Singh, Peon-cum-Chowkidar is justified ? If not to what relief is the workmen concerned entitled ?”

2. Gist of the matter is that the petitioner was working in the subordinate staff of the Resptd. Bank at their Ambala City Branch in October 1975 and was posted there as an armed Chowkidar on 11-10-1975. Due to paucity of staff he was asked to look after the assignment of Peon also because his appointment was primarily as a Peon-cum-Chowkidar. But the petitioner resented the proposition and was, thus, alleged to have refused to obey the orders. Similarly on 13-10-1975 also he was reported to have behaved in an unbecoming manner when at about 4-45 P.M. he left his charge after exchanging hot words with the Branch Accountant Shri R. N. Sharma and went home on the pretext that he was not allowed to avail of the lunch break on that day due to extra-assignment. He was, therefore, charge-sheeted and proceeded against departmentally. Shri Gursharan Singh was appointed as Inquiry Officer and was also empowered to take disciplinary action if required.

3. Controverting the allegations against him, the petitioner complained of victimisation on false, frivolous and trumped up charge. However on conclusion of Inquiry, he was held guilty and punished as indicated in the schedule of reference. Feeling aggrieved, the petitioner raised an issue through his Union and sought quashing of the impugned punishment, i.e. permanent stoppage of two increments and reduction in salary during the suspension period. Since the Management was found unresponsive despite the intervention of the A.L.C. (C) at the Conciliation stage hence the reference.

4. The parties were taken to trial and called upon to adduce evidence in support of their respective versions without feeling the necessity of framing any formal issue because the pleadings were found to be fully covered under the terms of reference. In support of his case, the petitioner examined himself whereas the Management felt contended with a few documents whose authenticity was not contested from the opposite side.

5. Although in his Claim Statement the petitioner had tried to assail the domestic proceedings on all conceivable grounds yet, during the course of his Cross-examination, he was fair enough to make certain admissions which go a long way to establish the propriety of the departmental inquiry by necessary implication. To be precise he admitted that he was served with an unambiguous charge sheet which he controverted and then participated in the inquiry proceedings alongwith his representatives of choice; more over he got due opportunity to rebut the charges against him as also to project his own version. He further conceded that he had no grouse against the Inquiry Officer.

6. As a matter of fact, On his behalf only one point was raised before me to question the validity of the domestic proceedings and that, too, was confined to the exercise of the punishing powers by the Inquiry Officer. Elaborating his view point the learned representative of the petitioner submitted that according to the common case of the parties Shri Gursharan Singh was conferred with, and he did exercise the powers of both the Inquiry Officer as well the Punishing Authority; in his former capacity he held the petitioner guilty and as the Disciplinary Authority imposed the punishment. In a manner of speaking the petitioner got no fair opportunity to controvert the findings of the Inquiry Officer so as to claim the indulgence of the Punishing Authority on the question of sentence which, according to him, was violative of the rules of equity and fair play.

7. Despite its seeming attraction the petitioner's submission failed to carry conviction with me. At the risk of repetition it may be pointed out that the Inquiry Officer, who also happened to be the Disciplinary Authority had no animus against him; and then, under the concept of Article 19 : 4 of the Bipartite Settlement the management was well within its province to confer such composite powers on a single authority. The only requirement was of the wide circulation of the proposition amongst the employees; which was duly done as should be evident from the circulars Ex. M-2 and M-9. And so far as the violation of any rule of equity or fair play is concerned the plea would not hold water in light of the ratio of D. C. Aggarwal Vs. Union of India 1983 (2) S.L.R. 94 and Sambhoo Nath Goyal Vs. Bank of Baroda 1984 (1) S.L.R. 212 (S.C.).

8. That directly confronts the Tribunal with the quantum of punishment which, on the face of it, appears to be a bit harsh and disproportionate to the established charges. As mentioned here-in-before the only allegations against the petitioner pertained to the domain of insubordination due to his outbursts on 11-10-1975 and 13-10-75. Of course he had no business to be abusive and use unparliamentary language towards his seniors, yet he had a plausible point in asking for written instructions for working as a peon, within the premises of a particular room, on 11-10-1975 when he was supposed to keep guard on the main entrance of the Bank as a sort of Santry. Similarly on 13-10-1975 he had urged to be relieved at about 4-45 P.M. instead of the normal time of 5-30 P.M. because he had to forego his lunch break due to assignment to extra duty. In the technical sense of it, he might be guilty of taking a unilateral decision and then showing temper on being questioned by

his seniors, but all the same, all by itself, these incidents were not of the nature to justify or even invite the penalty of cumulative loss of increments; after all such type of punishments carry their venom and strings throughout the service career of an employee, and some times even thereafter; because at the time of retirement the permanent loss of even a single increment may adversely effect the computation of gratuity and such other dues.

9. It may not be out of context to mention here that after this incident the petitioner appears to have mended his ways and that, perhaps, explains his promotion to the clerical cadre w.e.f. 1st January 1984. On behalf of the management it was vehemently argued that any indulgence on the point of punishment would be a case of mercy misplaced because as a logical consequence it could induce an element of indiscipline in a sensitive industry like Banking.

10. I am not impressed with the effort because agreeing to the proposition would tantamount to discard the reformatory aspect of punishment. After all, on their own showing the management have granted promotion to the petitioner to the clerical cadre after this incident, there is no denying of their magnanimity but then it could not have been there had the petitioner not mended his ways. To be precise, the impugned punishment is certainly on the excessive side and calls for judicial interference to strike a balance.

11. No other point was raised before me and thus to sum up my aforesaid discussion on the limited available data, while sustaining the Management's action in its pith and substance I direct them to substitute the punishment to the simple loss of the increments. To be precise, as and when the petitioner's next increment fell due after the date of reference he would be fixed up at his normal graded salary on the assumption that there was no loss of increments during the intervening period. All the same there would be no interference in the quantum of sustenance allowance allowed to him during his suspension period because after all, the charges of misconduct, how so ever minor, had been duly established.

12. Award returned accordingly.

Chandigarh,

Dated : 4-10-1985.

I. P. VASISHTH, Presiding Officer  
[No. I-12012/176/80-D.II (A)]

नई दिल्ली, 29 अक्टूबर, 1985

कांग्रेस-5185 आंशिक विवाद प्रधानियम, 1947 (1947 का 14) की धारा 17 के अनुसरण में केन्द्रीय सरकार, सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया, के प्रबंधन से सम्बद्ध नियोजकों और उनके कर्मकारों के बीच, अनुबंध में निविष्ट आंशिक विवाद में केन्द्रीय सरकार आंशिक प्राधिकरण कानपुर के पंचाट को प्रकाशित करती है, जो केन्द्रीय सरकार को 15-10-85 को प्राप्त हुआ था।

New Delhi, the 29th October, 1985

S.O. 5185.—In pursuance of section 17 of the Industrial Disputes Act, 1947 (14 of 1947), the Central Government hereby publishes the award of the Central Government Industrial Tribunal, Kanpur as shown in the Annexure in the industrial dispute between the employers in relation to the Central Bank of India and their workmen, which was received by the Central Government on the 15th October, 1985.

#### ANNEXURE

BEFORE SHRI R. B. SRIVASTAVA, PRESIDING OFFICER, CENTRAL GOVERNMENT, INDUSTRIAL TRIBUNAL KANPUR

Industrial Dispute No. 164 of 1981

Reference No I-12012/39/80-D.II (A) dated 30th May, 1981  
In the matter of dispute between :

Shri S. C. Sharma, C/o The Secretary, Central Bank Employees Association, Regiment Road, Meerut,  
AND

The Assistant Manager, Central Bank of India, 23-Vidhan Sabha Marg, Lucknow.

APPEARANCES :

Shri Tara Chandra representative—for the workman.

Shri S. Trivedi representative—for the management.

AWARD

1. The Central Government, Ministry of Labour, vide its Notification No. L-12012/39/80-D.II (A) dated 30th May, 1981 has referred the following dispute for adjudication :—

Whether the action of the management Central Bank of India, in relating to its Hapur Branch in stopping permanently, from 1977 two increments of Shri S. C. Sharma, Assistant Cashier-cum-Godown Keeper by way of punishment is justified ? If not, to what relief is the workman concerned entitled ?

2. The workman Shri S. C. Sharma was serving as Assistant Cashier-cum-Godown Keeper in the management bank Hapur Branch of the management and was also the Secretary of the Hapur Unit of the U. P. Bank's Employees Union. On 19-5-73 the branch manager of the management bank Bank Gulauthi Branch, issued the memo to the workman which is annexure W-1 with the statement of claim alleging that on 2-5-73, he had visited the said bank at about 2 p.m. and had adopted there in the branch rude behaviour objectionable conduct and used physical force. The workman replied the memo and ascertained that he had been on duty throughout the day on 2-5-73, meaning thereby that on 2-5-73 throughout the working hours he remained in his Hapur branch and did not go out on the said date and time of Gulauthi Branch of the Punjab National Bank, hence there was no question of indulging in the alleged act. The workman was served with another memo after considering his reply dated 21-5-73 alleging that he had left the office at 1 p.m. by taking keys of M/s. Avon Plastics and returned in the office at about 5.30 p.m. and at Punjab National Bank at Gulauthi he had discussion with the manager of PNB and behaved in indecent manner and used abusive language for him and also stopped the manager of the PNB and threatened him with dire consequences. He was called upon to explain within three days why disciplinary action may not be taken against him. The said memo is annexure W-2. The workman submitted the detailed explanation to this memo on 7-6-73 annexure 4 to the statement of claim. In this reply, the workman admitted having remained out from 1.30 p.m. to 5.30 p.m. under instructions from him to go to M/s. Avon Plastics Corporation delivered the goods and get godown rearranged and it was for all that he was absent from 1.30 p.m. to 5.30 p.m. He denied having gone to Gulauthi at PNB branch he consequently denied the allegations.

3. The management gave the workman third memo annexure W-5 to the statement of claim that the management had been informed by M/s. Avon Plastics Corporation that the workman secured letter addressed to the branch manager regarding his presence in the godown on 2-5-73 in connection with the delivery and rearranging godown and as that letter was addressed to the agent Central Bank of India, Hapur, it was the duty of the workman to have handed over the same to the branch manager which was not done so far. He was required to explain within three days. This memo is dated 21-6-73.

4. The workman replied this memo on 28-6-73 copy of which is annexure W-6 of the claim statement. In this the workman averred that the said letter was delivered to the agent on that very day and it was on the basis of that letter that the agent allowed him to mark over time for 2-5-73. Nothing further transpired for about 14 months when a charge sheet was issued to the workman on 9-8-74 (Annexure 7 of the claim statement) by Zonal Manager of the management bank at Lucknow wherein he was charged for riotous and disorderly behaviour and criminal trespass and that he had visited Punjab National Bank Gulauthi from Hapur

without taking prior permission of the branch manager. He was further intimated that the enquiry be held by Shri K. C. Katoch Divisional Manager, Agra at Hapur Branch and that the date and time of the enquiry will be intimated to him in due course. After about 18 months the Assistant Zonal Manager replaced the enquiry officer by Shri S. L. Gautam vide memo dated 7-4-76 (annexure W-9 of the claim statement). Shri S. L. Gautam commenced the enquiry on 1-6-76 but the workman did not attend the enquiry as allegedly a memo was issued by Hapur Branch Manager dated 31-5-76, that he had been informed that there would be no enquiry on 1-6-76. That memo of Hapur Branch dated 31-5-76 has not been filed. The enquiry was resumed on 16-7-76, jointly against the workman and another workman Shri Amar Bahadur. On that day only some documents were filed on behalf of the management and the enquiry was adjourned for 19-8-76. On 19-8-76 the management produced some more documents. After examination and cross examination of the witnesses produced by the management and the two workman, thereafter parties were required to adduce arguments of their respective cases. No arguments were addressed orally as both sides wanted to submit their arguments in writing consequently 21 days time was given to the management and seven days time to the workman after management has submitted its written arguments.

5. Before written arguments were submitted by the management they moved an application for permission to produce the officer incharge of the Punjab National Bank Gulauthi Branch whose whereabouts were not known previously. 22-9-76 was the date fixed for orders on that application. The application of the management after hearing the parties was allowed where upon workman and his representative decided not to take part in the proceedings as a mark of their protest against the unjust action of the enquiry officer. The new witness was none else but Shri D. P. Gupta the officer incharge of Punjab National Bank whom the alleged incident was alleged to have taken place on 2-5-73. As none participated on behalf of the workman the enquiry was closed ex parte. After obtaining the written arguments from the banks representative and workman representative the enquiry officer submitted his joint finding against the workman and Shri Amar Bahadur on 13-12-76, proposing the punishment of dismissal against workman Shri S. C. Sharma and asking him to show cause against the said proposed punishment by 24-12-76. On that date the workman appeared before the enquiry officer on which the enquiry officer passed his final orders punishing the workman for stoppage of two grade increments. Thereafter, the assistant Zonal Manager of the bank passed on the order of imposing upon the punishment on the workman on 28-1-77. The workman preferred an appeal on 14-1-77.

6. The first contention of the workman representative is that charge No. (i), did not fall under para 19.5 clause (c) and (j) of the bimartite settlement. I agree with his contention partly that 19.5(c) will not apply in all case i.e. drunkenness or riotous behaviour or disorderly behaviour should committed on the premises of the bank. In the instant case, the alleged action, if any, took place not in the premises of the bank where workman was employed but at different place in a different bank but as regards clause 19.5(j) I do not agree that the same does not apply as that will amount to doing any act prejudicial to the bank's interest. Prejudice does not mean putting the bank to some financial loss or involving the bank in some financial loss but also any act tarnishing their name and image of the bank. Thus if any bank employee during office hours goes to another bank and indulge in riotous, disorderly and indecent behaviour or even assaults the officer there that will amount doing an act prejudicial to the interest of the bank. The words "or" at two places in clause (j) of 19.5 of the said settlement refers to three different types of misconduct and they are not interconnected or one depended upon the other. It is true that the management of Punjab National Bank could have filed a criminal case under section 323 I.P.C. or so on but leaving the bank premises during office hours and indulging in assault and disorderly and indecent behaviour with the officer or another bank at another place will tarnish the image of the bank, vis a vis its control over the employee during the office hours and will thus, tarnish the good name of the bank which can nothing be but an act prejudicial to the interest of bank.

7. The law *Bal Mukund Versus State Industrial Court Indore 1979 Lab IC 737* referred does not apply to the present case.

8. Second charge that is leaving the Hapur for Gulauthi during office hours without prior permission of the agent will by itself amount to minor misconduct as given in para 19.7(a) of the bipartite settlement, but when considered on that account giving punishment solely on those charge the punishment should not have been stoppage of increments for more than six months.

9. Now coming to the point whether the appointment of the enquiry officer was invalid. Since the officer (enquiry) was appointed by Zonal Manager, Assistant Zonal Manager, could not have replaced the enquiry officer appointed by Zonal Manager. On this point my attention was drawn to para 19.14 of the Bipartite Settlement 1966 wherein it is laid down that the Chief Executive or the Principal Officer in India of the Bank or an alternate officer at Head Office or principal office appointed by him for the purposes shall decide which officers shall be empowered to hold enquiry and take disciplinary action in the case of each office/establishment.

10. It has been argued by the representative for the management that it is the head office which draws a penal of enquiry officers who can take disciplinary action and that the Zonal Manager or Assistant Zonal Manager, had no authority to appoint any one as enquiry officer for taking disciplinary action and it is from that penal that the name of Shri K. C. Katoch was taken and when for some reasons he could not be available to conduct the enquiry the other officer available from penal Shri Gupta was named as Enquiry Officer at his place. Thus this objection has too no force.

11. In the instant case, on the point of delay it can not be said that the workman in any way was prejudiced as he was never suspended nor his working of pay was affected. Thus the delay in this case can not be said to be denial reasonable opportunity to show cause which may amount to denial of justice.

12. The workman had to prove the charges. They did not do that what ever evidence available. Later when the person with whom misbehaviour taken place and who was assaulted could be available was allowed to be examined by the management. The workman should have participated in the enquiry and examined the witness to disprove the case and show that what ever he was deposing was not correct. Further he could have pressed for giving evidence in rebuttal as taking evidence if else amounted to reopening the case. The workman himself is to be blamed for not having participated in the enquiry and the enquiry officer was justified in concluding the proceeding at that stage *ex parte*.

13. Regarding joint enquiry, it can not be said that the workman in any way prejudiced, normally evidence was recorded together when common question of fact or law are involved in the enquiry of two similar matters unless prejudice is therein as shown, it can not be said that the enquiry is vitiated.

14. This court has not to evaluate the evidence given before the enquiry officer, this court can interfere only if the findings is perverse i.e. findings have been arrived at without any evidence on the point.

15. In the circumstances and for the reasons discussed above I see no reason to interfere with the enquiry and decide the preliminary issue that the enquiry against the workman is not vitiated as alleged and was fair and proper.

16. I have observed earlier that the findings of the enquiry officer amounted to gross misconduct under para 19.5 (j) of the Bipartite Settlement and thus the punishment of stoppage of two increment given in the circumstances of the case was fair and proper.

17. I, therefore, taking into consideration entire facts circumstances and evidence of the case, hold that the action of the management of Central Bank of India, in relation to

its Hapur Branch in stopping permanently from 1977 two increments of Shri S. C. Sharma Assistant Cashier-cum-Go down Keeper by way of punishment is Justified. The result is that the workman is not entitled to any relief.

18. I, therefore, give my award accordingly.

19. Let requisite number of copies of this award be sent to the Central Government Ministry of Labour for publication.

Dated : 10-10-1985.

R. B. SRIVASTAVA, Presiding Officer

[No. L-12012/3980-D.II(A)]

N. K. VERMA, Desk Officer

नई दिल्ली, 28 अक्टूबर, 1985

का०आ० 5186.—ओद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 (1947 का 14) की धारा 17 के अनुसरण में केन्द्रीय सरकार वंश्वई पतन न्यास के प्रबंधनत रूप से सम्बद्ध नियोजकों और उनके कर्मकारों के बीच, अनुबंध में निर्दिष्ट ओद्योगिक विवाद में केन्द्रीय सरकार ओद्योगिक अधिकरण, वंश्वई के पंचाट को प्रकाशित करती है, जो केन्द्रीय सरकार को 16 अक्टूबर, 1985 को प्राप्त हुआ था।

New Delhi, the 28th October, 1985

S.O. 5186.—In pursuance of section 17 of the Industrial Disputes Act, 1947 (14 of 1947), the Central Government hereby publishes the award of the Central Government Industrial Tribunal No. 1, Bombay as shown in the Annexure in the industrial dispute between the employers in relation to the Trustees of the Port of Bombay and their workmen, which was received by the Central Government on the 16th October, 1985.

#### ANNEXURE

#### BEFORE THE CENTRAL GOVERNMENT INDUSTRIAL TRIBUNAL NO. 1 AT BOMBAY

Reference No. CGIT-18 of 1984

#### PRESENT :

Shri Justice R. D. Tulpule Esqr., Presiding Officer.

#### PARTIES :

Employers in relation to the Trustees of the Port of Bombay;

AND

Their workmen.

#### APPEARANCES :

For the Management—Mr. Kaka, Advocate,

For the Union—Mr. Datar, representative.

INDUSTRY : Ports & Docks STATE : Maharashtra  
Bombay, dated the 5th day of July, 1985

#### AWARD

This is a reference under Section 10 sub-section 2 of the Industrial Disputes Act which came to be made on the joint application by the parties and the issue referred to this Tribunal is as follows :—

“Do the Heavy Lift Crane Drivers of the Mobile Crane Section and Electrical Establishment of the Mechanical Engineering Department qualify for being brought under a piece-rate scheme? If not, are they entitled to any other relief, and, if so, in what manner and from what date?”

2. At the hearing of the reference on the last date, a part of the demand was settled and the parties filed consent terms with regard to Mobile Crane Section Drivers operating Heavy Lift Cranes. According to that settlement, they have been admitted to the benefits of Distribution of container allowance, on certain conditions which are to be found in the settlement itself. I accept that settlement and direct an award in terms of the settlement so far as Heavy Lift Crane

Drivers of the Mobile Crane Section are concerned. That leaves the case of Heavy Lift Crane Drivers in the Electrical Establishment of the Mechanical Engineering Department alone for consideration.

3. In making reference hereafter, the pleadings and/or documents produced in this case, this would be treated as a reference to Heavy Lift Crane Drivers in the Electrical Establishment only. The statement of claim and the written statement with reference to them only is being referred to.

4. The statement of claim on behalf of these Heavy Lift Crane Drivers is filed by the B.P.T. General Workers Union, of which they are members. It says that such workmen operate cranes which lift weights, according to them, ranging between 15 tonnes to 60 tonnes. They have also to carry out maintenance and repair work for which they are paid a special pay of Rs. 57. These heavy cranes "handled heavy packages of military equipments and other cargoes including containers when the containers started coming in large numbers." The union then refers to 1981 settlement by which container allowance was agreed to be paid at the rate of Rs. 500 as compensation for loss of piece-rate earnings. According to the union clause (ii) of paragraph (1) of that settlement provides that "workers who perform the duty of operation, repair maintenance of cranes etc. will be eligible for payment of the said compensation." It is its case, therefore, that these Heavy Lift Crane Drivers should also get container allowance with effect from 1-1-1981. It also relied upon Resolution 26 of the Indian Ports Association.

5. Further, according to the union, certain categories of workmen who are not covered by the settlement of the year 1981, such as Leading men, Chargemen, Technical Supervisors, Crane Supervisors, Driver-Mechanics, Electricians, Wiremen, Winders, Mazdoors, Nowgances, etc. who were not under the piece-rate scheme were brought under the 1981 settlement and were being paid this container allowance. It was, therefore, according to it discriminatory to deny these persons, brought under the settlement who deny it to the Heavy Lift Crane Drivers. It then referred to the genesis of this dispute and the resolution of Indian Ports Association and the stand taken by the employers in this behalf. It, therefore, contended that Heavy Lift Crane Drivers of the Electrical Establishment of the Mechanical Engineering Department should be brought under the piece-rate scheme and container allowance should be paid to them pending any such scheme.

6. It may be pointed out that the issue referred to the Tribunal specifies that the Tribunal should adjudicate whether these people, namely, Heavy Lift Crane Drivers in the Mobile Crane Section and the Electrical Establishment "qualify for being brought under a piece-rate scheme?" The issue also further requires to adjudicate, if they do not qualify for being brought under the piece rate scheme, whether they can be given any other relief and in what manner and from what date. It would be seen, therefore, that failing qualification of the crane drivers to the settlement of piece-rate scheme, the only other allowance which is claimed on their behalf and suggested is the container money sharing. That is claimed from 1-1-1981. The present dispute has to be viewed in this context.

7. The written statement of the Port Trust, to summarise it, states, that the Heavy Lift Crane Drivers on account of the difficulties in the nature of the work and the broad kind of work which they carry out and which is available in the Port Trust are not capable of being brought under a piece-rate scheme. Therefore, no piece rate scheme can be fixed for them. As regards the container allowance, it says that when cargo started coming at the port in greater quantities in containers instead of loose, all those workmen who were getting incentive for loading and unloading larger cargo than normal in a day stood to lose that incentive. Accordingly, they lost that piece-rate which they were getting. In order to compensate these workmen, therefore, an amount was collected from the shipping companies at the rate of Rs. 400 per set of workmen per shift. That was living with the Port Trust since the year 1973 but no distribution could take place of the money amongst the concerned workmen

who were eligible as the unions were not agreed on the question. Ultimately, an agreement was reached in 1981 and in accordance with that settlement, the amount was distributed. That settlement provided that this should be distributed amongst those who were covered by a piece rate scheme and those who were engaged in "(i) Crane repairs and maintenance staff in certain departments' and sections and (ii) the labour employed by Clearing Agents and coming under the listed scheme of Bombay Dock Labour Board." Present workmen, according to it, do not fall under any of these categories.

8. As regards their work, it says that a piece-rate scheme can be worked out only where the work in excess of the datum or prescribed minimum quantum of work is turned out or capable of being turned out. There must be continuity of work and the work must be continuously available for being done. So far as Heavy Lift Crane Drivers are concerned, the case is that their work is intermittent and non-continuous and can not be brought under the piece-rate scheme. It further pointed out that these cranes handle only heavy loads. There is no knowing when a next heavy cargo would be available for being lifted. Hence it is not possible to fix any datum. Occasions of handling loads above 14 tonnes, namely that which is normally handled by heavy lift cranes are few and occasional. It also pointed out that there are only three such cranes which are run by 9 crane drivers operating in three shifts. Out of these, two cranes are used at the repair shops and only one is used for loading and unloading cargo. In other words, it could be only three drivers who could be brought under the scheme.

9. Its further contention is that the Indian Ports Association's resolutions are only recommendatory and not mandatory. The union's reliance upon the terms of settlement is misplaced. If the settlement is correctly read, then it will show that the concerned employees are not covered by it. The other employees about whom the union has made a grievance, in accordance with the terms of settlement itself were capable of being brought under the settlement, as in respect of them, either the applicable piece-rate scheme was urged upon in principle or discussion were going on for evolution of one in that behalf. It admitted that these Heavy Lift Crane Drivers do attend to repairs and maintenance. But it was pointed out that they look after only mechanical part thereof and not the electrical. Such staff which is covered by the settlement of 1981 and who are beneficiaries in the container money distribution are staff concerned with crane repairs and maintenance "employed in the Hydraulic Establishment, Indira Dock, Hydraulic Establishment, P & V Docks, Mobile Crane Section and Electrical Establishment, Southern Division (Crane Section)". The concerned employees though Heavy Crane Drivers, are not in the Crane Section of the Southern Division Electrical Establishment and they fall outside the categories covered by the settlement. The employer also pointed out that all that money which was collected, has been distributed among the concerned employees and that the Trust has no money to distribute to the employees, and therefore, there can be no question of paying these employees from 1-1-1981, even assuming that anything has to be paid to them.

10. The employer then referred to the contention of the union with regard to certain other employees engaged on "crane repairs and maintenance work in the Hydraulic Establishment, Indira Dock, Hydraulic Establishment, P & V Docks, Mobile Crane Section and Electrical Establishment, Southern Division (Crane Section)" and said that there is no discrimination. To that settlement, it says, besides the concerned union, two other unions were parties. It also pointed out that the existence of piece rate or incentive scheme differs from port to port and varies on account of geographical, historical and other reasons. The employer was to consider absorbing the Heavy Lift Crane Drivers in the distribution scheme of container money, provided the Heavy Lift Crane Drivers had agreed to operate mobile cranes, if they were required to do so. According to the employer, the union at one stage agreed to do this, but later, backed out. Therefore, it was not possible to include them for a share in the container money to be distributed.

11. It would thus be seen that the question which requires to be decided in the present reference is whether any piece rate scheme can be formulated for these Heavy Lift Crane Drivers and if not, whether they can be brought in as beneficiaries under the container money distribution scheme. Answer to the first question depends upon the nature of work, its ability to be fixed in terms of an incentive of piece rate scheme of work, actual availability of work and which can be performed by the concerned workmen. The scheme has to be such that upon its evolution or adoption, the workmen would be deriving benefit thereunder. It is no use devising any scheme which would be a dead letter or still born and cannot be beneficially taken advantage of by the workman in the absence of available work.

12. As regards the alternative case of share in the container money or allowance, the case of the employees must rest on the terms of the settlement and not otherwise. This will also have to be considered in the light of the historical reasons for the introduction of container money/allowance distribution scheme and the question whether the present concerned workmen are eligible to participate in the distribution.

13. When the reference opened for hearing, I asked the union representative whether they had any scheme formulated with regard to the introduction of piece-rate for the Heavy Lift Crane Drivers. I was informed that the union has in mind a scheme and that it would be placed on record. They went on to say at that stage how the piece-rate scheme should be drawn. Though that was so right up to the end, no scheme was either formulated or produced, and when I asked again the union representative at the end of the arguments as to whether they have any scheme, they expressed their inability and did not produce any.

14. It may be mentioned however, that on the 5th of July 1985, a memorandum jointly signed on behalf of the union and on behalf of the Port Trust was presented. That related to a part of the workman covered by the reference. By that memorandum, Heavy Lift Crane Drivers of the Mobile Crane Section were agreed to be extended the benefits of share in the container money on terms and conditions agreed therein by the employees thereupon. Since both parties have accepted and have agreed that out of the two sets of Heavy Crane Drivers (1) of the mobile crane section and (2) of the electrical establishment of mechanical engineering department, Heavy Lift Crane Drivers of the Mobile Crane section are now out of the purview of the reference, as a settlement has been reached in their case. I accept this signed memorandum and award in terms of the settlement, a share in the container money to these Heavy Lift Crane Drivers of the Mobile Crane Section in accordance with the understanding and agreement, as recorded in the memorandum dated 5th July, 1985, clauses 1 and 2. That leaves the case of the Heavy Lift Crane Drivers in the electrical establishment of the Mechanical Engineering Department.

15. The parties led evidence in the form of affidavits of two witnesses—Iyer on behalf of the management and one Shejwal on behalf of the union. They were also cross-examined. They also produced documents and letters exchanged between the union and Port Trust. I will firstly refer to the affidavits filed in this case and the cross-examination and evidence emerging therefrom.

16. Mr. Iyer, in his affidavit of the 16th of May, 1985 stated that there were only Heavy Lift Crane in the electrical establishment, with which alone we are now concerned. Of these, two are employed on the ship repair work at Hughes Dry Dock and Merewether Dry Dock and the third one alone is employed at the Jetty End on the Cargo Handling work. "The heavy lift crane at the Jetty end only handles heavy packages and military equipment and other heavy cargo, which work is very intermittent." Iyer was not cross-examined with regard to this statement of his. His cross-examination was directed towards the question whether the Heavy Crane Drivers do any repair work or maintenance work. Iyer is from C.M.E. Department, which has three wings (1) Hydraulic Establishment, (2) Electrical Establishment and (3) Mobile Crane Department. He says that he is fully conversant with

the Heavy Crane Drivers' work, though in his cross-examination, he admitted that he has not worked in the Hydraulic section and has no experience thereof.

17. We are only concerned in this case with electrical establishment and Iyer's statement therefore, can be accepted as correct. He has referred to a statement which has been filed on behalf of the Port Trust. That statement, he says was prepared from the original record and is correct. I shall presently come to that statement.

18. Shejwal, in his evidence and in the affidavit, has stated very little of use. He has no doubt referred to the circumstance that the Heavy Lift Crane Drivers undertake maintenance and undertake comprehensive repair work. His claim to comprehensive repair work is disputed. He says he does that with the assistance of mechanics. He also claims that he performs the work of electrical section and attends to electrical work, without even waiting for the electrician. His evidence, however, is singularly lacking as regards the nature of work, the quantity and feasibility of a piece rate scheme, considering the amount of work done the norm which can be prescribed for a day's work and alternatively, also how it is connected with the container handling. Only thing, which he has stated is that there is discrimination between the employees of the Hydraulic Establishment and the Electrical Establishment though they do the same kind of work and "is connected with smooth working of container handling".

19. As regards the repair and maintenance work, which he does admittedly, Rs. 57 was paid as maintenance and repair allowance, for the purpose. In his cross-examination, he stated that one crane handles "military and other cargo also". That crane handles "not only heavy, but heavy and light cargo also". He denied the suggestion that it does not handle light cargo and handles only heavy cargo and military cargo.

20. Turning now to the statement which has been filed in the present case on behalf of the employer on 14th March 1985 and 17th January, 1985 that shows that so far as heavy lift cranes are concerned, the work is occasional and for days together there is no work at all. On other days when there is work, that is very little. For instance, in January, the first shift on the 11th January handled for the first time heavy lift cargo which occupied 4 hours out of a duty of 12 hours, and on 29th January, only 3-quarters of an hour. So far as the second shift is concerned, November month figures are still less. The maximum that can be seen, as number of hours worked for these heavy lift cranes is 7 in February on 18-2-1984, while on some occasions, there is no lifting of cargo at all for the second shift. In November for instance, the second shift did not do even a single hour's work. It will be seen, from the perusal of the work done for the number of hours in the year 1984 for the second shift, that generally the work was very little, extremely occasional and very slight. While for the first shift, there is some work, that is always intermittent and non-continuous and never for the entire shift period.

21. As against this, cranes employed in container handling appear to be not only busy, but have continuous work. This would be seen from the statement at pages 1-12 of 14th March 1985, relating to Tower Cranes employed at the Timber Pond for handling containers. The number of containers handled by them is mentioned against them, and is sometimes as many as 16 in a day. On an average, the containers handled is about 9, but on most occasions more than 7 per day. This would show that the container handling work is continuous, of a permanent nature and quantitatively sufficient, which is not so far as heavy cargo is concerned. That is the reason perhaps why no piece-rate scheme was devised for such a kind of work and the men employed on it. As no piece-rate Scheme can be evolved and has not been evolved and presented by the union for consideration, it seems to me that the answer to the first part of reference, namely, whether the heavy lift crane drivers of the electrical establishment can be brought on a piece rate scheme, has to be answered in the negative. Their work essentially being of a casual, intermittent and non-continuous unpredictable nature, it is not possible to devise and arrive at a norm of minimum work either per day

or per month and anything over and above fixed as qualifying for a piece rate. From the nature of work and the statement, to which I have made a reference it does not appear to be predictable as to when the next piece of cargo (heavy) is going to arrive, and whether it is going to arrive at all in that month. When such cargo arrives, there is work. But, there is no knowing whether and when such cargo would be there for unloading.

22. It appears that the matter of fixing a scheme and devising a piece rate for this category of staff was under consideration for quite sometime and the circumstances or difficulty in devising any such scheme has been realised and the parties are aware of. The matter has been engaging attention since 1980, and if a scheme could have been usefully and profitably devised then the workmen or the employer would not have failed to devise one. The correspondence to which I shall presently make a reference makes a general demand and gives a number of reasons, excepting devising of the scheme, claiming allowance for these workmen. Further I find that the picture presented by either of the parties is one-sided. The union has filed copies of its letters, but not the replies received. On the other hand, the employer also to some extent guilty of the same practice. Initially, it appears that cargo weighing upto 5 tonnes only was considered eligible for evolving a piece-rate incentive scheme. That was later raised by the Government of India, by its letter dated the 26th June, 1980 to about 10 tonnes. A resolution came to be passed by the Indian Ports Association on the 22nd December 1983, recommending that "heavy lifts weighing over and above 10 tonnes should be reckoned as of 10 tonnes for the purpose of piece-rate payments". Three letters have been produced by the union addressed by it to the Port Trust dated 22nd February, 1983, and 19th August, 1983. It appears that some kind of incentive scheme is in operation in Madras, Calcutta and Cochin Ports. But, how it is operated and what is the workload and the quantity of work per day available for such workmen is not stated. Their comparative duties, emoluments, other allowances and service conditions are not known, nor any such material placed before me. The main argument in the letter dated 22nd February, 1983 seems to be that as most of the workmen concerned and also remotely concerned with handling of cargo in the port are covered by a piece-rate scheme, there is no reason "why the categories of workmen employed by the Port Trust for handling so-called heavy lift cargo and containers should be excluded from the purview of the piece-rate schemes." At one stage in the letter it was said that these crane drivers also handle a larger number of containers in the port. That does not seem to be correct and the handling of containers appears to be occasional. Lastly there is a reference to the evolution of a suitable piece-rate scheme "by mutual discussions before the end of this month, so that the concerned categories of employees would also be eligible for container compensation."

23. Letter dated 8th March, is a reply to the letter dated 3rd March, addressed to the union. But the letter has not been produced. The 8th March letter also contended that certain categories who were not covered by the piece rate scheme have been included subsequently to the settlement of the year 1981. The argument is that if this was done for persons totally unconnected, and unilaterally by the Port Trust, then, the union was unable to know why the "Administration cannot pay the compensation to the Heavy Lift Crane Drivers, Nawgances, Greasers and Mazdoors who have every right to claim it as they are actually handling the containers as team."

24. The 19th August, 1983 letter is more confrontational than supplying any newsws to the demand.

25. The management's stand in this behalf is clarified in the letter dated 26th December, 1983 and also in some of the other letters produced by them, to which I shall presently refer. The Secretary of the Port Trust writes that "Since the work performed by the Heavy Lift Crane Drivers of the Mobile Crane Section by itself is not such as to enable their induction to a piece-rate incentive scheme, it was suggested to you that since the Heavy Lift Crane Drivers of the Mobile Crane Section are capable of operating mobile crane, tractors, forklifts, platform trucks, etc. having themselves come from the ranks of mobile crane drivers, Heavy Lift Crane Drivers could be brought under a piece-rate/incentive scheme only if they were agreeable to function "as mobile crane

drivers. Then it was said it will make it possible to bring them to the benefit of the container scheme. It was mentioned that was exactly what has been done in the case of Heavy Crane Drivers of the Mobile Crane Section.

26. In the union's letter of 30th September, 1982, the difficulties of drawing up of a scheme for the Heavy Lift Crane Drivers is appreciated, but the claim is more for container money sharing than for any incentive scheme and is advanced on the basis of equity. The consistant stand of the administration is revealed in the letter dated 5th October that "by the very nature of their operations, the heavy lift crane drivers fall outside the arrangement of incentive payment".

27. The suggestion on the part of the management that Heavy Lift Crane Drivers agree to do the work of Mobile Crane Drivers was firmly turned down by the union and it said in its letter dated the 29th June, 1984 that the Heavy Lift Crane Drivers "are not at all agreeable to work as Mobile Crane Driver Grade-I at any time. In other words, the Heavy Lift Crane Drivers are not at all agreeable to denigrate themselves for the purpose of receiving the Container Allowance when certain employees who are not even distantly connected with the Piece Rate Scheme are being paid the Container Allowance".

28. In this connection a reference has to be made to the 1981 settlement to which all the unions were parties, including B.P.T. General Workers Union, which is a party in the present dispute B.P.T. Employees' Union and Transport & Dock Workers Union. The agreement is produced at S. No. 2 of the documents produced by the union. It says that this container money sharing scheme was applied to three classes of workers—firstly those who are "eligible for piece rate/premium scheme, as on 1st January, 1981". (2) Crane repairs and maintenance staff employed in certain establishments mentioned therein, which includes the electrical establishment of the Mechanical Engineering Department, with which department we are concerned and lastly (3) Labour employed by clearing Agents and coming under the listed scheme of Bombay Dock Labour Board. The inclusion of the categories 2 and 3, it is clarified in the agreement itself, is being made on the basis that "a piece rate/incentive scheme for these categories has either been accepted in principle or are under discussion between the parties concerned." In the face of this, it really passes ones comprehension as to how the union can complain about payment of container money to crane repair and maintenance staff of the Hydraulic Establishment and others listed in clause (ii) of item 1 of the settlement. The question as to how the container money should be paid is a subject of settlement between the three unions and the management. The only way of entry into that sharing is via fixation of piece rate or incentive scheme either accepted or duly evolved and agreed. Even without other unions agreeing to it, if a category of workmen are brought under piece-rate scheme, after the settlement, they could be brought in by virtue of clause 2 of the settlement, which permits new categories becoming eligible for participation whenever "they are brought under a piece-rate/incentive scheme." I have already held that it is not possible to fix or evolve any piece-rate or incentive scheme for the Heavy Lift Crane Drivers. The answer to the claim therefore is against them, even if they were occasionally handling containers. During the course of arguments, though it was generally admitted and conceded that only heavy cargo is generally lifted by these crane drivers (e.g. SHRD LR DL jetty end, sometimes containers are also handled, but that is on rare occasions. Besides, it seems to me that it will be useless to evolve any piece-rate scheme for such work for the simple reason that any such scheme will be totally unworkable in the present state of affairs, as nobody would become eligible to any piece-rate or incentive, when even the normal day or minimum work is not required of this category of workmen.

29. The union's argument seems to be mainly that the heavy lift crane drivers also do repairs and maintenance work. Such workmen in the hydraulic establishment, Indira Dock, Mobile Crane Section, etc., are being paid container allowance, though they do not even go near the container. Nevertheless, it is quite clear, apart from the circumstances that the union itself had admitted that they are covered

in terms of clause 1 of the agreement, that their work is essentially connected and vitally concerned with the cranes which are instrumental for unloading and loading cargo. It is vital and necessary that cranes are maintained in good repair and order so that more cargo can be unloaded and a piece rate wage and incentive earned. Unless, therefore, the crane repair and maintenance staff pull their share, it would not be possible for the unloading and loading workmen to earn an incentive and to load/unload the cargo. They were therefore either properly covered or considered eligible for a piece rate scheme and hence presumably included in this. In the circumstances I do not think that the General Union can make any grievance or say that the Heavy Lift Crane Drivers are discriminated against, as they have also to handle some part of the maintenance or repair work of the heavy cranes. For these reasons, it must be held and answered, though unfortunately, that Heavy Lift Crane Drivers are not entitled to any other relief and particularly to share in the container money claimed. They are also not entitled to be brought under any piece-rate scheme.

R. D. TULPULE, Presiding Officer  
[No. L-31013/5/84-D. IV(A)]  
K. J. DYVA PRASAD, Desk Officer

नई दिल्ली, 31 अक्टूबर, 1985

का०ग्रा० 5187—श्रीधोगिक विवाद प्रधिनियम, 1947 (1947 का 14) की धारा 17 के अनुसरण में, केन्द्रीय सरकार आयल एंड नेपुरल गैस कमीशन के प्रबंधतात्र से सम्बद्ध नियोजकों और उनके कर्मकारों के बीच अनुबंध में निश्चिट श्रीधोगिक विवाद में श्रीधोगिक प्रधिकरण हैवरायाव के पंचाट को प्रकाशित करती है, जो केन्द्रीय सरकार को 14 अक्टूबर, 1985 को प्राप्त हुआ था।

New Delhi, the 31st October, 1985

S.O. 5187.—In pursuance of section 17 of the Industrial disputes Act, 1947 (14 of 1947), the Central Government hereby published the award of the Industrial Tribunal, Hyderabad as shown in the Annexure, in the industrial dispute between the employers in relation to the management of Oil and Natural Gas Commission and their workmen, which was received by the Central Government on the 14th October, 1985.

ANNEXURE 'A'  
BEFORE SHRI G. S. BAROT, PRESIDING OFFICER,  
INDUSTRIAL TRIBUNAL (CENTRAL) AT AHMEDABAD  
Reference ITC) No. 8 of 1981

#### ADJUDICATION

#### BETWEEN

Management of Oil and Natural Gas Commission,  
Ahmedabad —First Party

AND

The workmen employed under it —Second Party  
In the matter of timings of shift bus.

STATE : Gujarat INDUSTRY: Oil & Gas Industry  
AWARD

This industrial dispute between the Management of Oil and Natural Gas Commission, Ahmedabad and the workmen employed under it has been referred to me for adjudication under Section 7A and Section 10(1)(d) of the Industrial Disputes Act, 1947, by the Central Government, Ministry of Labour Order No. L-30011/7/80-D.III(B), dated 14th May 1981. The dispute which is referred to this Tribunal for adjudication is stated in the Schedule to the order of reference and it reads:

"Whether the demand of ONGC Rigman and Topman Association Ahmedabad as mentioned in Annexure 'A' is justified?" If so, what relief and from what date the employees working in the field are entitled?

#### ANNEXURE 'A'

- That the field staff should wait for two hours over and above the fixed time of arrival of the shift but at restrictive destination.
- That if the shift bus does not reach the respective destination within two hours, the employees may go home and they will be marked present on the said date.
- That if the shift bus carrying passengers from site reaches the destination beyond thirty minutes than prescribed time they should be paid overtime allowance as per the existing rules."

2. Before this reference can be heard and finally disposed of, the Chairman of ONGC R and T Association, Ahmedabad Branch, has filed the pursvis Ex. 10 which states that cause of action of the above matter does not exist at present on account of competition of drilling at that particular point and further on account of improvement in plying of shift vehicles in time, therefore, it is submitted that the matter may please be allowed to be withdrawn and Union does not press for the demand and withdraw the same. As the demands have been withdrawn the reference is disposed of accordingly. No order as to costs.

Ahmedabad.

Date: 30th September, 1985.

G. S. BAROT, Presiding Officer  
[No. L-30011/7/80-D.III (B)y

का०ग्रा० 5188—श्रीधोगिक विवाद प्रधिनियम, 1947 (1947 का 14) की धारा 17 के अनुसरण में, केन्द्रीय सरकार गुजरात मिनरल कारपोरेशन लिमिटेड, के प्रबंधतात्र में सम्बद्ध नियोजकों और उनके कर्मकारों के बीच अनुबंध में निश्चिट श्रीधोगिक विवाद में श्रीधोगिक प्रधिकरण, घरमदावाद के पंचाट को प्रकाशित करती है, जो केन्द्रीय सरकार को 14 अक्टूबर, 1985 को प्राप्त हुआ था।

S.O. 5188.—In pursuance of section 17 of the Industrial Disputes Act, 1947 (14 of 1947), the Central Government hereby publishes the award of the Industrial Tribunal, Ahmedabad as shown in the Annexure, in the industrial dispute between the employers in relation to the management of Gujarat Mineral Development Corporation and their workmen, which was received by the Central Government on the 14th October, 1985.

#### ANNEXURE 'A'

BEFORE SHRI G. S. BAROT, PRESIDING OFFICER,  
INDUSTRIAL TRIBUNAL (CENTRAL) AT  
AHMEDABAD

Reference (ITC) No. 2 of 1983

#### ADJUDICATION

#### BETWEEN

Management of Gujarat Mineral Development Corporation, Ahmedabad,  
AND

The workmen employed under it.

In the matter of increase in wages in respect of the employees of Silica Mines of Gujarat.

STATE: Gujarat

INDUSTRY: Mining

#### AWARD

This industrial dispute between the Management of Gujarat Mineral Development Corporation, Ahmedabad and the workmen employed under it has been referred to me for adjudication as a Presiding Officer under Section 7A and Clause (d) of sub-section (1) of Section 10 of the Industrial Disputes Act, 1947 by the Central Government Order, Ministry of Labour and Rehabilitation Department's No. L-29011/29/81-D.III (B), dated 3-3-1983.

2. The dispute relates to a single demand which is as under:—

"Whether the demand of Major Mahajan Thangadh for increase in wages in respect of the employees of Silica Mines of Gujarat Minerals Development Corporation Limited, Vavli as mentioned in Annexure A is justified? If so, to what relief and from what date the workmen are entitled?"

## ANNEXURE 'A'

## Demand for increase in wages

1. Unskilled Rs. 7.00 per day;
2. Semi skilled Rs. 8.00 per day;
3. Skilled Rs. 10.00 per day."

3. After the dispute was referred to me a notice for filing statement of claim was given to the Secretary, Major Mahajan Thangadh (in short 'the Union') with an instruction to deliver one copy to Gujarat Mineral Development Corporation Ltd., Ahmedabad on or before 16-6-1983. But no statement of claim filed. Therefor the Union was served with a notice that the matter is fixed for hearing on 19-8-1983 but nobody on behalf of the Union remained present on that date. So another notice dated 20-8-1983 was given by Regd. A.D. to the Union informing it that the matter was fixed on 25-10-1983. Ex. 2 is the acknowledgement by the Union. On that date also no one appeared. Then another notice dated 26-10-1983 was sent by Regd. A.D. which was received by the Union vide Ex. 3. In reply to that notice Shri Rasigbhai Mehta General Secretary of the Union requested this Tribunal by his letter dated 18-11-1983 to give another date for hearing as he was busy with some High Court matter. Then another notice was sent by Regd. A.D. fixing hearing on 14-9-1984 and the said notice was received by the Union vide acknowledgement slip Ex. 4. On 14-9-1984 also nobody remained present on behalf of the Union so a final notice was sent by Regd. A.D. informing it that if it did not remain present on 23-11-1984 and file statement of claim, the matter will be proceeded ex-parte. This notice was received by the Union vide acknowledgement slip Ex. 5. In spite of several notices, the Union remained absent all throughout. Not only that but also it did not care to file even the statement of claim. The representative of Gujarat Mineral Development Corporation used to remain present. Hence, it appears that the Union is not interested in the demands made by it. The reference is, therefore, dismissed for want of prosecution. No order as to costs.

Ahmedabad.

Date: 4th October, 1985.

G. S. BAROT, Presiding Officer.  
[No. L-29011/29/81-D.II(B)]

कांस्ट्रॉक्टर अधिकारीका विवाद अधिनियम, 1947 (1947 का 14) की घाग 17 के अनुसरण में, केंद्रीय सरकार, सिंगरेनी कोलरीज कम्पनी, लिमिटेड, रामागुडम इविजन-2, डाकघर गोदावरी के प्रबंधनतंत्र में सम्बद्ध नियोजकों और उनके कर्मकारों के बीच अनुबंध में नियिट अधिकारीका विवाद में अधिकारीका अधिकारण, अन्तिम प्रदेश, हैदराबाद के पंचाट को प्रकाशित करती है, जो केंद्रीय सरकार को 14 अक्टूबर, 1985 को प्राप्त हुआ था।

S.O. 5189.—In pursuance of section 17 of the Industrial Disputes Act, 1947 (14 of 1947) the Central Government hereby publishes the award of the Industrial Tribunal, Andhra Pradesh, Hyderabad-500001 as shown in the Annexure, in the industrial dispute between the employers in relation to the management of Singareni Collieries Company Limited, Ramagundam Division-JI, Post Office Godavari and their workmen, which was received by the Central Government on the 14th October, 1985.

## ANNEXURE 'A'

## BEFORE THE INDUSTRIAL TRIBUNAL (C) ANDHRA PRADESH AT HYDERABAD

## PRESENT:

Sri J. Venugopala Rao,  
Industrial Tribunal.

Dated the Seventeenth day of September, Nineteen hundred and eighty-five.

Industrial Dispute No. 40 of 1985

## BETWEEN

The workmen of M/s Singareni Collieries Company Limited, Ramagundam Division-II, P.O. Godavari, Karimnagar Dist. (A.P.)

Petitioner

## AND

The Management of M/s Singareni Collieries Company Limited, Ramagundam Division-II, P.O. Godavari, Karimnagar Dist. (A.P.)

...Petitioner

## APPEARANCES:

Workmen not present.

Sri K. Srinivasa Murthy, Miss G. Sudha, Sri H. K. Saigal, Advocates for the Management.

## AWARD

The Government of India, Ministry of Labour, New Delhi vide reference No. L-21011/1/85-D.IIB, dated 31-5-1985, referred and Industrial Dispute existing between the employees in relation to the Management of M/s. Singareni Collieries Company Limited, Ramagundam Division-II, Post offices: Godavari, Karimnagar (A.P.) and their workmen in respect of the matter specified in the schedule hereto annexed under Clause (d) of Sub-Section (1) of Section 10 of the Industrial Disputes Act, 1947 (Act No. 14/1947) to this Industrial Tribunal constituted under Section 7(A) of the said Act, with these specification that his Tribunal shall submit its Award within a period of 6 months in accordance with sub-section 2(V) of Section 10 of the said act, for adjudication.

"Whether the management of M/s Singareni Collieries Company Limited, Ramagundam Division-II, P.O. Godavari, District Karimnagar (A.P.) are justified in denying confirmation as Rope Splicer (Cat. V) and payment of officiating allowance to S/ Shri Avula Mogilla and Padala Rajiah, Trammers and Gudlu Ramaswamy, Hauler Khalasi of GDK 6A Incline? If not, to what relief are the workmen concerned entitled?"

Soon after the receipt of the reference, notices were issued to the parties. The workmen were directed to file their Claims Statement on or before 6-7-1985, while serving a copy of it on the opposite side. On 6-7-1985 when the case was called, the workmen and their representative were absent. No Claims Statement was filed. Sri H. K. Saigal, Advocate on behalf of the Management present and sought time for filing Vakalat. Time was extended for filing Claims Statement till 24-7-1985. On 24-7-1985, the workers union sent a telegram requesting to postpone the I.D. to 14-8-1985, so time was extended till 14-8-1985. On 14-8-1985, General Secretary of workers union Sri Durgaiah was present and time was extended for filing claims statement till 17-9-1985. On 17-9-1985 when the case was called the workmen and their representative called absent. No representation was made on their behalf. S/ Shri K. Srinivasa Murthy, H. K. Saigal and Kum. G. Sudha Advocates filed Vakalat on behalf of the Management. Sri Saigal the Learned Advocate on behalf of the Management submitted that the matter is compromised by the workmen and the Management, and filed the compromised dated 21-8-1985, praying this Tribunal

to pass an Award in terms of the compromise. When questioned by the Court about the presence of the worker and his representative for recording the compromise, Sri H.K. Saigal, Advocate on behalf of the Management submitted that the matter is already settled. The workers representative and the Management representative signed the compromise and prayed to record the compromise and pass an award in terms of the compromise. Since the worker and his representative are not present before me, and considering the statement of the learned Advocate for the Management, I accept the same to be true and correct and the terms of the compromise are recorded. When the workmen and their representative are not present, it is presumed that the matter is settled out of Court. In view of the above an Award is passed in terms of the compromise and a copy of the compromise is enclosed to the Award.

Given under my hand and the seal of this Court this the 17th day of September, 1985.

J. VENUGOPALA RAO, Industrial Tribunal  
Appendix of Evidence

NIL  
[No. L-21011/1/85-D.III(B)]

BEFORE THE INDUSTRIAL TRIBUNAL (CENTRAL)  
HYDERABAD

In the matter of I.D. 40/85

Between the workmen S.C. Engineering Workers Union  
AND

The Management, S. C. Company Limited, Godavarikhani  
.....Respondent  
.....Petitioner

The Government of India referred the following dispute for reference, the Schedule of which is extracted hereunder:

#### SCHEDULE

"Whither the Management of M/s Singareni Collieries Company Ltd, Ramagundam Division-II, Post Office Godavarikhani, Dt. Karimnagar (AP) are justified in denying confirmation as Rope Splicer (Cat. V) and payment of Officiating Allowance to S/Sri Avula Mogali and Padala Rajiah, Trammers and Gudla Ramaswamy, Hauler Khalasi of Gdk 6A Inc? If not, to what relief are the workmen concerned entitled."

The Management contended that there is already one Rope Splicer, Cat-V in 1st Shift and two Rope Strikers in Cat-III in 2nd and 3rd Shifts at Gdk. No. 6A Incline as is the case with other mines. The workmen in dispute who were already enjoying Cat-IV were allowed to work as Strikers as and when necessary. Since the workmen are already enjoying Cat. IV which is one Category higher, the question of any promotion has not arisen.

The Union pointed out that the workmen would be satisfied if their designation is changed as Rope Striker in Cat-III and they are prepared for reduced Cat-III, since it is appropriate Category of Rope Strikers.

The Management agreed to consider the workmen as Rope Strikers in Category-III in view of the requirement in Gdk. 6B Incline which is a part of the same mine. The same will be given effect to from 1st September 1985.

Since the dispute is thus resolved, the Union agreed to withdraw the dispute from the Tribunal. Both the parties requested the Tribunal to pass an Award in ID 40/85 in terms of the above understanding.

This is in full and final settlement of the issue in dispute. Representing the Management.

V. P. MEHTA, General Manager,  
Ramagundam Divn.-I.

V. GOPAI A SASTRI, Dy. C.P.M. RG I.  
S. MOHSIN, ALI, Dy. PM., RG-I  
Dt: 21-8-1985.

Witnesses:

V. C. N. MURTHY, Steno Dy PM (P) RG  
M. SRINIVASA, GK Gr. II, O-DyPM(P)RG

Representing the workmen:  
J. DURGAIAH General Secy. Singareni Mine and  
Eng. Workers Union  
GDK

CH. NARAYANA REDDY, Secy. SMEWU, GDK.

कांग्रेस 5190.—श्रीद्वारिगिक विवाद अधिनियम, 1947 (1957 का 14) की धारा 17 के अनुसरण में, केन्द्रीय सरकार अग्निगुण्डला नैड प्रैज़िक्ट प्राफ़ हिन्दुस्तान जिक लिमिटेड, बन्दालमोत्तु के प्रबंधनसंघ में सम्बद्ध नियोजकों और उनके कर्मकारों के बीच अनुबंध में निर्दिष्ट श्रीद्वारिगिक विवाद में श्रीद्वारिगिक अधिकारण, अहमदाबाद के पंचाट की प्रकाशित करती है, जो केन्द्रीय सरकार को 15 अक्टूबर, 1985 को प्रस्तुत कृष्ण था।

S.O. 5190.—In pursuance of section 17 of the Industrial Disputes Act, 1947 (14 of 1947), the Central Government hereby publishes the award of the Industrial Tribunal, Andhra Pradesh, Ahmedabad, as shown in the Annexure, in the industrial dispute between the employers in relation to the management of Agnigundala Lead Project, Hindustan Zinc Limited, Bandalamottu and their workmen, which was received by the Central Government on the 15th October, 1985.

#### ANNEXURE

BEFORE THE INDUSTRIAL TRIBUNAL (CENTRAL)  
ANDHRA PRADESH, HYDERABAD

Present :

Shri J. Venugopala Rao, Industrial Tribunal.

Dated the Ninth September, Nineteen Hundred and eighty five

Industrial Dispute No. 36 of 84

BETWEEN

The Workmen of Agnigundala Lead Project, Hindustan Zinc Ltd., Bandalamottu, Guntur District (A.P.) .....Petitioner

AND

The Management of Agnigundala Lead Project, Hindustan Zinc Ltd., Bandalamottu, Guntur District (A.P.) .....Respondent

APPEARANCES :

Shri C. Suryanarayana, Advocate for the workmen.  
S/Sri Srinivasa Murthy, H. K. Saiga and Kumari G. Sudha, Advocates for the Management.

#### AWARD

The Government of India, Ministry of Labour and Rehabilitation by Order No. L-29012/58/83-D. III(B) dated the 3rd May, 1984, referred an Industrial Dispute existing between the Employers in relation to the Management of Agnigundala Lead Project, Hindustan Zinc Limited, Bandalamottu and their workmen in respect of the matters specified in the

schedule hereto annexed under Section 7A read with clause (d) of Sub-Section 1 of Section 10 of the I.D. Act, 1947 for adjudication the following issues :--

"Whether the action of the management of Agnigundala Lead Project, Hindustan Zinc Ltd., Bandalamottu, in awarding the punishment of discharge to Sri M. Venkateswarlu, Driller-cum-Blaster is justified ? If not, to what relief is the workman concerned entitled ?"

Soon after the receipt of the reference it was registered as I.D. No. 36/84. The workmen were directed to file their claim Statement on 1-8-1984, while serving a copy on the opposite side. The workmen filed their claims statement on 17-6-85 and the Management filed its counter on 18-7-1985 and the matter was posted for enquiry from time to time. The workmen have raised a preliminary objection on 2-2-1985 about maintainability of the reference. Exs. W1 and M1 were marked by consent. The dispute was adjourned to 23-2-1985 for filing documents and for evidence if any. On 23-2-1985, Ex. M2 was marked by consent and the dispute was adjourned to 6-3-1985 for filing documents if any and evidence by either side. From 6-3-1985 the dispute was adjourned to 11-4-1985; "from 11-4-1985 to 4-5-1985", and from 4-5-1985 to 6-6-1985. The workmen filed M.P. No. 7/85 on 2-2-1985 raising preliminary objection. The management filed counter to it. The matter was contested and argued at length by the parties on 2-8-1985 and reserved for orders. This Tribunal by its detailed order dated 9-9-1985 in M.P. No. 7/85 held that the reference is bad. In view of the above orders, I hold that the reference is bad and it is terminated. A copy of the order passed by this Tribunal is annexed to this Award.

Given under my hand and the seal of this Tribunal this the 9th day of September, 1985.

V. VENUGOPALA RAO  
Appendix of evidence  
NIL

J. VENUGOPALA RAO, Industrial Tribunal  
BEFORE THE INDUSTRIAL TRIBUNAL (CENTRAL)  
AT HYDERABAD

Present :

Sri J. Venugopala Rao, Industrial Tribunal.  
Industrial Dispute No. 36 of 1984

BETWEEN :

The Workmen of Agnigundala Lead Project, Hindustan Zinc Ltd., Bandalamottu, Guntur District (A.P.)  
.....Petitioner.

AND

The Management of Agnigundala Lead Project, Hindustan Zinc Ltd., Bandalamottu, Guntur District (A.P.)

APPEARANCES : ..... Respondent

Shri C. Suryanarayana, President, All India Telegraph Engineering Employees' Union Line Staff & Class IV, Andhra Circle and Advocate for the workmen. Sarvashri K. Srinivasa Murthy, H. K. Saighal and Kumari G. Sudha, Advocates for the Management.

#### ORDER

A preliminary objection (M.P. No. 7/85) is taken by the Workmen Counsel contending that a settlement was reached on 25-8-1983 between the Management Agnigundala Lead Project on one hand and Hindustan Zinc Workers Union representing the workmen of the said Project on the other wada presided over the said settlement. According to the workers counsel it is agreed to award to Sri M. Venkateswarlu, Driller-cum-Blaster a punishment other than dismissal, discharge or removal from service, as such, the Management could not have validly requested for reference of the matter.

It is their case that the workman never requested for such reference. Therefore the reference made to this Tribunal in this matter is not liable for adjudication and it is incompetent reference. Therefore the workers counsel contended that to hold that there is no industrial dispute and to declare that the matter referred for adjudication is not liable for adjudication.

2. On the other hand the Management contended that the workmen concerned cannot question the validity of the reference and that the High Court was pleased to dismiss the Writ Petition No. 7820/83 filed by the workman and the matter was referred for adjudication to this Tribunal. Further it is pointed out that there is no settlement entered into between the Management and the Workers Union and defined under Section 2(p) of the I.D. Act. According to them unless there is a valid settlement it cannot be said that Central Government cannot make a reference. It is also pointed out that the appeal on behalf of the Management should be heard. Chairman-cum-Managing Director is situated at Udaipur and the Officers who had discussions with the workers who expressed their opinion cannot bind the appellate authority with their views. It is pointed out that the appellate authority is an independent one and it cannot be dictated by its subordinate staff as what to do and how to dispose of the appeal. Therefore the matter is properly referred for adjudication.

3. The point for consideration now is whether there is settlement reached between the Management of Agnigundala Lead Project on one hand and Hindustan Zinc Workers Union represented by workmen with in the meaning of Section 2(p) of the I.D. Act or not ?

4. The admitted facts are as follows. On 5-12-1982 there was an alleged incident involving M. Venkateswarlu and one M. K. Murthy, Assistant Engineer, Mining at the main gate at the Agnigundala Lead Project premises. On 5-12-1982 it is said that the Manager, Mines placed M. Venkateswarlu under suspension and domestic enquiry was conducted and Superintendent, Mines by his order dated 6-3-1983 dismissed the said Venkateswarlu from service. It is said that the Trade Union sponsored the cause of Venkateswarlu and raised an industrial dispute. It is said that after protracted efforts a settlement was arrived at as shown in the annexure stating that there was a strike from 9-3-1983 in the said project and the Management informed the Assistant Labour Commissioner Central about the possibility of resolving the issue and requested the said conciliation officer to visit the Mines and then the said Assistant Commissioner of Labour visited the Mines as a result of which the following understanding is reached on 25-3-1983.

1. The Union regretted for what has happened w.e.f. 9-3-1983 and both the Union and Management condemned violence from any corner.
2. Since Shri M. Venkateswarlu, Driller-cum-Blaster Assistant, has not exhausted the provision of appeal, it is agreed that Mr. Venkateswarlu will appeal to the Chairman-cum-Managing Director which in turn will be forwarded by the Superintendent of Mines for decision within 15 days. The Management has agreed to award punishment other than dismissal, discharge or removal from service.
3. The Union will call off the strike which commenced on 9th March, 1983 with immediate effect.
4. Such of those employees who have got leave may apply for leave for the period of their absence from 9-3-1983 and Management will sanction the same in case if they are entitled for any leave. In all other cases, the employees will be treated as on leave without pay.
5. In view of this understanding, the employee who filed a case in the court of Munsif-Magistrate, Vizianagaram and the Management which filed a suit for vacation of injunction order in the Court of the Subordinate Judge, Narasaraopet, will withdraw the cases.
6. No disciplinary action will be taken against the workers who are on strike for their absence.

It is signed by Sri R. M. Simha and others for the Management and Ch. L. Kanta Rao and others for the workers in the presence of Assistant Labour Commissioner (Central), Vijayawada who also signed it.

5. The relevant point which is the matter of preliminary objection is this "The Management has agreed to award punishment other than dismissal, discharge or removal from service." From this it is contended that there is a settlement as contemplated under Section 2(p) of the I.D. Act and the said worker M. Venkateswarlu should be awarded any other punishment other than dismissal, discharge or removal from service and therefore the action of the management in awarding the punishment of discharge whether justified as referred to this Tribunal under reference is not liable for adjudication, as there cannot be such discharge basing upon the said understanding arrived in the presence of conciliation officer. It is admitted that the workers filed a Writ Petition W.P. No. 7820/83 in the High Court of Andhra Pradesh questioning the alleged violation of the settlement. The Honourable High Court was pleased to dismiss the same and referred the matter to this Tribunal. The High Court observed as follows :

"Once a reference is made, the proper forum to settle the dispute is the very same Tribunal before whom a reference is pending and the petitioner is free to raise this objection and the Tribunal is bound to enquire the same".

Hence it is observed there in W.P. 7820/83 that the petition fails and dismissed. Under Section 2(p) of the I.D. Act every settlement is arrangement or agreement, but every arrangement or agreement is not settlement. Agreement or arrangement will not be a settlement merely because the parties to the dispute choose to call it a settlement and the arrangement or agreement is incorporated in a memorandum of settlement signed by the parties, it must decide some part of the dispute or some matter in dispute or decided to resolve or effect the dispute in some manner or other or provide for some act or for bearing in relation to the dispute on the part of the party or parties to the dispute. In Indian Tobacco Company Ltd., v. Govt. of West Bengal [1971 (I) LLJ page 89]. The Act contemplates two types of settlement i.e., a settlement arrived at in the course of conciliation proceedings and (2) a written agreement between the employer and the workmen arrived at otherwise than in the course of conciliation proceedings. In the case of settlement arrived at in the course of conciliation proceedings nothing more needs to be done either by the employer or by the workmen to invest the documents with the attributes of a settlement; but, in the case of the settlement arrived at otherwise than in the course of conciliation proceedings, some further steps are necessary to invest with the attributes of settlement in terms of the Act. These stages are 1) the agreement is to be signed by the parties in such manner as may be prescribed in the rules and 2) a copy of the agreement is to be sent to an officer authorised in this behalf by the appropriate Government and the conciliation officer. Unless these steps are taken, any by-partite agreement signed between the parties will not be a valid settlement under the Act. In Tata Chemicals Ltd. v. Their workmen (1978 LIC page 637) and New Standard Engineering Company Ltd. v. Abhayankar (1978 LIC page 712), Jagrakhan Collieries vs Industrial Tribunal (1975), LLJ 163(S.C.).

6. Before the introduction of the Amending Act of 1956 it was held that a private settlement or agreement did not bring to an end an industrial dispute so as to disentitle the appropriate Government to make a reference of such dispute. However, subsequent to amendment, even a private agreement amounts to a settlement if the requirements of the definition clause are met. "Settlement" as defined in the Act, makes it impossible that an agreement by acquiescence and without writing being signed could come into existence between the parties. See Cooper Engineering Ltd. vs. D. M. Aney ('971), LLJ 613. A record note of discussions is not a settlement in AIR India Cabin Crew Association v. AIR India [1981 (II) LLJ, Page 306].

7. In the instant case annexure enclosed to this objection memo would show that these minutes of discussions were held in the presence of the Conciliation Officer and Conciliation Officer (Labour Commissioner Central Government) and he is also a party to the said discussions and the understandings finally reached. A careful perusal of the entire annexure which is filed by workers is not disputed to be arrived at by the management representatives. But it is contended stating that such an understanding cannot be reached by the Officers nullifying the Appellate Authority namely Chairman-cum-Managing Director's right to decide the appeal. It is a matter for the Chairman-cum-Managing Director to question his subordinates how they arrived at such an understanding on 25-3-1983 without his consent or tacit approval. But the authority who suspended the worker and the authority who is also party to the very enquiry proceedings against the worker were parties to these discussions and understandings arrived at and it is done and arrived at in the course of the conciliation proceedings before the Conciliation Officer (Central). So it is a settlement practically arrived at in the course of conciliation proceedings and nothing more is needed to be done either by the employer or by the workmen to invest the document with the attributes of settlement, it comes within the scope of Section 2(p) of the I.D. Act. The settlement affects the rights and obligations of the employer and his workmen and a clear understanding of what constitutes a valid settlement is arrived at. Therefore, a careful perusal of the annexure would show that the understanding finally reached on 25-3-1983 is an arrangement arrived at in a conciliation proceedings and therefore it binds the Management and it cannot go back. The Management has agreed before the Conciliation Officer by its representatives signing it that they are prepared to award punishment other than dismissal, discharge or removal from service to the said M. Venkateswarlu, Driller-cum-Blaster of the Agnigudala Lead Project. The Management's representatives should not have agreed that M. Venkateswarlu would appeal to the Chairman Managing Director, which in turn will be forwarded by the Superintendent of Mines and that the award of punishment will be other than dismissal, discharge or removal from service without the Chairman's tacit consent. They are responsible officers of the management. It must be seen that this understanding was reached on 25-3-1983. The strike of workers was going on in fact from 9-3-1983 and the failure report was sent by the Conciliation Officer on 18-3-1983. At that stage on 25-3-1983 the Management "requested" that Assistant Commissioner of Labour (Central) for resolving the issues including the reinstatement of M. Venkateswarlu, Driller-cum-Blaster". Therefore Clause 2 of the understanding which is signed by both sides in the presence of the Conciliation Officer is an arrangement arrived at in the conciliation proceedings within the meaning of Section 2(p) of the I.D. Act and it is a settlement. The arguments of the Management that the settlement should be entered into in a prescribed form as per the rules and forms will arrive in the case of written agreement between the employer and workman arrived at otherwise than in the course of a conciliation proceedings. In the instant case the parties concerned to the dispute discussed about the reinstatement of M. Venkateswarlu also and the arrangement was arrived at in the course of the conciliation proceedings before the authorised officer. Therefore, it had all the requirements of a "settlement" within the meaning of Section 2(p) of the I.D. Act. Thus on a careful consideration of the entire matter, I hold that the Central Government reference awarding punishment of discharge to M Venkateswarlu Driller-cum-Blaster by the Management is not justified and there is no necessity of such a reference and I further held that the Management is bound by the Settlement arrived at under Section 2(p) of the I.D. Act and the question of discharge or dismissal or removal from service of M. Venkateswarlu Driller-cum-Blaster by the Chairman-cum-Managing Director or whoever it may be representing the Management did not arise. The Management is bound by the settlement. This arrangement which became a settlement as contemplated under Section 2(p) of the I.D. Act since the Superintendent of Mines, the Manager of the Mines, Senior Engineer Mining the Administrative Officer were the signatories for the Management and they held

discussions about the reinstatement of M. Venkateswarlu and signed the arrangement dated 25-3-1983 after protracted discussions from 9-3-1983 onwards for about 17 days. If they had not obtained the prior permission of the Chairman-cum-Managing Director for arriving at for such a settlement having invited the workers for such discussions along with conciliation officer. It is a serious matter of indiscipline against them by the Chairman-cum-Managing Director. But it cannot be said that it had no ingredients of the settlement or that the said settlement virtually written down the effectiveness of the appeal before the Appellate authority i.e., Chairman-cum-Managing Director. Any settlement or arrangement is a process of settling points in dispute between the contesting parties so as to effect their rights and obligations to some extent for industrial peace. The arrangement dated 25-3-1983 is a clear settlement arrived at in the course of conciliation proceedings and therefore the Management cannot go back. It is not a settlement arrived at as a result of fraud, misrepresentation or undue influence. It is not even contended to that effect before me. Hence the reference is bad and not maintainable and the settlement is binding upon the Management. Even now the Chairman-cum-Managing Director may apply his mind to award a punishment other than dismissal, discharge or removal from service on M. Venkateswarlu, Driller-cum-Blaster as per the understanding arrived at on 25-3-1983 and discharge order passed against the said worker is illegal. The reference is therefore bad and rejected and terminated and the objection of the Workers Council in M.P. No 7/85 is upheld.

Dictated to the Stenographer, transcribed by him, corrected by me and pronounced in the open Court, this the 9th day of September, 1985.

Sd/-  
Industrial Tribunal

#### APPENDIX OF EVIDENCE

Witness examined  
for the workmen.

For the Management  
—NIL—

— NIL —

#### Documents marked for the Workmen

1. Ex. W.1 By consent.—True Copy of the High Court order in WP No. 7820/83 dt. 15-11-1983 of High Court of judicature of Andhra Pradesh at Hyderabad.

#### Documents marked for the Management

1. Ex. M.1 By Consent.—Memorandum of dismissal dt. 6-3-83.

2. Ex. M.2 By Consent.—Standing orders for the workmen employed in Agnigundala Lead Project under the control of Hindustan Zinc Limited.

By Conosent.

J. VENUGOPALA RAO, Industrial Tribunal  
[No. L-29012/58/85-D.III(B)]  
R. GUPTA, Desk Officer

नई दिल्ली, 1 नवम्बर, 1985

कानून 5191—श्रीशोधिक विवाद अधिनियम, 1947 (1947 का 14) की धारा 17 के अनुसार मे, केन्द्रीय सरकार इंदिरानगल रेलवे मैनेजर बैस्टर्न रेलवे के प्रबंधनतंत्र में सम्बद्ध नियोजकों और उनके कर्मकारों के बीच अनुबंध में निर्दिष्ट श्रीशोधिक विवाद में केन्द्रीय सरकार श्रीशोधिक अधिकरण, नं. 2 बम्बई के पंचाट को प्रकाशित करती है, जो केन्द्रीय सरकार को 15-10-85 को प्राप्त हुआ था।

New Delhi, the 1st November, 1985

S.O. 5191—In pursuance of section 17 of the Industrial Disputes Act, 1947 (14 of 1947), the Central Government hereby publishes the award of the Central Government Industrial Tribunal-2, Bombay, as shown in the Annexure in the industrial dispute between the employers in relation to the Divisional Railway Manager, Western Railway, Rajkot and their workmen, which was received by the Central Government on the 15th October, 1985.

#### ANNEXURE

#### BEFORE THE CENTRAL GOVERNMENT INDUSTRIAL

#### TRIBUNAL NO. 2, BOMBAY

CAMP : AHMEDABAD

Reference No. CGIT-2/54 of 1985

#### PRESIDENT :

Shri M. A. Deshpande, Presiding Officer.

#### PARTIES :

Employers in relation to the management of Divisional Railway Manager, Western Railway, Rajkot

AND

Their workmen.

#### APPEARANCES :

For the Employers—Shri P. R. Kutty, A.P.O. Western Railway, Rajkot.

For the Workmen—Shri B. K. Sharma, Branch Secretary, Pachim Railway Karmachari Parishad.

INDUSTRY : Railways

STATE : Gujarat

Ahmedabad dated the 23rd September, 1985

#### AWARD

By their order No. L-41011(33)/84-D.II(B) dated 2-8-1985 the following dispute has been referred for adjudication under Section 10(1)(d) of the Industrial Disputes Act, 1947 :—

"Whether the action of the Railway Administration, Rajkot Division in not paying the wages for duty period from 1-4-1984 to 28-4-1984 to Shri Dursingh and 12 others is justified? If not, to what relief are the workmen entitled?"

2. As the order of reference stands the dispute relates to wages for the period from 1-4-1984 to 28-4-1984 during which period it is alleged that S/Shri Dursingh and 12 others had actually worked but received no wages despite demand from time to time.

3. In the statement of claim the workmen have detailed the facts leading to the present dispute and as already stated it centres around the fact of non-payment of wages for the relevant period.

4. Today on behalf of the Railway, the Divisional Railway Manager (Establishment) Rajkot has filed a 'precipit' whereby it is stated that the wages as demanded shall be paid to the workmen and suitable steps have also been taken to arrange the payment to the parties concerned. In view of this writing the workmen are getting the relief as claimed by them.

5. The only apprehension of the Union is that there may be further delay in making the payment, to guard against which, in the award I am passing on the strength of the writing I am adding a clause that the payment of wages shall be made by the Railways within a period of 20 days from the date of this Award lest the amount shall carry interest at 9 per cent from the date of order of reference till the payment.

Award accordingly.

M. A. DESHPANDE, Presiding Officer  
[No. L41011/33/84-D.II(B)]  
HARI SINGH, Desk Officer

